RNI नं. : 7387/63
वर्ष : 63 अंक : 04
मुद्रण तिथि : 29-30 मई 2025
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 80
डाक प्रेषण तिथि : 29 मई 2025-01 जून 2025
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
ISSN : 2456-611X
Office Posted at R.M.S., Bikaner

हु शि उ चौ श्री ज ग ना ना ©

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

गुरु राम

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

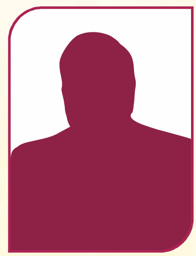

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

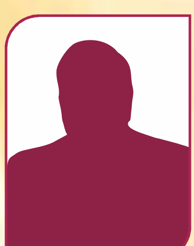

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

श्री कांतिलाल जी कटारिया
रतलाम
MID No. : 185412

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

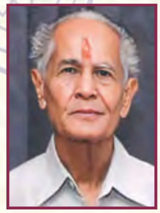
स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

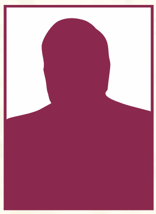
श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती बसंती देवी पींचा
नोखा/गुवाहाटी
MID No. : 151607

श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया
कोंडागाँव
MID No. : 135345

चतुर्थ चरण

श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा
डोंगरगाँव
MID No. : 143002

स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी
उदयपुर
MID No. : 112429

श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल
कलंगपुर
MID No. : 132856

श्री दिलीप जी ओस्तवाल
कलंगपुर
MID No. : 132873

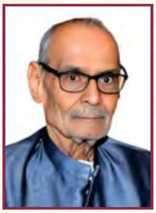
स्व. श्री कँवरलाल जी
देशलहरा, गुंडरदेही
MID No. : 133824

श्री प्रेमचंद जी व्होरा
बदनावर
MID No. : 113593

श्री निर्मल जी खिंवसरा
ब्यावर
MID No. : 135071

श्री अखराज जी ओस्तवाल
भिलाई
MID No. : 142740

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण

✻ श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर ✻ श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती ✻ श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली ✻ श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई ✻ श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु ✻ श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा ✻ श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर ✻ श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद ✻ श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर ✻ श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर ✻ गुप्तदान-भीलवाड़ा ✻ श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव ✻ श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर ✻ श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा ✻ श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद

द्वितीय चरण

✻ श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर ✻ श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ ✻ श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर ✻ श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा ✻ श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर ✻ श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा ✻ श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर ✻ श्री उदयराज जी पारख-रायपुर ✻ श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई ✻ श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता ✻ श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम ✻ श्री अरुण जी मालू-कोलकाता ✻ श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता ✻ श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता ✻ श्री शुभकरण जी भूरा-भुवनेश्वर ✻ श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर

प्रथम चरण

✻ स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर ✻ श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव ✻ श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन ✻ श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर ✻ श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी ✻ गुप्त-बंगईगाँव ✻ श्री अमरचंद जी बैद-नोखा ✻ श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन ✻ श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई ✻ श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर ✻ श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला ✻ श्रीमती लीला देवी बंब-चेन्नई ✻ श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ ✻ श्रीमती जमना देवी लूणावत-नोखागाँव ✻ श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई ✻ श्री संजय जी मालू-कोलकाता ✻ श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम ✻ श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर ✻ श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता ✻ श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत ✻ श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा ✻ श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम ✻ श्रीमती इमरती देवी सुराणा-गीदम ✻ श्री सुशील जी गोरेचा-रतलाम

// जय गुरु नाना // // जय महावीर // // जय गुरु राम //

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

– साधुमार्गी परिवार के विद्यार्थियों के लिए –

समता छात्रवृत्ति योजना

(कक्षा 1 से 12 तक)

- ✷ जैन संस्कार पाठ्यक्रम की प्रमाण-पत्र की प्रति।
- ✷ जैन साधुमार्गी ग्लोबल कार्ड बना हुआ होना अनिवार्य है।
- ✷ छात्रवृत्ति आवेदन के लिए गत कक्षा में विद्यार्थी ने कम से कम 70 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हों।
- ✷ छात्रवृत्ति की राशि विद्यार्थी के विद्यालय के खाते में प्रदान की जाएगी, इसलिए विद्यालय के बैंक खाते का विवरण।

पूर्ण विवरण, पात्रता, आवेदन प्रपत्र इत्यादि श्रीसंघ की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

संपर्क सूत्र : 6375633109

नोट : कृपया फॉर्म भरकर सीधा फॉर्म पर लिखे केंद्रीय कार्यालय के पते पर ही भेजें, किसी अन्य के हाथ में न दें।

फॉर्म के लिए नीचे स्कैनर पर स्कैन करें

छात्रवृत्ति

कक्षा - 1 से 12

मुमुक्षु सुश्री चारु जी छाजेड़

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	गांधीधाम (गुजरात)
मूल निवासी	:	जोधपुर (राजस्थान)
जन्म तिथि	:	16 अगस्त, 2000
वैराग्यकाल	:	लगभग साढ़े तीन वर्ष
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.टेक. (सिविल इंजीनियरिंग)
धार्मिक अध्ययन	:	पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र, श्री नंदीसूत्र, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, तत्व का ताला भाग-1 के थोकड़े, श्रीमद् भगवती सूत्र एवं श्री प्रज्ञापना सूत्र के कुछ थोकड़े, कर्म प्रज्ञप्ति प्रवेश ग्रंथ (अध्याय 1-10), संस्कृत प्रथम दीक्षा आदि
धार्मिक शिक्षा	:	आरुग्गबोहिलाभं
तपाराधना	:	तेला, चौला, पंचौला, छह, सात, अठाई, 9, 10, 11, 15 उपवास, मासखमण, आयंबिल का मासखमण, वर्षीतप, सिद्धितप
धार्मिक परीक्षाएँ	:	जैन सिद्धांत भूषण, कोविद, वैकल्पिक जैन आगम कंठस्थ भूषण
पदयात्रा	:	लगभग 300 कि.मी.
संभावित दीक्षा तिथि	:	28 मई, 2025, बीकानेर

पारिवारिक परिचय

पड़दादा जी-पड़दादीजी	:	स्व. श्री जुगराज जी-स्व. श्रीमती भूरी देवी छाजेड़
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री जौहरीमल जी-स्व. श्रीमती रमकु देवी छाजेड़
पिताजी-माताजी	:	गजराज जी-अनिता जी छाजेड़
बड़े पिताजी-माताजी	:	जसवंतराज जी-सुमति जी
बहन-बहनोई	:	नेहा जी, दर्शना जी-हिमांशु जी
भुआजी-फूफाजी	:	मदन कँवर जी-स्व. श्री प्रकाशमल जी चौपड़ा, सुशीला जी-पूनमचंद जी मेहता
नानाजी-नानीजी	:	प्रकाशमल जी-कमला जी बोथरा
मामाजी-मामीजी	:	अनिल जी-रानू जी, सुनील जी, मनीष जी-निधि जी बोथरा
मौसीजी-मौसाजी	:	सुनीता जी-स्व. श्री संजय जी भंडारी, विनिता जी-नरेश जी श्रीश्रीमाल
जीजी-जीजाजी	:	मीनाक्षी जी-राकेश जी, शिल्पा जी-राकेश जी, प्रियंका जी-भरत जी, गरिमा जी-सुभाष जी, हर्षिता जी-सुमित जी, रिचिका, आकांक्षा
भाई-भाभी	:	अमित जी-प्रिया जी, गौरव जी, एकांश जी, अभिनव जी, पार्थ जी, धीर जी

|| जय गुरु नाना||

राम चमकते भानु समाना

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु राम ||

कार्यसमिति बैठक

देशनोक (राजस्थान)

12 जुलाई 2025

सुबह 11:45

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
(सत्र 2023-25)

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह-संयोजक, संयोजन मंडल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
(सत्र 2023-25)

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, संभाग प्रमुखा, प्रवृत्ति संयोजिकाएँ, सह-संयोजिकाएँ, कार्यसमिति सदस्याएँ एवं विशेष आमंत्रित सदस्याएँ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(सत्र 2024-26)

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रभारी, राष्ट्रीय एवं आंचलिक प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय संघ शाखा अध्यक्ष एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

विशेष आम सभा
सत्र (23-25)

समय
रात्रि
08:45

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : श्रीसंघ के समस्त साधारण-आजीवन सदस्य, शीर्ष पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष-महामंत्री, सभी अचंलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्य, संयोजन मण्डल सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य एवं अंतर्गत संस्थाओं के सदस्य एवं पदाधिकारी

समय
दोपहर
02:15

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

आमंत्रित : महिला समिति के समस्त साधारण-आजीवन सदस्याएँ, शीर्ष पदाधिकारी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा-महामंत्री, सभी अचंलों की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा/मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिकाएँ, कार्यसमिति सदस्याएँ, विशेष आमंत्रित सदस्याएँ एवं अंतर्गत संस्थाओं के सदस्य व पदाधिकारी

निवेदक

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति | श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

।। जय गुरु नाना ।।　　।। जय महावीर ।।　　।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

प्रतिक्रमण प्रतियोगिता

कर्मों का शमन – करें शुद्ध प्रतिक्रमण

लक्ष्य घर - घर प्रतिक्रमण　हर - घर प्रतिक्रमण

संपूर्ण विधि
06–30 जुलाई 2025

तीसरी वंदना से पाँचवीं वंदना तक
21 जून – 05 जुलाई 2025

बड़ी संलेखना से दो भाव वंदना तक
06 जून – 20 जून 2025

सात अणुव्रत से बारह अणुव्रत तक
21 मई–05 जून 2025

संलेखना के 5 अतिचार से छह अणुव्रत तक
06 मई – 20 मई 2025

इच्छामिणं भंते से बारह स्थूल तक
20 अप्रैल–05 मई 2025

महिला समिति लेकर
आई है समय अवधि
के साथ
प्रतिक्रमण कंठस्थ
का रोचक सफर

Helpline : 63756 33109

Please Scan
for REGISTRATION
Started from 06th April

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

विनम्र अपील

सादर जय जिनेंद्र!

पूर्वाचार्यों की परंपरा के अनुरूप स्मृतिशेष पूज्य आचार्य श्री नानेश के आशीर्वाद एवं वर्तमान आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. की पावन नेश्राय में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के साथ समाजोत्थान व राष्ट्रीय उत्कर्ष हेतु समर्पित व संचालित है। श्रीसंघ के सभी सुश्रावकगणों के अनवरत एवं सतत प्रयासों ने संघ को शिखर तक पहुँचाया है, जो संपूर्ण साधुमार्गी सदस्यों के मानसपटल पर स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

जैसा कि विदित है कि श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं द्वारा जरूरतमंद सहधर्मी भाई-बहनों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। किंतु विगत कुछ समय में कुछ व्यक्तियों द्वारा मिथ्या प्रयोजन बनाकर, झूठ बोलकर, निजी स्वार्थ की पूर्ति हेतु झूठी आवश्यकताएँ बतलाकर, भावनात्मक (Emotional) बहाने बनाकर, स्वयं को स्वधर्मी भाई-बहन बताकर आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए फोन पर निवेदन किया जा रहा है। झूठ का पता तब चल रहा है जब उनकी जानकारी प्राप्त की जा रही है। जिसके संदर्भ में आपश्री सुज्ञ पाठकजनों, आंचलिक पदाधिकारियों, स्थानीय पदाधिकारियों से निवेदन है कि यदि आपके पास इस प्रकार से मिथ्या प्रयोजन बतलाकर आर्थिक सहायता हेतु इच्छुक व्यक्ति/परिवार आदि द्वारा संपर्क किया जाता है अथवा फोन आदि आता है तो उसकी पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए स्थानीय संघ द्वारा उक्त व्यक्ति/परिवार की प्रामाणिकता व आवश्यकता को लिखित में अवश्य मंगवाएँ। स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्री द्वारा प्रामाणिक सिद्ध होने पर ही निवेदन को आगे प्रेषित करने का भाव रखें।

आपका यह कदम जरूरतमंद व्यक्ति तक सही समय पर सहायता उपलब्ध करवाने में कारगर साबित होगा।

निवेदक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह.. 10
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र....................... 14
श्रमणोपासक हेडलाइंस............................... 16
गुरुचरण विहार समाचार............................. 17
विविध समाचार.. 29
विविध भेंट मार्फत...................................... 39
विनम्र श्रद्धांजलि... 55
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति.................. 58
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ.............. 67

सुविचार

काम-भोग (1)

साँडिया के मुख माहीं, शोणित बहेगा चाहे।
किंतु खाना चाहे वह, वृक्ष काँटेदार है।।
शब्द, रूप, गंध, रस, स्पर्श में फँसे हैं जो भी।
दुःख पाते रात-दिन, डूबे मझधार हैं।।
प्याज की परत जैसे, कदली के पत्र जैसे।
ज्ञानी काम-भोग माने, जग में निस्सार है।।
वीर कहे गौतम से, भोगी घूमे जग माहीं।
काम शल्य काम विष, त्याग में ही सार है।।

साभार – वीर कहे गौतम से

चिंतन

धर्म मंगल है

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

धर्म को मंगल कहा गया है, यथा "**धम्मो मंगल...।**" धर्म मंगल रूप है। मंगल की एक व्युत्पत्ति ऐसी भी की जाती है- "**मां पापं गालयति-इति मंगलम्।**" जो मेरे पाप को गलाए, वह मंगल है। इससे ध्वनित होता है कि धर्म पाप को गलाता है, नष्ट करता है। जैसे आग से मोम पिघलता है, गलता है, ताप से बर्फ गलता है, वैसे ही धर्म से पाप गलता-नष्ट होता है। धर्म से पाप पिघलकर बह जाता है। मक्खन को ताप लगने से वह पिघलेगा ही, वैसे ही धर्म से पाप गलेगा ही। धर्म पाप को गलाता है, इससे एक प्रश्न खड़ा होता है कि जो लोग मान-सम्मान की चाह करते हैं, वे पाप को गलाते हैं या पाप को बाँधते हैं? मान-सम्मान की चाह धर्म है या पाप? मान-सम्मान पुण्य योग से प्राप्त होता है, किंतु मान-सम्मान की चाह पाप का उपार्जन कराने वाली होती है। इससे समझा जा सकता है कि मान-सम्मान की चाह धर्म नहीं है। क्योंकि उससे पाप गलता नहीं है अपितु पाप कर्म का उपार्जन होता है। जो पाप का संग्रह कराए, वह धर्म हो नहीं सकता। इसी प्रकार हिंसा, झूठ, चोरी आदि भी धर्म नहीं है। उनके माध्यम से धर्म नहीं हो सकता। आचार्य श्री हेमचंद्र ने भी कहा है- "**न धर्महेतोर्विहितापि हिंसा।**" हिंसादि से भी जीव पाप कर्म का उपार्जन करता है, इसलिए वे धर्म नहीं हो सकते। क्रोध, मान, माया, लोभ भी धर्म का रूप नहीं है। ये सभी पाप कर्म हैं। इनसे जीव भारी होता है, पाप का उपार्जन करता है। अतः धर्म नहीं है। धर्म की क्रियाएँ करना एक बात है, धर्म होना दूसरी बात है। एक तरफ कोई मासखमण तप कर रहा है, साथ ही क्रोध भी कर रहा है, झूठ भी बोल रहा है। वैसी स्थिति में वह धर्म के लाभ से लाभान्वित कैसे होगा? हस्ती स्नान की तरह एक तरफ कर्म को झाड़ने का उपाय करता है तो दूसरी तरफ कर्म बंधन का कार्य करता है। अतः धर्म के स्वरूप को समझना चाहिए, न कि जैसे-तैसे धर्म क्रियाएँ करके मन को तृप्त कर लें कि मैंने धर्म कर लिया। यदि तप-संयम आदि का गर्व हो तो वह भी धर्म नहीं है। धर्म बहुत बारीक है, गहन है। सामान्यतया लोग धर्म क्रिया को तो महत्व देते हैं, किंतु भाव शुद्धि की तरफ ध्यान नहीं देते। इसी का दुष्परिणाम है कि धर्म प्रभावी नहीं बन पा रहा है।

चैत्र कृष्ण 1, गुरुवार, 24.03.2016 **साभार- आरोह**

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह

अंत में

29-30 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

बलदेव जी ने रुक्म को बंदी बनाकर रथ में डाल लिया। उन्होंने रुक्म की ऐंठी हुई मूँछ उखाड़कर रुक्मिणी से कहा — ''अनुजवधू! अपने भाई पर दया करके इस पर से मक्खियाँ उड़ाती रहना। बलदेव जी के ताने से रुक्म को बहुत लज्जा हुई, परन्तु वह विवश पड़ा था।''

कृष्ण का रथ द्वारका की ओर चला। बंदी बना हुआ रुक्म रथ में पड़ा-पड़ा मन ही मन पश्चात्ताप कर रहा था। लज्जा के मारे वह रुक्मिणी की ओर देख भी नहीं पाता।

भाई को बंदी बना हुआ देखकर रुक्मिणी को बड़ा ही दुःख हुआ। उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे। वह भाई के दुर्व्यवहार को भूलकर यह विचारने लगी कि मेरे ही कारण भाई को बंदी होना पड़ा है। अब मैं किस प्रकार भाई को बंधनमुक्त कराऊँ? रुक्म को छुड़ाने के लिए उसे दूसरा कोई मार्ग न दिख पड़ा। वह साहस करके रथ से कूद पड़ी और दौड़कर रथ के सन्मुख आ खड़ी हुई। रुक्मिणी के रथ से कूदते ही रथ रुक गया। रथ के सामने खड़ी हुई रुक्मिणी हाथ जोड़कर आँखों से आँसू बहाने लगी। कृष्ण और बलदेव जी रुक्मिणी का अभिप्राय समझ गए। फिर भी श्रीकृष्ण ने उससे पूछा कि तुम रथ से क्यों कूद पड़ी और इस प्रकार क्यों खड़ी हो। रुक्मिणी कहने लगी — ''महाराज घोर से घोर शत्रु को भी क्षमा प्रदान करना क्षत्रियों का बहुत छोटा-सा कर्तव्य है। आप भी इस कर्तव्य का पालन तो करेंगे ही, क्योंकि आप महापुरुष हैं। परन्तु इस समय भाई को बंदी देखकर मेरा हृदय बहुत दुःखी हो रहा है। रुक्म मेरे बड़े भाई हैं। इसलिए मैं प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरे इन भाई को बंधनमुक्त कर दीजिए।''

श्रीकृष्ण — ''तुम्हारे जिस भाई के कारण तुम्हें इतने कष्ट भोगने पड़े, तुम्हारे जिस भाई ने हम पर घातक आक्रमण किया, उसे बंधनमुक्त कैसे किया जा सकता है?''

रुक्मिणी — ''यह तो ठीक है, परंतु जब घोर से घोर शत्रु के महान से महान अपराध भी क्षमा किए जा सकते हैं, तब क्या मैं अपने भाई के अपराध को नहीं भुला सकती और क्या आप पत्नी-भ्राता को क्षमा नहीं कर सकते?''

उपकारिषु यः साधुः, साधुत्वे तस्य को गुणः।
अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते।।

अर्थात् जो अपने उपकारियों के लिए भला है, उसकी भलाई में क्या विशेषता है? महात्मा लोग तो उसे ही भला कहते हैं, जो अपने अपकारियों पर भी कृपा करे।

रुक्मिणी की इस बात ने कृष्ण के हृदय को द्रवित कर दिया, परंतु उन्हें यह विचार हुआ कि रुक्म को भ्राता ने बंदी बनाया। यदि मैं रुक्म को बंधनमुक्त कर दूँ तो संभव है कि भ्राता के मन में कोई दूसरा विचार आ जाए। इस विचार के कारण उन्होंने उत्तर में रुक्मिणी से कहा — ''यद्यपि तुम्हारा कथन ठीक है, परंतु रुक्म का अपराध अक्षम्य है, इसलिए उसे क्षमा नहीं किया जा सकता।''

रुक्मिणी — ''परंतु आपने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हारा हृदय दुःखित नहीं करना चाहता, क्या यह बात पूरी न होगी?''

श्रीकृष्ण — ''निःसंदेह मैंने ऐसा कहा था, परन्तु मैं तुम्हारे हृदय को दुःखित भी नहीं कर रहा हूँ।''

रुक्मिणी — ''अपने भाई को बंदी देखकर किस बहन का कठोर हृदय दु:खित न होगा?''

श्रीकृष्ण — ''यह ठीक है, परन्तु रुक्म को मैंने बन्दी नहीं बनाया है। जिसने बन्दी बनाया है, वही उसे बंधनमुक्त भी कर सकता है।''

कृष्ण के उत्तर से रुक्मिणी उनका आशय समझ गई। वह आशापूर्ण नेत्रों से बलदेव जी की ओर देखकर आँसू बहाने लगी। रुक्मिणी की करुण दशा ने बलदेव जी के हृदय को आर्द्र कर दिया। वे कृष्ण से कहने लगे — ''भैया! रुक्म को उसके अपराधों का पर्याप्त दण्ड मिल चुका है। अब रुक्मिणी के हृदय को दु:खित न होने देना चाहिए और रुक्म को बंधनमुक्त कर देना चाहिए।'' 'आपकी जो आज्ञा' कहकर श्रीकृष्ण ने रुक्म के बंधन खोल दिए और उसे उठाकर छाती से लगाते हुए कहा कि तुम वीर हो। मैं तुम्हारी वीरता पर और तुम जैसा वीर साला पाकर बहुत प्रसन्न हुआ। अब हमारा और तुम्हारा संबंध हुआ है, अत: अब तक की सब बातें भूलकर प्रेम-व्यवहार रखने में ही आनन्द है।

बलदेव जी ने भी रुक्म को छाती से लगाकर उसकी प्रशंसा की। वे भी कहने लगे कि तुम जैसे वीर की बहन मेरी अनुजवधू बनी, यह बड़े आनन्द की बात है। अब तुम जाओ और अपने पिता की सेवा कर उन्हें सुख पहुँचाओ।

अपने भाई को बंधनमुक्त देखकर रुक्मिणी बहुत प्रसन्न हुई। रुक्म भी श्रीकृष्ण और बलदेव जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके कहने लगा कि मुझे पिता की आज्ञा न मानने, आपसे निष्कारण वैर रखने और बहन रुक्मिणी के साथ अन्याय करने का जो प्रतिफल मिला है, वह उचित ही है। यदि मुझे यह दण्ड न मिलता तो मेरा क्रोध तथा अभिमान नष्ट न होता। अब आप कृपा करके कुण्डिनपुर पधारिए। मैं विधिवत् आपके साथ अपनी बहन का विवाह करके फिर आपको विदा करूँगा।

रुक्म की प्रार्थना सुनकर श्रीकृष्ण एवं बलदेव जी प्रसन्न हुए। रुक्म की प्रार्थना के उत्तर में श्रीकृष्ण उससे कहने लगे कि हमें तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करने में दूसरी कोई आपत्ति नहीं है, परंतु तुम्हारी बहन के साथ मेरा विवाह हो चुका है। पाणिग्रहण ही विवाह है और मैं रुक्मिणी का पाणिग्रहण कर चुका हूँ। अब तो केवल पारस्परिक प्रतिज्ञा करना शेष है, जो कहीं भी की जा सकती है। इसके सिवा मैं वैवाहिक आडम्बर का विरोधी हूँ। मैं नहीं चाहता कि विवाह में बाह्य आडम्बर तो किया जाए और विवाह सम्बन्धी जिन बातों पर लक्ष्य देने की आवश्यकता है, उनकी अवहेलना की जाए। मैं यदि कुण्डिनपुर लौटकर गया और तुमने धूमधाम से विवाह किया तो यह दूसरे लोगों के सामने विवाह में धूमधाम करने का आडम्बर रखना होगा। ऐसा करने से गरीबों के हृदय में आडम्बर न कर सकने के कारण दु:ख होगा और इस प्रकार लोगों में विषमता फैलेगी। साथ ही दहेज की घातक प्रथा को प्रोत्साहन मिलेगा। लोग मेरा उदाहरण देकर कहेंगे कि धूमधाम से विवाह करने तथा दहेज पाने के प्रलोभन से श्रीकृष्ण भी तो लौट आए थे। इसलिए इस समय मेरा कुण्डिनपुर चलना ठीक नहीं है। मैं आपके व्यवहार से बहुत संतुष्ट हूँ। आप जाइए। इस संबंध के होने से एक बार नहीं, किन्तु अनेक बार कुण्डिनपुर आना होगा।

रुक्म — ''यद्यपि आपका कथन ठीक है, परन्तु आप द्वारका पहुँचकर वहाँ रुक्मिणी के साथ विवाह संबंधी प्रतिज्ञाएँ करेंगे तो इसमें मेरा भयंकर अपमान होगा। मुझ पर यदि आपकी कृपा है तो आप मुझे इस अपमान से बचाइए।''

श्रीकृष्ण — ''दूसरे का अपमान करके अपना सम्मान बढ़ाने की मैं कदापि इच्छा नहीं रखता। आप विश्वास रखिए।''

श्रीकृष्ण के उत्तर से रुक्म को संतोष हुआ। वह कुण्डिनपुर लौटकर आया और रुक्मिणी सहित श्रीकृष्ण व बलदेव सीधे गिरनार पर्वत पर गए। वहाँ बलभद्र जी जल, अग्नि, वनस्पति आदि की साक्षी में रुक्मिणी और श्रीकृष्ण से विवाह सम्बन्धी प्रतिज्ञाएँ कराने लगे। बलदेव जी ने रुक्मिणी से कहा — ''राजकुमारी! तुम श्रीकृष्ण की पत्नी बनने को तैयार हो, लेकिन इनसे किन-किन बातों का विश्वास चाहती हो यह स्पष्ट कहो और श्रीकृष्ण से प्रतिज्ञा करवा लो। इसी प्रकार श्रीकृष्ण को भी उचित है कि वे तुमसे जो कुछ चाहते हों वह स्पष्ट कहकर तुमसे प्रतिज्ञा करवा लें।''

बलदेव जी की बात सुनकर रुक्मिणी श्रीकृष्ण से कहने लगी— ''हे कान्त! यदि आप मेरे साथ ज्ञान, दर्शन, तप, सत्य और दान करो, भक्तिपूर्वक मुनियों और गुरुजनों की अन्नादि द्वारा पूजा करो, उनका सत्कार करो, उसमें मुझे साथ रखो तो मैं आपकी धर्मपत्नी बनती हूँ। हे कान्त! यदि आप कुटुम्ब की रक्षा तथा पशुओं का पालन करो, आय, धन-धान्य के संबंध में मेरी सम्मति लो तो मैं आपकी धर्मपत्नी बनती हूँ। हे कान्त! यदि आप कुएँ, बावड़ी, तालाब बनवाने, बाग लगवाने और गौशाला चलाने आदि शुभ कार्यों में मेरी अनुमति लो तो मैं आपकी वामांगिनी बनती हूँ। हे कान्त! यदि आप किसी भी परस्त्री का, चाहे वह रम्भा के समान ही सुन्दरी ही क्यों न हो, कभी सेवन न करें, तो मैं आपकी अर्धांगिनी बनती हूँ।''

रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण के सामने ये सब बातें विस्तृत रूप में कहीं। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी की माँगों को सुनकर उससे कहा— ''हे कांते! यदि तुम अपने मन को मेरे मन के अनुगत रखो, सदा मेरी आज्ञा का पालन करो तथा पतिव्रता एवं धर्मपरायणा होकर रहो तो मुझे तुम्हारी ये सब बातें स्वीकार हैं।''

सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, पवन, वनस्पति, धर्म आदि और बलदेव को साक्षी करके रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण से कहा— ''हे कान्त! मैं आपकी कही सब बातों का मन, वचन और काया से पालन करूँगी।'' रुक्मिणी के इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर श्रीकृष्ण ने भी सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि और बलदेव जी को साक्षी करके कहा— ''हे कान्ते! मैं भी प्रतिज्ञा करता हूँ कि मन, वचन, काया से मैं उन सब वचनों का पालन करूँगा जो तुमने मुझसे कहे हैं और जिनका पालन करने के विषय में मुझसे विश्वास चाहा है।''

श्रीकृष्ण और रुक्मिणी द्वारा परस्पर इस प्रकार प्रतिज्ञा किये जाने पर बलदेव जी ने दोनों से कहा— ''तुम दोनों आदर्श पति-पत्नी के रूप में अपना गृहस्थ जीवन बिताओ और अन्त में आत्मकल्याण के लिए गृहस्थाश्रम को त्यागकर आत्मा का उद्धार करो, यही मेरा आशीर्वाद है।''

रुक्मिणी, कृष्ण और बलदेव जी द्वारका आए। द्वारका से कृष्ण और बलदेव जी अकेले ही गए थे। इस कारण द्वारकावासी लोगों को बड़ी चिन्ता हो रही थी। रुक्मिणी सहित दोनों भाइयों के पहुँचने से द्वारका के लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। रुक्मिणी की रक्षा करने के कारण सब लोग श्रीकृष्ण की सराहना करने लगे और धन्यवाद देने लगे।

सास-ससुर आदि से मिलकर रुक्मिणी भी बहुत प्रसन्न हुई। वह अपने भाग्य की सराहना करने लगी। देवकी आदि भी रुक्मिणी का सौन्दर्य और सद्व्यवहार देखकर बहुत प्रसन्न हुई। रुक्मिणी के नम्र व्यवहार ने उनके हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उसने प्रेम-व्यवहार द्वारा अपनी सौतों को भी प्रसन्न कर दिया और इस प्रकार कृष्ण की पटरानी होकर आनन्द से रहने लगी।

रुक्मिणी का कन्या जीवन जैसा दृढ़ता और सत्यनिष्ठापूर्ण था, उसका गृहिणी जीवन भी वैसा ही रहा। कृष्ण की सत्यभामा आदि अनेक रानियाँ थीं, फिर भी नम्रता और पतिभक्ति के कारण रुक्मिणी कृष्ण की हृदयवल्लभा बन गई और कृष्ण की समस्त रानियों में वह सबसे प्रमुख मानी जाने लगी। अंतकृद्दशांग सूत्र में भी श्रीकृष्ण की रानियों की गणना बताते हुए कहा है -

रुक्मिणी पामोक्खाणं सोलस्सण्ह देवी साहस्सीणं।

अर्थात् श्रीकृष्ण के रुक्मिणी आदि सोलह सहस्त्र रानियाँ थीं।

इस प्रकार शास्त्र में भी रुक्मिणी के पीछे दूसरी रानियों को बताया गया है और रुक्मिणी का नाम सर्वप्रथम कहा गया है। यह उनके आदर्श गृहिणी जीवन का ही परिणाम था। वह तीन खण्ड के स्वामी श्रीकृष्ण की प्रिय रानी थी। फिर भी उसमें विनय, नम्रता और सरलता अधिक थी। वह सास-ससुर और पति व गुरुजनों की सेवा करती, अपनी सौतों से प्रेम व्यवहार रखती और अपने से छोटों पर कृपा बरसाती। सबको वश में करने, सबके हृदय की स्वामिनी बनने का वह इसे उत्तम उपाय समझती थी। आधुनिक समय की अधिकांश स्त्रियाँ अपने पति को वश में करने के लिए दूसरे घृणित उपायों का अवलम्बन लेती हैं, लेकिन रुक्मिणी सबको वश में करने का महर्षियों द्वारा बताया गया एक यही उपाय जानती थी कि -

जंपई पियवयणं किज्जइ विन्नो दीज्जई दानं।
सव्व गुणगहण करण मूलमन्तं वसीकरणं।।

अर्थात् प्रिय वचन कहना, विनय करना, दान देना और गुणों को ग्रहण करना, ये सब दूसरे को वश में करने के प्रधान उपाय हैं।

रुक्मिणी ने इन्हीं उपायों को अपनाया था, जिससे उसका गृहिणी जीवन भी आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ और उसके द्वारा दूसरों को आनन्द प्राप्त हुआ।

रुक्मिणी का मातृ जीवन भी उच्च था। शास्त्र में रुक्मिणी की संतान के सम्बन्ध में केवल प्रद्युम्न कुमार का उल्लेख पाया जाता है। प्रद्युम्न कुमार के सिवाय रुक्मिणी के कोई और संतान होने का वर्णन शास्त्र में नहीं है। वह अधिक संतान की इच्छुक भी नहीं थी। केवल एक ही पुत्र होने, अधिक संतान नहीं होने से रुक्मिणी के मातृ जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं मानी जा सकती। सिंहनी अधिक बच्चों की माता नहीं होती, परन्तु वह सिंह को ही जनम देती है। इसी में उसकी शोभा भी है। नीतिकारों का कथन है -

वरमेकः गुणी पुत्रो निर्गुणैश्च शतैरपि।
एकश्चन्द्रः तमो हन्ति न च तारा सहस्रशः।।

अर्थात् सौ मूर्ख पुत्रों के होने की अपेक्षा एक गुणवान पुत्र का होना अच्छा है, क्योंकि एक ही चंद्र सारे अंधकार को नष्ट कर देता है, लेकिन हजारों तारे अंधकार नहीं मिटा सकते।

इसके अनुसार एक ही पुत्र की माता होने पर भी रुक्मिणी का मातृ जीवन आदर्श माना गया है, क्योंकि वह एक पुत्र प्रद्युम्न भी समस्त यादव कुमारों में अग्रणी था। शास्त्र में भी श्रीकृष्ण का गुणगान करते हुए कहा है -

पज्जुण पामोक्खाणं अद्धट्ठाणं कुमार कोडीणं।

अर्थात् प्रद्युम्न आदि साढ़े तीन करोड़ यादव कुमार थे।

प्रद्युम्न जैसे वीर की माता, श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष की प्रिय पत्नी और तीन खण्ड की महारानी होते हुए भी रुक्मिणी भोग-विलास में ही लिप्त नहीं रही। श्री गजसुकुमाल मुनि की हत्या की घटना से श्रीकृष्ण के हृदय में अनेक विचार उथल-पुथल मचा रहे थे। उन्हीं दिनों में बाईसवें तीर्थंकर भगवान अरिष्टनेमि अनेक जीवों का कल्याण करते हुए द्वारका सहस्राम्रवन बाग में पधारे। श्रीकृष्ण भगवान अरिष्टनेमि को वन्दन करने के लिए गए। भगवान को वन्दन करके उन्होंने भगवान से द्वारका के निवासियों का भविष्य पूछा। भगवान से अनिष्ट भविष्य सुनकर श्रीकृष्ण ने सारे नगर में यह संयम घोषणा करवा दी कि जो भी व्यक्ति संयम लेना चाहता हो, वह संयम लेकर आत्मकल्याण कर सकता है। ऐसे व्यक्ति के कुटुम्बियों के भरण-पोषण का भार मैं अपने ऊपर लेता हूँ और जिनको मेरी आज्ञा की आवश्यकता है, उनको आज्ञा भी देता हूँ। श्रीकृष्ण की यह घोषणा सुनकर रुक्मिणी को भी संसार से विरक्ति हो गई। वह भगवान अरिष्टनेमि की सेवा में गई और भगवान की वाणी सुनकर प्रार्थना की कि हे प्रभो! यद्यपि पति की घोषणा के अनुसार अब मुझे संयम लेने के विषय में पति से आज्ञा लेने की जरूरत नहीं है, फिर भी पतिव्रता धर्म की रक्षा के लिए मैं पति से आज्ञा लेकर संयम स्वीकार करूँगी। भगवान से इस प्रकार प्रार्थना करके रुक्मिणी घर आई और श्रीकृष्ण की आज्ञा प्राप्त करके पुनः भगवान अरिष्टनेमि की सेवा में उपस्थित हुई और उनसे संयम स्वीकार किया।

रुक्मिणी ने जिस प्रकार कन्या, पत्नी और मातृ जीवन के कर्तव्यों का सुचारू रूप से पालन किया था, उसी प्रकार संयम का भी सुचारू रूप से पालन किया। अन्त में तप द्वारा इस विनाशी शरीर को त्याग, सिद्धपद प्राप्त कर संसार के जन्म-मरण से मुक्त हो गई।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

(नोट - आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. के प्रेरक प्रवचनों से संकलित रुक्मिणी के जीवन-चरित्र पर आधारित 'रुक्मिणी विवाह' धारावाहिक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया, जिसमें रुक्मिणी के सिद्ध-पद के प्राप्त होने के साथ ही इस अंक में इस चरित्र का समापन हो गया। आशा है कि पाठकों को यह चरित्र अवश्य ही रुचिकर लगा होगा।)

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

29-30 अप्रैल 2025 अंक से आगे...

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रासुक-अप्रासुक आहार का थोकड़ा शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – श्रमणोपासक की निर्जरा का ही वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2646 तथारूप असंयत अविरत पाप कर्मों का प्रत्याख्यान न करने वाले और मिथ्यात्व का पोषण करने वाले साधु को कोई श्रावक प्रासुक या अप्रासुक आहारादि बहरावे तो उसे क्या फल मिलता है?

उत्तर एकांत पाप होता है, किंचित् मात्र भी निर्जरा नहीं होती है क्योंकि मिथ्यात्व का यश फैलाने वाले को गुरुबुद्धि से दान देने से मिथ्यात्व पुष्ट होता है। अनुकंपा दान की यहाँ विवक्षा नहीं है। यहाँ उस दान की विवक्षा है, जो निर्जरा का हेतु है एवं भव सीमित कराने वाला है।

प्र.2647 किसी साधु को गृहस्थ दो, तीन आदि पिंड (रोटी, लड्डू आदि) या पात्रादि बहराकर कहे कि एक आप लेना, शेष स्थविरों को देना। साधु स्थान पर आकर मुनियों की गवेषणा (खोज) करे, यदि मुनि न मिले तो उस साधु को क्या करना चाहिए?

उत्तर गृहस्थ ने मुनियों का नाम लेकर दिया इसलिए वह साधु उसे एकांत, अनापात (आवागमन न हो), अचित्त स्थंडिल स्थान (परठने की जगह) की प्रतिलेखना और प्रमार्जना करके परठ दें अन्यथा तीसरा महाव्रत– अदत्तादान विरमण महाव्रत दूषित होता है।

प्र.2648 गोचरी लेने या नीहार भूमि (स्थंडिल भूमि) या विहार भूमि (स्वाध्याय भूमि) की ओर जाते हुए साधु या साध्वी से कोई अकार्य (मूल गुणादि में दोष) हो गया हो और तुरंत वह मन में ऐसा सोचे कि 'प्रथम मैं यहीं इस कृत्य की आलोचना, प्रतिक्रमण आदि करके विशुद्ध बनकर भविष्य में ऐसा न करने की प्रतिज्ञा करके यथोचित्त प्रायश्चित्त और तप स्वीकार कर लूँ, तत्पश्चात् स्थविर मुनि के पास आलोचना करूँगा।' मुनि के पास पहुँचने के पूर्व वह साधु मूक हो जाए या काल कर जाए अथवा स्थविर मूक हो जाए या काल कर जाए तो वह साधु आराधक है या विराधक?

उत्तर वह साधु आराधक है, विराधक नहीं क्योंकि भाव शुद्धि से उसके परिणाम आलोचना करने के हो गये थे।

प्र.2649 आराधकता की बात को भगवान महावीर ने किस सिद्धांत और दृष्टांत से प्रतिपादित किया?

उत्तर **'चलमाणे चलिए'** सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए भगवान ने कहा कि **"अग्नि में डालते हुए को 'डाला', जलते हुए को 'जला', काटते हुए को 'काटा', रँगते हुए को 'रँगा' कहा जाता है।"** उसी प्रकार साधु या साध्वी आराधना करने

के लिए तैयार हुए यानी शुद्ध भावों से आलोचना करने के परिणाम थे इसलिए वह आराधक है, ऐसा कहा जाता है।

प्र.2650 जलते हुए दीपक में क्या जलता है - दीपक, बाती, तेल, ढक्कन या ज्योति?

उत्तर दीपक, बाती आदि नहीं जलते हैं, ज्योति जलती है। व्यवहार में दीपक जलता है, ऐसा कहते हैं, परंतु निश्चय की अपेक्षा से अग्नि जलती है।

प्र.2651 दीपक नहीं जलता है, ज्योति जलती है। इस आलापक से क्या दर्शाया गया है?

उत्तर इस आलापक में क्रिया की सापेक्षता दर्शायी गई है।

1. जलना अग्निकायिक जीवों की क्रिया है। वह क्रिया दीपक, तेल आदि सापेक्ष है।
2. मिट्टी का दीपक पृथ्वीकायिक जीवों का मुक्त शरीर है।
3. तेल, बाती, वनस्पतिकायिक जीवों का मुक्त शरीर है।

प्र.2652 जलते हुए घर में क्या जलता है - घर, स्तंभ, लकड़ी आदि या अग्नि?

उत्तर घर, स्तंभ, लकड़ी आदि नहीं जलते हैं, अग्नि जलती है।

प्र.2653 घर, स्तंभ आदि नहीं जलते हैं, किंतु अग्नि जलती है। इस आलापक का क्या प्रतिपाद्य (स्पष्टीकरण) है?

उत्तर
1. इस आलापक का प्रतिपाद्य है कि अग्नि की ज्वलन क्रिया पृथ्वीकायिक और वनस्पतिकायिक जीवों के मुक्त शरीर की अपेक्षा रखती है। इस प्रकार क्रिया की सापेक्षता का बोध दिया गया है।
2. व्यवहार में घर जलता है, ऐसा कहते हैं, परंतु निश्चय की अपेक्षा से अग्नि जलती है।

क्रियाएँ कितनी लगती हैं शतक 8 उद्देशक 6

पूर्वापर संबंध – क्रिया के प्रसंग में पूर्वभवों से लगने वाली क्रिया का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2654 आठवें शतक में कितनी क्रियाएँ कही गई हैं?

उत्तर
1. **कायिकी क्रिया** – काया से होने वाली हलन-चलनादि क्रिया।
2. **आधिकरणिकी क्रिया** – द्रव्य शस्त्र और भाव शस्त्र से लगने वाली क्रिया।
3. **प्राद्वेषिकी क्रिया** – ईर्ष्या, द्वेषादि अशुभ परिणामों से लगने वाली क्रिया।
4. **पारितापनिकी क्रिया** – जीवों को मन से (मंत्रादि से), कटु वचनों से अथवा मार-पीटकर कष्ट पहुँचाने से लगने वाली क्रिया।
5. **प्राणातिपातिकी क्रिया** – प्राणों का नाश करने से लगने वाली क्रिया।

प्र.2655 समुच्चय जीव और मनुष्य को औदारिक शरीर की अपेक्षा कितनी क्रिया लगती है?

उत्तर
1. समुच्चय जीव और मनुष्य को औदारिक शरीर की अपेक्षा कदाचित् (कभी) तीन, कदाचित् चार, कदाचित् पाँच क्रियाएँ लगती हैं तथा कदाचित् अक्रिय (क्रिया रहित) भी होता है।
2. 14वें गुणस्थान वाले अयोगी केवली अक्रिय होते हैं।
3. समुच्चय जीव में यहाँ सिद्धों को ग्रहण नहीं किया गया है, क्योंकि वे अक्रिय ही होते हैं।

साभार– श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

–क्रमशः

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- त्रिवेणी संगम के अनेक स्थानों के पावन करते हुए परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. का पुण्यभूमि सेठिया कोटड़ी में अभूतपूर्व मंगल प्रवेश। **मुमुक्षु चारू जी छाजेड़** की जैन भागवती दीक्षा **28 मई 2025** को।
- **बीकानेर** में **4 जून** को पाँच मुमुक्षु भाई-बहनों की जैन भागवती दीक्षा होनी संभावित। दो सुपुत्रों एवं उनकी माताजी की एकसाथ दीक्षा बनी चर्चा का विषय। हर कोई इस अद्‌भुत त्याग से प्रेरित हो अहोभावों से गुरुदेव के अतिशय को कर रहा नमन।
- श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने गंगाशहर-भीनासर संघ से किया 100 स्वाध्यायी तैयार करने का आह्वान। संघ में उल्लास का माहौल।
- **संथारा साधक श्री उदित मुनि जी म.सा.** को श्रद्धांजलि देने का दौर जारी। देशभर में हुई गुणानुवाद सभाएँ।
- अंतरराष्ट्रीय शाखा अबू धाबी में श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं समता महिला मंडल की नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन हुआ।
- '**इदं न मम**' कविता प्रतियोगिता का परिणाम घोषित। प्रथम तीन विजेताओं की रचनाएँ प्रकाशित।
- श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा तीन अंचलों का प्रवास संपन्न। समिति द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों व आयामों की प्रभावना।
- श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के तत्वावधान में चिकित्सा सेवा के रूप में '**आरोग्यम्**' शिविरों का देश के अनेक स्थानों पर आयोजन। हजारों लोग हुए लाभान्वित।
- '**सज्झायम्मि रओ सया**' नवीन आयाम के अंतर्गत महिला समिति द्वारा प्रश्नोत्तरी का प्रकाशन। ऑनलाइन व ऑनलाइन दोनों माध्यम से रजिस्ट्रेशन जारी।

गुरुचरण विहार समाचार

''मन को साफ करने के लिए तप-संयम जरूरी है''
- आचार्य भगवन्

''समता हमारी साधना का मार्ग है''
- उपाध्याय प्रवर

साधुमार्गी संघ की पावन भूमि बीकानेर में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश, तेले की लड़ी प्रारंभ

मरुप्रदेश की उग्र गर्मी में उग्र तपस्याओं का तेज

मुमुक्षु चारू जी छाजेड़ की दीक्षा 28 मई को बीकानेर में

त्रिवेणी संगम बना तीर्थधाम

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर, जेसराज जी बैद पारमार्थिक भवन, गंगाशहर, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर (राज.)।

वर्तमान के वर्धमान हो, जिनमार्ग में गतिमान हो।
भक्तों के भगवान हो, हुक्मसंघ के प्राण हो।।

जिनके दर्शन मात्र से खुल जाती तकदीर है, ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के श्रद्धा, भक्ति, आस्था से परिपूरित मारवाड़ अंचल में पावन प्रवास से जन-जन में अध्यात्म का नवालोक प्रदीप्त हो रहा है। बाल-युवा पीढ़ी के साथ ही महिला व बुजुर्ग सभी महापुरुषों के सान्निध्य को पाकर हर्षित और पुलकित होकर दर्शन, प्रवचन, ज्ञानचर्चा, सामायिक, प्रतिक्रमण, दया, संवर, स्वाध्याय सहित सभी आध्यात्मिक आयोजनों में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे हैं। जीवन के इन सुनहरे पलों को यादगार बनाने के लिए धर्म में पुरुषार्थ कर रहे हैं।

नवदीक्षित साधु-साध्वीवर्याओं की बड़ी दीक्षा महापुरुषों के पावन सान्निध्य में गंगाशहर-भीनासर में सानंद संपन्न हुई। **मुमुक्षु बहन सुश्री चारु जी छाजेड़, जोधपुर** की दीक्षा **बीकानेर** के लिए स्वीकृत होते ही बीकानेरवासियों में खुशी की लहर दौड़ गई। **4 जून 2025** को **बीकानेर** में ही **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत, मुमुक्षु हार्दिक जी**

सोनावत, मुमुक्षु रेखा जी सोनावत, मुमुक्षु नेहा जी डोसी, मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली की जैन भागवती दीक्षा का प्रसंग संभावित है। देश-विदेश से दर्शनार्थियों का आवागमन निरंतर जारी है। बीकानेर में महापुरुषों के ऐतिहासिक मंगल प्रवेश से संपूर्ण वातावरण उत्साहपूर्ण, धर्ममय बन गया। बीकानेर में वर्तमान में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर सहित 45 संत एवं पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारस कँवर जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा जी म.सा. सहित 90 साध्वीवर्याएँ विराजमान हैं। साधुमार्गी संघ, बीकानेर द्वारा आंचलिक **'परिवर्धनम्' शिविर** महापुरुषों के सान्निध्य में संभावित है।

जो प्राप्त है वो पर्याप्त है

01 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रातःकालीन मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति करते हुए **'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान'** एवं **'तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण पारस प्यारा'** गीतों की मधुर ध्वनि से संपूर्ण माहौल गूंज उठा। प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार धर्मरसिक गुरुभक्तों को धर्म की मूलता का बोध कराते हुए विश्व की विरल विभूति परम श्रद्धेय अचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**संयम का अर्थ आत्मनिग्रह अर्थात् इंद्रियनिग्रह करना होता है। श्रुत रुपी लगाम अर्थात् ज्ञान की लगाम से मन पर नियंत्रण किया जाता है। वह संयम होता है। इंद्रियों का निग्रह करना भाव संयम है। हमारे भीतर जो आकांक्षाएँ, अभिलाषाएँ या इच्छाएँ जागृत होती हैं, वे ही दुःख का कारण हैं। अभाव का भाव ही दुःख देने वाला होता है। तृप्त होना ही अर्थात् संतोश प्राप्त होना ही सुख का कारण है। जो मन से जीत गया वो जीत गया और जो मन से हार गया तो समझ लो वो हार गया। कोई चाह नहीं, अभिलाषा नहीं। जो प्राप्त है वही पर्याप्त है। इसी को संयम कहा गया है। मन को साफ करने के लिए तप और संयम होता है। जो मन के कषायों को हटाकर मन को निर्मल बना देता है। तपस्या शांत भाव से होनी चाहिए। तपस्या के लिए हठ नहीं बल्कि दृढ़ता होनी चाहिए। हठ से तपस्या करने से मन को शांति मिले यह जरूरी नहीं, किंतु सरलता से तपस्या करने से मन को शांत कर सकते हैं। मन के जहर को साफ करने के लिए पुरुषार्थ खुद को ही करना होगा।**''

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब व्यक्ति की सद्ज्ञान की ज्योति प्रकट हो जाती है तो उसके जीवन की दिशा बदल जाती है। गुरुदेव फरमाते हैं कि थोड़ा पढ़ो, ज्यादा गुणो। भौतिकता बढ़ने से व्यक्ति की इच्छाएँ बढ़ गई हैं। अगर किसी व्यक्ति को दुःखी करना हो तो उसकी इच्छाएँ बढ़ा दो। प्रभु व गुरु की वाणी सुनने से नहीं बल्कि उसको जीवन में उतारने से लाभ मिलेगा।

16 वर्षीय योगेश जी सिपानी, उदयरामसर/हावड़ा के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। पूर्व महापौर नारायण जी चौपड़ा, बीकानेर ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

उलझना छोड़ दें तो कोई समस्या ही नहीं

02 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। भोर की मंगल वेला में गुरुभक्ति से ओत-प्रोत प्रार्थना पश्चात् धर्मसभा में ज्ञानपिपासु भाई-बहनों को भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए परमागम रहस्यज्ञाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**शांति की चाह करना अर्थात् हम कहीं न कहीं अशांत है। मुद्गरपाणी ने कुल 1141 लोगों की हत्या की थी। मन में धैर्य अर्थात्**

धीरज रखें तो बहुत सारी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाता है। उलझना छोड़ दो तो कोई समस्या ही नहीं है। उलझता कौन है? हमारा मन। वही उलझन, अशांति पैदा करती है। आयुष्य पूर्ण हो जाए तो कोई बचा नहीं सकता। संथारा अर्थात् मृत्यूपर्यंत सभी आहार का त्याग करना। 'इदं न मम' यानी यह मेरा नहीं है। जिसके साथ जुड़ाव होता है उसी से हमारी अशांति होती है। हमारी साधना मोह घटाने वाली होनी चाहिए। इसलिए बार-बार बोध करो कि यह शरीर भी मेरा नहीं है। यह भी एक दिन छूटना है। हमारा ममत्व हमें दुःखी बनाता है। उत्थान और पतन का हेतु व्यक्ति स्वयं है।''

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने '**महावीर भगवान देना सद्ज्ञान जी**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि नवकार महामंत्र की महिमा अपरंपार है। तप-त्याग के प्रत्याख्यान हुए। विद्या भारती स्कूल, गंगाशहर-भीनासर के प्रमुखों व प्रधानाचार्यों ने गुरुदर्शन कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। व्यसनमुक्ति व संस्कार जागरण अभियान को गति देने का संकल्प लिया।

प्रतिकूलता में प्रसन्न रहें

03 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। मंगलमय प्रार्थना में '**मन हुकमी-हुकमी गाए जा**', '**मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान**' गीतों से मधुर ध्वनि में आराधन किया गया। प्रवचन सभा में शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने प्रतिकूलता को अनुकूलता मानकर प्रसन्न रहने की व्याख्या करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**अपने मन के स्वरूप की परीक्षा करो तो शांति को समझ पाना आसान हो जाएगा। प्रतिकूलता में जो व्यक्ति प्रसन्न रहता है वह शांति प्राप्त कर सकता है। व्यक्ति अपने पास रहे साधनों में ही खुश रहता है तो उसको अभाव की स्थिति महसूस ही नहीं होती। इसलिए उसके सदैव शांति बनी रहती है। तृष्णा का घड़ा कभी नहीं भरता। इसलिए ज्ञानीजन फरमाते हैं कि तृष्णा को छोड़ो और संतोष को अपनाओ। जब तक धर्म हमारे अंतरंग में नहीं रमेगा तब तक जीवन में पवित्रता नहीं आएगी। अभ्यास करने से मन की गति को भी पढ़ा जा सकता है। मुझे धर्म करना है तो खुद को ही करना है। दूसरे की अपेक्षा करने से धर्म नहीं होता है। चलने वाले को ही मंजिल मिलती है, रुकने वाले को नहीं। एकमात्र धर्म ही त्राण देने वाला है। अहिंसा, संयम, तप ही धर्म है। पुरुषार्थ करने से ही मनोरथ सिद्ध होता है।**''

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इस जीवन में सब कुछ पाना आसान है, किंतु मानव बनना मुश्किल है।

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है

04 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। आज रविवार होने से अवकाश के साथ-साथ गुरुभक्तों के लिए समता शाखा का विशेष अवसर उपलब्ध हुआ। प्रातःकाल से ही हजारों कदम स्थानक की पावन भूमि पर पहुँचकर आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त इस विशेष आयाम से सभी अपना जीवन धन्य बनाने को लालायित हो रहे थे। सामूहिक रूप से भोर की पावनता में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना की गई। आचार्यदेव के पावन दर्शन एवं मंगलपाठ श्रवण कर जनता निहाल हो गई।

प्रवचन स्थल के विशाल पंडाल में प्रवचन सभा के मध्य उच्च पाट पर आचार्य भगवन् विराजमान होकर सभी को अपने तेजोमय आभामंडल से शक्ति प्रदान कर रहे थे। आचार्य भगवन् के चरणों में उपाध्याय प्रवर सहित साधु-साध्वीवर्याओं की उपस्थिति तथा पाट के चारों ओर श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति समवसरण-सी अद्भुत दृश्यता प्रकट कर रही थी।

धर्मसभा के मध्य आगमसम्मत देशना में जिनशासन प्रद्योतक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**शांति सदासर्वदा आत्मा में विद्यमान रहती है। कोई इसको जगा पाता है और कोई नहीं जगा पाता। हमने अपनी शक्ति को अपने कर्मों से ढका हुआ है। जो परमात्म शक्ति है वही शक्ति हमारे अंदर विद्यमान है। कर्मों को हटाने के लिए अपनी शक्ति को संचय करना होगा। अनावश्यक मनन और चिंतन में हम अपनी शक्ति खर्च करते रहते हैं। संयम, शक्ति का संचय है। अतिलोभ नहीं करना चाहिए। जरूरत के अनुसार काम करना चाहिए। कामयाबी हासिल करने के लिए शक्ति को संचित कर सही दिशा की ओर लगानी चाहिए। शक्तियाँ हमें तीन की प्राप्त हुई हैं- मन शक्ति, वचन शक्ति व काय शक्ति। मन के विचारों से भी व्यक्ति सातवीं नरक में जा सकता है। मोह पर विजय पाना सबसे कठिन काम है। शरीर को ताप देने से आत्मा के कर्म जलते हैं और आत्मा पवित्र बन जाती है। ध्यान में एकाग्रता बहुत जरूरी है। एकाग्रता ऐसी हो कि जिसमें शरीर का भान ना हो। कुछ पाने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है। मन की लगाम अपने हाथ में होनी चाहिए तभी व्यक्ति लक्ष्य प्राप्त कर पाता है।**''

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संयम के सुख से बड़ा सुख संसार में कुछ भी नहीं है। चार दुर्लभ हैं- **मनुष्य जन्म मिलना, जिनवाणी श्रवण, जिनवाणी पर श्रद्धा और संयम में पराक्रम**। '***मेरे जीवन का जब अंत हो, मेरे सामने संत हो***' गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने गंगाशहर-भीनासर संघ से 100 स्वाध्यायी तैयार करने का आह्वान किया। होटल न जाने, किसी का अहित नहीं करने का संकल्प अनेक जनों ने लिया।

संसार है सपना, कोई नहीं अपना

05 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। दैनंदिनी में प्रात: मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति पश्चात् विशाल धर्मसभा का आयोजन किया गया। प्रवचन स्थल पर उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हर आत्मा में ऋजुता, सरलता, क्षमा आदि गुण भरे हुए हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसे पता नहीं कि आत्मा के अंदर कितने गुण हैं? कौन है वह? आत्मा स्वयं। मेरा कौन है? ज्ञान, दर्शन, चारित्र। मेरे साथ क्या जाएगा? पुरुषार्थ। गुरुवर मेरी अंतर्जागृति बढ़े, मेरे सद्गुण बढ़े, इसी भाव से गुरुदेव के दर्शन करते हुए वंदन करें। संसार सपना है। यहाँ अपना कोई नहीं है।

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि दु:ख का मूल कारण मोह है। हम अपने कर्तव्य से जागृत नहीं हैं तो हम आगे नहीं बढ़ सकते। हमें सुखी होने के लिए पुरुषार्थ करना है। मोह को कम करते जाएँ तो चित्त की शुद्धि होती है। यही धर्म का प्रसाद है। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

संथारा साधक श्री उदित मुनि जी म.सा. को भावसुमन अर्पित

06 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। '**मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान**' की मधुर स्वरलहरी में प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु भक्ति की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों की अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृतवाणी से पावन करते हुए तरुण तपस्वी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जीवन रहस्यों से भरा है। कौन कब मरेगा कोई पता नहीं है। हमारे पास उपाय होता है, लेकिन हम सोचते हैं कोई और उपाय होगा। आदमी में हिम्मत होनी**

चाहिए। दूसरों के मतों से कुछ नहीं होगा। श्री उदित मुनि जी म.सा. का संथारापूर्वक पंडितमरण के समाचार ज्ञात हुए। एक संत तैयार होने में समय लगता है। जितना सहयोग होता है उतना ही काम होता है। समय रहते हुए सावधान हो जाना चाहिए। जो सावधान हो जाता है, वो मोह की चपेट में नहीं आता है। समय जल्द ही निकल जाता है। हम भी अपनी मृत्यु को पहचान सकें। 'मन को जाणणो मिनखा मोटी बात' मन को जानना बहुत बड़ी बात है। जिसमें हिम्मत होती है उसका भगवान भी साथ देते हैं।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि **''बीमार होने पर अनेक तरह की दवाइयाँ हैं, लेकिन आज तक मौत की दवा नहीं बनी। अगर मौत से बचना चाहते हैं तो गुरुवर कहते हैं, इच्छाओं को थाम लो। इस शरीर पर भी हमारा अधिकार नहीं है। श्री उदित मुनि जी म.सा. 70 साल के नौजवान थे। वे एक्टिव थे। मन पक्का हो तो आदमी क्या नहीं कर सकता। उन्होंने तमिल में प्रतिक्रमण सीखा। उनकी त्याग भावना गहरी थी। लगन भावना गहरी थी। वे शांत संत थे। हम सभी त्याग, समता एवं क्रोध नहीं करने की प्रेरणा लें।''**

शीघ्र बीकानेर पधारने की विनती श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवा संघ, बीकानेर के सदस्यों व पदाधिकारियों ने की। समग्र जैन समाज की संस्था जैन यूथ क्लब, बीकानेर ने गुरुदर्शन कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। आचार्य भगवन् ने व्यसनमुक्ति, संस्कार जागरण अभियान एवं स्वाध्याय प्रवृत्ति को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाइयों ने लिया।

साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य प्रवर की पैनी व पारखी दृष्टि श्री उगमराज जी बाफना (श्री उदित मुनि जी म.सा.) पर टिकी और वहीं कृपा बरसा दी कि वे दीक्षा के योग्य हैं। चेन्नई में उनको दीक्षा की प्रेरणा दी और भगवन् ने मुझे आलंदूर की ओर विहार का संकेत किया। आलंदूर में मैं श्री उगमराज जी बाफना को प्रतिक्रमण कंठस्थ कराने लगी। मैं हिंदी में बोलती और वे प्रतिक्रमण को तमिल में लिखते। उनकी सीखने की ललक देखते ही बनती थी। सारे सांसारिक कार्यों से उपरत होकर प्रतिक्रमण सीखने में तल्लिन हो गए। वे सांसारिक अवस्था से ही बहुत सरल, सहज, तप-त्यागमय जीवन के पथिक थे। रसनेंद्रिय पर बेजोड़ संयम था। एकासन में एक ही स्थान पर आहार-पानी ग्रहण कर वहीं पर चौविहार कर लेते थे। सादगीपूर्ण संयम ग्रहण किया। नंदीषेण मुनि की तरह सेवा में तत्पर रहते। एकासन के बाद एकांतर भी करने लगे। शासन की खूब प्रभावना की। आपश्री मेरे सांसारिक बहनोई थे। जहाँ भी विचरण का संकेत मिलता तुरंत वहाँ जाने के लिए तैयार हो जाते। अद्भुत समर्पणा थी उनकी। अंतिम समय में श्री आदित्य मुनि जी म.सा. से संथारा ग्रहण कर अपने तीनों मनोरथों को पूर्ण किया।

साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. ने गुणानुवाद करते हुए फरमाया कि श्री उदित मुनि जी म.सा. यति धर्म के क्षमा, मृदुता, ऋजुता आदि दस गुणों से मंडित थे। गुरु आज्ञा में समर्पित, सेवा आदि अनेक गुणों से सुशोभित जीवन के धनी एवं तप-त्याग से भावित मिलनसार साधक थे। संयम लेकर सभी जीवों पर वात्सल्य का झरना बहाते थे। आपश्री जी मेरे सांसारिक मौसाजी थे। संयम लेकर जिनशासन की खूब प्रभावना की।

'**संथारो प्यारो घाणो, रतन चिंतामणी जैन ओ**' संथारा गीत साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा. ने प्रस्तुत सब को भाव विह्वल कर दिया। विदुषी कंचन देवी कांकरिया, कोलकाता ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त किया। संघ मंत्री एवं महेश नाहटा ने श्री उदित मुनि जी म.सा. का दिव्य जीवन परिचय देते हुए उनके महाप्रयाण को शासन की अपूरणीय क्षति बताया। अंत में 4-4 लोगस्स का ध्यान कर दिव्यात्मा को हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

मेरेपन के भाव हटने से दूर होते हैं दुःख

07 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात: की पावन बेला में '**श्री महावीर स्वामी की जय हो**' एवं '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' भक्ति गीतों से जीवन धन्य बनाया गया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**मन जब दूसरे पर आसक्त होता है तो कमजोर होता है। जड़ व चेतन दो पदार्थ हैं। जड़ की तरफ आकर्षण होना मन की कमजोरी है। कोई भी जड़ पदार्थ चेतना का रुप नहीं ले सकता। तीर्थंकर भगवान में अनंत शक्ति है, किंतु तीर्थंकर भी जड़ को चेतन, चेतन को जड़ नहीं बना सकते। मनुष्य जन्म को राजा माना जाता है। इस जन्म में व्यक्ति नर से नारायण बन सकता है। असुरक्षा का भाव कमजोर मन की कल्पना है। कोई भी देव हो, उसमें वैक्रिय शक्ति होती है। शरीर का ममत्व छोड़ देने से भय दूर हो जाएगा। जहाँ मेरेपन का भाव हट जाता है वहाँ सारे दुःख-दर्द दूर हो जाते हैं। विचारों का बदलाव अर्थात् भावनाओं का बदलाव। देवता भी उसे नमस्कार करते हैं, जिसके भाव में सदा धर्म की आराधना रहती है। किसी का सम्मान न कर सकें तो अपमान भी नहीं करना चाहिए।**''

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु आज्ञा ही प्रभु आज्ञा है। गुरु आज्ञा अविचारणीय है। धर्म का काम सिर्फ मन से होना चाहिए। आज तक बिना शिष्य बने कोई भी गुरु नहीं बन सका और न ही भविष्य में बनेगा। भगवान ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूपी चार नाव बताई है। गुरु, अरिहंत प्रभु के प्रतिनिधि कहलाते हैं।

कठिनाई में धैर्य रखें

08 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। '**राम गुरु गुण गाना है**', '**मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान**' आदि प्रभु एवं गुरुभक्ति भजनों के संगान से प्रात:कालीन प्रार्थना की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी में संबोधित करते हुए प्रशांतमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि -

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोई।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।

''**मन में अशांति पैदा होना ही दुःख है। भगवान की स्तुति मन को शांत करने के लिए करनी चाहिए। अगर इस भाव से स्तुति करेंगे तो हमारा मनोबल बढ़ जाएगा। जिसका मनोबल दृढ़ होता है उसे किसी सहायक की जरुरत नहीं होती। हिम्मती आदमी ही जोखिम उठा सकता है। जो कठिनाई में धैर्य रखता है वह मंजिल को प्राप्त कर लेता है। विश्वास हमेशा फल देने वाला होता है। भगवान का भजन आत्मशक्ति को बढ़ाने के लिए करना चाहिए। पुरुषार्थ पर विश्वास व्यक्ति को मंजिल तक पहुँचाता है। तिरस्कार किसी का भी नहीं करना चाहिए। तिरस्कार करने से स्वयं की हानि निश्चित है। किसी के भी प्रति घृष्णा पैदा होना अपने मन को विकृत बनाना होता है। हमें किसी का अपमान करने का अधिकार नहीं है। हम किसी का भला कर सकें तो अच्छा है। यदि नहीं कर सकें तो किसी का बुरा नहीं करना चाहिए।**'' '**सुज्ञानी जीवा तज देना विष को उत्तम रीत है**' चौपाई भाग के माध्यम से आचार्य भगवन् प्रतिदिन नई-नई प्रेरणाएँ देकर ऊर्जान्वित कर रहे हैं।

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने '**जीवन के प्रांगण में छाए हो**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि हम न किसी को हीन समझें, ना किसी की उपेक्षा करें। आत्मा की अपेक्षा से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता है। साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुजाता श्री जी म.सा., साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा., साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने '**नंदनवन-सा महक रहा गण-गण यति धर्म की हरियाली संयम समाया कण-कण**' गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया। कई भाई-बहनों ने स्वाध्यायी सेवा देने का संकल्प लिया।

निर्णायक कदम की ओर आगे बढ़ें

09 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। '**उठ भोर भई टुक जाग सही**' सुंदर भाव गीतों से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में धर्म की अलख जगाते हुए संयम सुमेरु, दिव्य विभूति आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जन्म और मृत्यु जीवन के दो छोर हैं। जन्म हमारे हाथ में नहीं है। जन्म हमने पाया है और मृत्यु हमारे हाथ में है। किस प्रकार से हमारी मृत्यु होनी चाहिए, यह हमारे हाथ में है। मोक्ष जाएँगे तब जाएँगे, पहले मृत्यु को सजा लिया जाए। जीवन का लक्ष्य क्या है? मृत्यु तक समय निकालने का मतलब है समय पास करना। एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीया जा सकता है। एक निर्णायक कदम आगे बढ़ाना है। ऐसा निर्णायक कदम बढ़ाना है कि पुनः पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं पड़ें। एक बार यदि हमारी सम्यक् आराधना हो जाए तो पंद्रह भवों के बाद मोक्ष निश्चित है। पंद्रहवें भव में हमारी मुक्ति होगी, किंतु नींव के पत्थर का शिलान्यास हमें इसी जन्म में करना पड़ेगा। फिर हमारा जीवन सुपथ पर चलेगा, सही दिशा में चलेगा।**''

महावीर के हम सिपाही बनेंगे, जो बढ़ा कदम ना पीछे हटेंगे।
चाहे कैसा भी कठिन समय आ जाए, पीछे नहीं हटेंगे।।

'**सुज्ञानी जीवा तज देना विष को उत्तम रीत है**' चौपाई भाग का सुंदर वर्णन करते हुए आत्मभाव में जीने और मान-अपमान से दूर रहने की प्रेरणा आचार्य भगवन् ने दी।

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने '**गुरु नाना के पाट विराजे जय-जय गवरानंदन**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि मोक्ष जाने की बात सब करते हैं, लेकिन वास्तव में मोक्ष जाने की भावना बनी है या नहीं यह आत्मचिंतन करें। स्वाध्यायी सेवा देने का शुभ संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया।

पाँच समिति तीन गुप्ति की सम्यक् आराधना से मोक्ष निश्चित

नवदीक्षितों की बड़ी दीक्षा सोल्लास संपन्न

मुमुक्षु चारू जी छाजेड़ की जैन भागवती दीक्षा आगारों सहित 28 मई को बीकानेर के लिए घोषित

10 मई 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। '**चहुँओर हर्ष व्याप्त है**' गीत के मधुर वचन प्रार्थना के साथ उच्चारित हुए। विशाल धर्मसभा में परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**पाँच समिति तीन गुप्ति साधु जीवन का मूल आधार है। पाँच समिति तीन गुप्ति की सम्यक्**

आराधना हो जाए तो मोक्ष निश्चित है। ज्ञान किसी को कम है तो किसी को ज्यादा, किंतु आठ प्रवचन माता की आराधना सही तरीके से हुई है तो उसका कल्याण निश्चित है। साधक बनने के बाद हमारी चर्या में परिवर्तन होना चाहिए। साधु का परिणाम हमारे जीवन में झलकना चाहिए। दौड़-दौड़कर नहीं चलना चाहिए। शांत भाव से यतनापूर्वक चलना चाहिए। मन में कोई दुविधा, द्वंद्व नहीं रहे। गजगति के समान चलना चाहिए। नीचे देखकर, सामने देखकर चलना चाहिए। किसी भी जीव की विराधना न हो, ऐसा लक्ष्य होना चाहिए। हाथ, पाँव एवं भाषा में संयम होना चाहिए। किसी के दिल को चोट पहुँचे वैसी भाषा नहीं बोलनी चाहिए। कठोरकारी, हिंसाकारी, छेदकारी आदि आठ प्रकार की भाषाओं का वर्जन करते हुए शुद्ध संयम का व्यवहार करना चाहिए। तीसरी एषणा - कोई भी पदार्थ हमें ग्रहण करना है तो आहार मर्यादा के अंतर्गत उसकी गवेषणा करके ग्रहण करना चाहिए। शुद्ध भिक्षा की गवेषणा करते हुए ग्रहण करना होगा। 42 दोष टालकर भिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। साधु के लिए बनाया हुआ आहार ग्रहण नहीं करना है। चौथा भंडोपकरण - संयमी जीवन के लिए जो भी वस्त्र, सामग्री है उसको व्यवस्थित रखना चाहिए। बिखरा हुआ सामान अस्थिर मन का प्रतीक है। जमीन को देखकर परठना, अर्थात् जीवों की विराधना से बचना। मन-वचन-काया की रक्षा करना। मन में बुरा विचार नहीं आने देना। क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत के विचार आने लगें तो उनको तुरंत बाहर करना। ये विचार हमारी साधना को भटकाने वाले बनेंगे। इसके लिए गुणपरक दृष्टि होनी चाहिए। हमारी दृष्टि गुणपरक दृष्टि होनी चाहिए। अपने दोषों को देखना अच्छी बात है। दूसरों के दोषों को देखना गलत है। कौन क्या कर रहा है, इससे लेना-देना नहीं। मुझे छल-कपट की भाषा का प्रयोग नहीं करना है। किसी से राग-द्वेष नहीं रखना है। दीक्षा आप लीजिए व औरों को दिलाइए। जो भी लेता है उसका साथ दीजिए।''

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने संयमी आत्माओं से प्रेरणा लेकर संयम भाव जगाने का आह्वान किया।

नवदीक्षित साध्वीवर्याओं ने '**मृगावती बनना पुरुषार्थ को जगाना**' गीत प्रस्तुत करते हुए अपने संकल्प-पत्र का पठन कर फरमाया कि हे आचार्य भगवन्! अपने चरणों में स्थान देकर आपश्री ने महान उपकार किया है। आज्ञा आराधना और सेवा में हम सदैव तत्पर रहेंगी। पाँच इंद्रियों एवं चार कषायों को जीतकर हम अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकें यही मंगलकामना है। आरुग्गबोहिलाभं की बहनों ने संयम गीत प्रस्तुत किया। **मुमुक्षु चारू जी छाजेड़** सुपुत्री अनिता जी गजराज जी छाजेड़ की दीक्षा **जेठ सुदी 2 दिनांक 28 मई** के लिए घोषित होते ही संपूर्ण सभा जय-जयकारों से गूँज उठी।

समता भाव को बढ़ाना है

11 मई 2025, जेसराज बैद पारमार्थिक भवन ट्रस्ट, गंगाशहर। रविवारीय समता शाखा आराधना हेतु अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में दिव्यबोध देते हुए फरमाया कि ''**समता सुख है। समता धर्म है। समता हमारी साधना का मार्ग है। समता संबंधों से मुक्त होने पर आती है। जब मन के संबंधों पर ब्रेक लगाया जाता है तब समता आती है। हमारे भीतर समता बहनी चाहिए। क्योंकि समता नहीं बढ़ेगी तो धर्म नहीं बढ़ेगा। संसार के पदार्थों से जुड़े रहेंगे, संसार के व्यक्तियों से जुड़े रहेंगे तो उनके सारे उतार-चढ़ाव के प्रभाव हमारे भीतर पड़ेंगे। जब तक हम एकत्व भाव में नहीं आ जाएँ तब तक समान भाव में, समता भाव में रहना मुश्किल है। मजबूत संबंध दु:ख का कारण हैं। समता भाव नहीं बढ़ा तो सुख**

नहीं बढ़ेगा। समता भावों को निरंतर आगे बढ़ाना है।''

श्री जयेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बिना ज्ञान के जीवन व्यर्थ है। ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया कर्मों के आवरण को हटाने वाली होती है। ज्ञानपूर्वक की गई क्रिया फलदायी है और अज्ञानपूर्वक की गई क्रिया व्यर्थ है।

धर्म का आचरण करें

12 मई 2025, जेसराज बैद पारमार्थिक भवन ट्रस्ट, गंगाशहर। प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति से ओत-प्रोत गीतों का संगान किया गया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ श्रवण कराया। श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि धर्म करने वाले और धर्म नहीं करने वाले की जीवनशैली में क्या अंतर है? लोग समझते हैं कि सामायिक कर लें और उसमें संतुष्ट हो जाते हैं। धर्म सिर्फ धार्मिक बनने मात्र से नहीं होता है अपितु छल-कपट, माया, राग-द्वेष आदि जीवन में कितने कम हुए, यह आत्मचिंतन करें। प्रतिकूल अवस्था, उतार-चढ़ाव आने पर भी जीवन में समभाव रखने का प्रयास करना चाहिए। मात्र धर्म का ज्ञान कर लिया और जीवन आचरण में नहीं उतारा तो धर्म का कोई महत्व नहीं रहेगा। धर्म के ज्ञान के साथ आचरण होने से ही जीवन का कल्याण संभव है।

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने अहिंसा, संयम, तप को धर्म का लक्षण बताया गया है। जो धर्म का आचरण करते हैं उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। केंद्रीय कार्यालय में शय्यातर लाभ की पुरजोर विनती कार्यालय कर्मचारियों ने श्रीचरणों में प्रस्तुत की।

बदलने के लिए सुनना, समझना आवश्यक

13 मई 2025, जेसराज बैद पारमार्थिक भवन ट्रस्ट, गंगाशहर। भोर के मंगल आगाज के पश्चात् मंगलमय प्रार्थना में भक्ति गान किया गया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमारे द्वारा की गई वंदना सही विधि से होनी चाहिए। विधिपूर्वक की गई वंदना महान फल देने वाली होती है। सुनोगे, समझोगे तो बदलोगे। वंदना हमारी नींव है। हमारी भावना और आचरण उच्चतम एवं दृढ़तम होने चाहिए।

श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो व्यक्ति राग से मुक्त हो जाता है उसकी इच्छाएँ समाप्त हो जाती है। चाह और राग इच्छाओं को बढ़ाने वाले होते हैं। हमारा लक्ष्य आरंभ और परिग्रह को त्याग करने का होना चाहिए। जितनी इच्छा बढ़ेगी, चाह बढ़ेगी, उतना ही हम दु:खी होंगे।

हुक्मसंघ की राजधानी बीकानेर की पावन धरा पर आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का मंगल प्रवेश

इच्छाओं में उलझने से मन अशांत होता है

14 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। दृढ़ संयम धारी, कठोर क्रिया के साक्षात कर्ता, परमागम रहस्यज्ञाता, युगनिर्माता परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का गंगाशहर के जेसराज बैद पारमार्थिक भवन से बीकानेर की दिशा में विहार हुआ। बिना किसी पूर्व सूचना के विहार का लाभ लेने हेतु गुरुभक्तों

की उपस्थिति अद्‌भुत समर्पणा का परिचय दे रही थी। संपूर्ण विहार मार्ग **'त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की'**, **'नाना गुरु ने क्या दिया, राम दिया भई राम दिया'**, **'संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं'**, **'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाट है'**, **'ना थारां है ना म्हारां है, राम गुरु सिगळारा हैं'** आदि जयघोषों से गुंजायमान हो रहा था। मार्ग के दोनों ओर अपार जनमेदिनी संयम सूर्य की एक झलक पाने को आतुर नजर आ रही थी। हर कोई प्रकृति की उष्णता में भी उच्चस्तरीय दृढ़ संयम की पालना देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहा। जय-जयकारों एवं मंगल गीतों के गान के साथ बीकानेर के ऐतिहासिक धर्मस्थल सेठिया कोटड़ी में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। सभी संप्रदाय के लोगों ने महापुरुषों की अगवानी की। संपूर्ण बीकानेर में हर्षोल्लास का वातावरण छा गया। यहाँ सेठिया कोटड़ी एवं समता साधना भवन (मालू कोटड़ी) में स्थिरवास चारित्रात्माओं ने अपने आपको निहाल अनुभूत किया।

मंगल प्रवेश पश्चात् सेठिया कोटड़ी में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतदेशना में फरमाया कि **''सबकी मंगल भावना है कि हमारा जीवन शांत बने, प्रशांत बने। अशांति किसी को प्रिय नहीं है। अशांति में जी रहा है यह अलग बात है। इच्छा, अभिलाषा तो शांति की रहती है किंतु ये अशांति का हेतु है। अशांत मन कमजोर होता है। मन अपनी अपेक्षाओं में उलझता रहता है तो अशांत होता है। मन इच्छाओं में नहीं उलझे, ताने-बाने नहीं बुने तो अशांत नहीं होगा। किंतु हम इच्छाओं को छोड़ना ही नहीं चाहते, फिर भी चाहते हैं कि मेरा मन शांत हो जाए। कैसे होगा? मन को इतना तपा लें कि हमारे भीतर उफान नहीं आए। इसलिए मन को साधना होगा। इसके लिए मन को तैयार करना होगा। जो कुछ भी हमारे सामने आ रहा है उसको सहज भाव से सहन करो। मनुष्य जीवन में कठिनाइयों के बादल आते हैं, परेशानियाँ आती हैं और कुदरत खेल खेलती है। उस समय हमारा मन डाँवाडोल नहीं हो। हम अपने आपको गतिमान रखें। जो बादल छाए हैं वे एक दिन अपने आप छँट जाएँगे। वैसे ही परेशानियाँ हर समय नहीं होती। वे कुछ समय के लिए आती हैं। हमने कैसा जीवन जीया, समय उसकी परीक्षा करता रहता है। परेशानियाँ, कठिनाइयाँ तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। वे प्रेरणा देने वाली हैं। जो भी परिस्थिति हमारे सामने आए हम यदि उससे प्रेरणा लेने लग जाएँगे तो परेशानी दूर होती चली जाएगी। बीकानेर तपोभूमि रही है। जहाँ गुरुदेव ने लंबे समय तक विराजकर साधना की है। श्रद्धेय श्री इंदरचंद जी म.सा. वर्षों तक विराजे। वीर भगवान, देवता जी महाराज भी विराज रहे हैं। महासतियों की भी तपोभूमि रही है। सौ वर्षों का इतिहास है कि मालू कोटड़ी और सेठिया कोटड़ी कभी खाली नहीं रही। कभी खाली रही हो तो बात अलग है, किंतु निरंतर संत-सतियों का वास यहाँ रहा है। बीकानेर क्षेत्र की पुण्यवानी है। साधुओं का योग पुण्यकारी योग होता है।''**

श्री रमेश मुनि जी म.सा. 'देवता महाराज' ने अपने पावन उद्‌बोधन में फरमाया कि एक गुरु सौ शिष्यों का निर्माण कर सकता है, किंतु सौ शिष्य मिलकर एक गुरु नहीं बना सकते। **'आज रंग बरसे रे, राम-राजेश रा दर्शन कर म्हारो हिवड़ा हरसे रे'** गीत के साथ आगे फरमाया कि हमारी इतनी शक्ति नहीं कि छोटी-सी जिह्वा से इतने बड़े गुरु का गुणगान कर सकें। इनका लक्ष्य अटल है। इनका हर कार्य निर्लिप्तता के साथ होता है। आचार्य ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं, महेश हैं, परमब्रह्म हैं, जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करते हैं।

कविरत्न श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. 'वीर भगवान' ने अपने भावोद्‌गार में **'गुरुवर आए म्हारे पावन आंगन धन्य हुए दर्शन पाकर'** भावपूर्ण गीत प्रस्तुत कर सबको भावविभोर कर दिया।

श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यह जो हमें महापुरुषों के सान्निध्य का मौका मिला है, इसका समय रहते उपयोग कर लें। ये मौका फिर मिले या ना मिले। महापुरुषों के दर्शन मात्र से हमारी आँखें पवित्र-पावन बन जाती है।

साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आज की पावन घड़ी धन्यता की घड़ी बन गई। आज हमारे अंतराय कर्मों का क्षय हुआ जो आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के दर्शन हुए। महापुरुषों के दर्शन आत्मतृप्त करने वाले होते हैं। समता महिला मंडल, समता बहू मंडल ने **'गुरु आया रे म्हारा गुरु आया'** स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सभा का संयोजन करते हुए परम गुरुभक्त ने महापुरुषों के आगमन हो संघ का परम सौभाग्य व पुण्योदय बताते हुए धर्म-लाभ लेने की अपील की।

विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। तेले की लड़ी, एकासना, उपवास, आयंबिल की लड़ी प्रारंभ हुई। श्री विजय कुमार जी सांड के 28 उपवास की तपस्या गतिमान थी। चारित्रात्माओं के भी निरंतर तपस्याएँ जारी हैं। जैन-जैनेतर सभी श्रद्धालु भाई-बहन महापुरुषों के सान्निध्य का अनुपम लाभ उठा रहे हैं।

पकड़ एवं आसक्ति अशांति का कारण

15 मई 2025, सेठिया कोटड़ी, बीकानेर। मंगलमय प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** एवं **'जय राम गुरु की बोलो'** गीतों के साथ गुरुभक्ति की गई। प्रवचन स्थल के विशाल प्रांगण में उपस्थित अपार जनमेदिनी को परमात्म सान्निध्य के विवेचन के साथ प्रतिबोधित करते हुए अद्वितीय संयम के धनी, रत्नत्रय के महान आराधक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**परमात्मा के चरणों को जिसने स्वीकार कर लिया, जिसका परमात्म भाव में मन लगने लग गया, वह अशांत नहीं हो सकता। अशांति अज्ञान की परिचायक है। मोह विडंबना है। जिसने परमात्म चरणों को स्वीकार कर लिया उसका अज्ञान गल गया और मोह पिघल गया। इनका असर अब उस पर होने वाला नहीं है। यदि हम अशांत होते हैं तो अभी तक हमने प्रभु को ठीक तरह से स्वीकार नहीं किया है। धन-दौलत अनंत जन्मों में प्राप्त की है, लेकिन धर्म अनंत जन्मों में प्राप्त नहीं कर पाए। इस जन्म में हमें धर्म प्राप्त हुआ है। हम अपने-अपने मन को पूछें कि हम धर्म का चयन करेंगे या धन का। अभी तक धर्म के महत्व को हमने समझा नहीं है। सारी अशांति, सारी टेंशन, सारा तनाव धर्म के मार्ग से ही समाप्त होने वाले हैं। धन से अशांति, तनाव हटने वाला नहीं है। अशांति का मूल कारण हमारी पकड़ है। हम धन, पद-प्रतिष्ठा चाहते हैं। धर्म के आधार पर यदि प्रतिष्ठा खड़ी होगी तो आपको प्रतिष्ठा का भय नहीं होगा और धन या अहंकार के आधार पर खड़ी प्रतिष्ठा में हमेशा भय रहेगा।**''

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि टी.वी., मोबाइल चलाना सीख गए हैं किंतु जीवन चलाना नहीं सीखे। गुरु सही मार्ग दिखाते हैं किंतु उस पर चलना तो हमें ही होगा। प्रमाद नहीं करते हुए हर क्षण का सदुपयोग करें।

कविरत्न श्री वीरेंद्र मुनि जी म.सा. ने **'तेरी भक्ति में रम जावां'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सभा को राममय बना दिया। साध्वी कल्याण कँवर जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने **'राम गुरु के दर्शन से दिल दीवाना हो गया'** भक्ति गीत प्रस्तुत किया। ताश नहीं खेलने का नियम कई भाइयों ने लिया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने धर्माराधना की प्रेरणा दी। परम गुरुभक्त सुश्रावक जी ने **'म्हारे आंगण आया गुरु सा.'** मधुर गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने बारह माह में 12 आयंबिल, 12 उपवास करने का नियम लिया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

प्रतिदिन दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा समाधान आदि धार्मिक आयोजन हुए। बीकानेर का कण-कण राम रंग में रँग गया है। 28 मई को बीकानेर में **मुमुक्षु चारू जी**

छाजेड़, जोधपुर की पावन दीक्षा एवं 4 जून को **मुमुक्षु मयंक जी सोनावत, मुमुक्षु हार्दिक जी सोनावत, मुमुक्षु रेखा जी सोनावत**, हैदराबाद/भीनासर, **मुमुक्षु नेहा जी डोसी**, डौंडीलोहारा, **मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली**, डौंडीलोहारा की जैन भागवती दीक्षा होनी संभावित है।

तपस्या सूची

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	इचरा बाई, जमनालाल जी चोरड़िया–शहादा, प्रदीप जी बोथरा–लूणकरणसर, सुरेश जी कुसुम देवी सुराणा–भीनासर/बेंगलुरु, शेषकरण जी दुर्गा देवी ललवाणी, रतनलाल जी भूरा, दीपचंद जी ललिता देवी बोथरा, कमला देवी प्रकाशचंद जी सेठिया, रमेश जी जाजड़ा–भीनासर, मूलचंद जी मंजू देवी डागा–गंगाशहर, सुशील जी तारा देवी सेठिया, धनपत जी किरण जी कोठारी
उपवास	**मासखमण** – विजय कुमार जी सांड–देशनोक, **16** – कमल जी पटवा, कांता जी बाँठिया, **15** – वीर पिता हनुमानमल जी पारख, **अठाई** – प्रकाश जी सिपाणी, लता जी बाँठिया, मंजू जी डागा, आशा देवी सिपाणी, कौशल्या जी सांड
गाथा का स्वाध्याय	**वर्ष में एक लाख** – सुशीला जी आरी–बीकानेर
वर्षीतप	शिल्पी जी मालू, किरण बाई सिपाणी

-महेश नाहटा

साहित्य सदस्यों हेतु सूचना

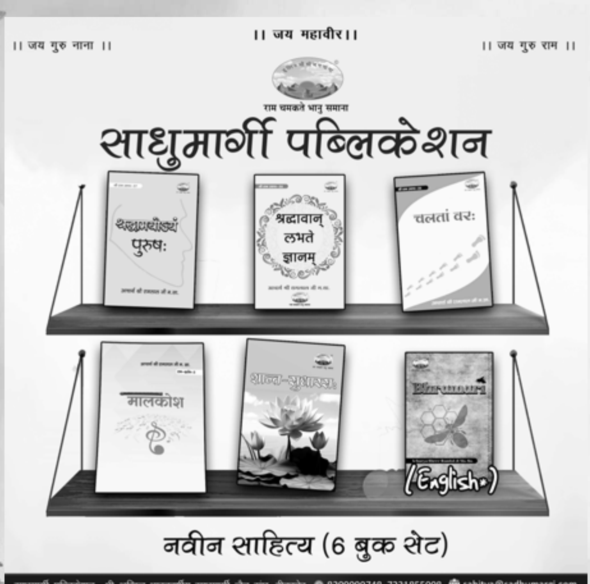

आप सभी साहित्य सदस्यों से पुनः निवेदन है कि आपके नवीन साहित्य के 5-6 बुक का सेट कार्यालय से मार्च 2025 में आपको प्रेषित किया गया था, कृपया नीचे दिए गए वॉट्सएप लिंक पर साहित्य सदस्यता क्रमांक के साथ साहित्य सेट प्राप्ति की सूचना देने का कष्ट करें। भविष्य में आपके पते में किसी प्रकार का परिवर्तन हो तो हमें अपडेट करावें। किन्हीं सदस्यों को नवीन साहित्य का सेट प्राप्त नहीं हुआ हो तो कृपया हमें अपडेट देवें।

नोट – यदि आपने साहित्य सेट प्राप्ति की सूचना दे दी है तो इस मैसेज को इग्नोर करें।

साधुमार्गी पब्लिकेशन
(अंतर्गत : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)
https://wa.me/918209090748

राम चमकते भानु समाना

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

भीलवाड़ा। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य में 7 दिवसीय धार्मिक शिविर **'एक उड़ान संस्कारों की ओर'** का आयोजन आदिनाथ भवन, कांचीपुरम् में किया गया, जिसमें 70 बच्चों ने भाग लिया। साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा. के सिद्धि तप की अनुमोदना हेतु शासन दीपिका साध्वी श्री चंचल कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4 का समता भवन, काशीपुरी से पधारना हुआ। साध्वी श्री सुरक्षा श्री जी म.सा. ने बच्चों का मार्गदर्शन किया। चारित्रात्माओं की तपस्या की अनुमोदना में समता महिला मंडल, समता बहू मंडल एवं कांचीपुरम् महिला मंडल द्वारा चौबीसी का आयोजन किया गया। चारित्रात्माओं के प्रभावशाली उद्बोधन से प्रभावित होकर जैनेतर दंपत्ति उमरावमल जी प्रेम बाई चुंडावत ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। एक अलग कार्यक्रम में महिला मंडल द्वारा तपस्वी बहनों का अभिनंदन किया गया।

समता युवा संघ द्वारा भगवान महावीर जयंती के उपलक्ष्य में आरोग्यम् नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर के अंतर्गत अरिहंत हॉस्पिटल एंड रिसर्च संस्थान में नेत्र जाँच एवं परामर्श शिविर का आयोजन कर लगभग 400 जनों को सेवाएँ दी। आर.के. कॉलोनी में श्री महावीर सेवा समिति के तत्वावधान में साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में आयोजित दो दिवसीय पारिवारिक शिविर में लगभग 100 शिविरार्थियों ने धर्म लाभ लिया।

- दीपक बेताला

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

नोखा। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. एवं श्री मधुर मुनि जी म.सा. ठाणा-2 का श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में सुख-सातापूर्वक विराजना हुआ। आपश्री जी नोखा से पांचू, चाड़ी, पांचोड़ी आदि क्षेत्रों में धर्म प्रभावना करते हुए पुनः 20 अप्रैल को नोखा पधारे। आपश्री जी के सान्निध्य में तप-त्याग व धर्म-ध्यान का ठाट लग गया।

श्री उदित मुनि जी म.सा. के पंडितमरण के समाचार ज्ञात होने पर प्रवचन सभा में गुणानुवाद किया गया। श्री मधुर मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने से श्री उदित मुनि जी म.सा. ने शरीर का मोह त्याग कर संथारा ग्रहण कर पंडितमरण को प्राप्त किया।

शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन में गिनती के दिन मिले हैं। उनको व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। श्री उदित मुनि जी म.सा. ने प्रत्येक क्षण का महत्व समझते हुए अपना संयमी जीवन संथारापूर्वक साध लिया।

सभा में पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, महिला मंडल मंत्री, संघ मंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने भावसुमन अर्पित किए।

- बाबूलाल कांकरिया

सरदारशहर। शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में आचार्य श्री रामेश का जन्मोत्सव जैन जवाहर पौषधशाला में बेले, उपवास, एकासना, बियासना आदि तपस्याओं द्वारा मनाया गया। प्रवचन पश्चात् आचार्य श्री रामेश के जीवन पर आधारित विभिन्न गतिविधियाँ करवाई गई, जिनमें संघ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यहाँ से साध्वीवर्याओं का दिल्ली की दिशा में विहार हुआ।

- सुबुद्धि बरड़िया

उदासर। शासन दीपक श्री गौरव मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में क्रोध, मान, माया, लोभ, चार कषाय विषय पर जैन सिद्धांत बत्तीसी कक्षा का आयोजन हुआ। प्रवचन में मोहनीय कर्म की तीव्रता की व्याख्या सुनकर सभी आत्मविभोर हो गए। दोपहर में बच्चों का शिविर हुआ, जिसमें 24 बच्चों की उपस्थिति रही। श्रावक-श्राविकाओं को महाव्रतों के बारे में विस्तार से बताया गया। रात्रि में धर्मचर्चा में सभी ने चारित्रात्माओं के मुखारविंद से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। सम्पूर्ण दिवस धर्माराधना में बीता। सभी धार्मिक कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविकाओं की उत्साहजनक उपस्थिति रहती है। **– राजेंद्र सेठिया**

पिपलिया कलां। शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 का 14 मार्च को यहाँ मंगल पदार्पण हुआ। पी.जी. फॉइल्स के 300 कर्मचारियों सहित सैकड़ों गुरुभक्तों ने आपश्री द्वारा फरमाए गए प्रवचनों का लाभ लेकर पुण्यार्जन किया। अनेक भाई-बहनों ने व्यसनमुक्ति के प्रत्याख्यान लिए। '**अरिहंत-अरिहंत**' के जाप से सम्पूर्ण माहौल धर्ममय बन गया। आपश्री जी का 23 मार्च को भीम की दिशा में विहार हुआ। **– महेश नाहटा**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। संत श्री उदित मुनि जी म.सा. के पंडितमरण के समाचार ज्ञात होने पर समता भवन में आयोजित गुणानुवाद सभा में शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि श्री उदित मुनि जी में सेवा भावना, समर्पणा व सरलता के गुण भरपूर थे। आपश्री प्रतिदिन 200 णमोत्थु णं एवं 200 लोगस्स का लक्ष्य रखते थे। हमें ऐसे महापुरुषों के गुणों को ग्रहण करना चाहिए।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि उदित मुनि जी म.सा. की दीक्षा हमारे साथ ही हुई थी। आपको हिंदी नहीं आती थी। अत: आपने प्रतिक्रमण तमिल में लिखकर कुछ ही दिनों में याद कर लिया। उनका आत्मबल बहुत मजबूत था।

श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आँखें खुली तो जीवन का आरंभ और आँखें बंद तो जीवन का अंत। आँखें खुलने और बंद होने के बीच का जीवन हम किस प्रकार जीयें, यह चिंतन का विषय है। आसक्तियों पर विजय पा लेना महापुरुष बन जाना है।

श्री अनन्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि उन्होंने तीसरा मनोरथ पूर्ण करके पंडितमरण प्राप्त किया। नौ साल तक हर महीने गुरुदेव के दर्शन करने का लक्ष्य बना रखा था। ऐसी अद्‌भुत समर्पणा थी।

साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि जो जन्म लेता उसकी मृत्यु निश्चित है। जिसने मृत्यु को महोत्सव बना दिया ऐसे महापुरुष अपनी आत्मा के स्वरूप को पहचान लेते हैं।

सभा के अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

समता भवन में विराजित शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5 के दर्शनार्थ मुमुक्षु दौलतराज जी तातेड़ एवं मुमुक्षु ज्ञानचंद जी भंडारी को उद्‌बोधित करते हुए म.सा. ने भजन '**अरिहंत बनना है, मुझे सिद्ध बनना है**' के माध्यम से फरमाया कि हमें भी मुमुक्षु की तरह आगे बढ़ना है। साधु जीवन ही सर्वोत्तम है। **– नोरतमल बाबेल**

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

रतलाम। दस दिवसीय समता संस्कार शिविर का आयोजन समता इंटरनेशनल स्कूल में किया गया, जिसमें सकल जैन समाज के लगभग 500 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर के प्रारंभ में प्रार्थना व प्रवचन पश्चात् सामायिक, प्रतिक्रमण की कक्षाएँ लगाई गई। बच्चों में छुपी हुई प्रतिभा को खोजने हेतु समता प्रीमियर लीग धार्मिक प्रतियोगिता का आयोजन कर बच्चों को पुरस्कृत किया गया। शिविर का समापन 14 मई को समता भवन में हुआ। इस अवसर पर रैली निकालकर व्यसनमुक्ति एवं

संस्कार जागरण का संदेश देते हुए आचार्य भगवन् की जय-जयकार से संपूर्ण मार्ग धर्ममय बना दिया। समापन अवसर पर संघ के आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री एवं पूर्व राष्ट्रीय मंत्री सहित अनेक गणमान्यजनों सहित पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही। पुरस्कार वितरण कर बच्चों का उत्साहवर्द्धन किया गया। **- कमल पिरोदिया**

✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧

नगरी। शासन दीपक श्री अक्षय मुनि म.सा. आदि ठाणा का सरोना में भगवान महावीर जन्मकल्याणक दिवस पर जिनशासन की भव्य प्रभावना के पश्चात् नगरी में पधारना हुआ। आपश्री के सान्निध्य में आयोजित अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव में अंचल के गणमान्यजनों सहित जैन समाज के लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कृषि उपज मंडी प्रांगण में आयोजित प्रवचन सभा में पूज्य म.सा. ने भगवान ऋषभदेव की जीवन की विवेचना करते हुए जिनवाणी का रसपान कराया। प्रवचन सभा में आचार्य श्री सुरेश्वर जी म.सा. की सुशिष्या साध्वीरत्ना जी आदि ठाणा का मंगल पदार्पण हुआ। आप साध्वीवर्याओं के भी निरंतर तपस्या गतिमान है। नगरी संघ सदस्यों द्वारा आपश्री जी की सुख-साता की प्रज्ञा के साथ मंगलकामना की गई।

पारणा महोत्सव तथा एकांतर तपस्वी बहुमान का सुनहरा अवसर इसी मंडी प्रांगण में अभिनंदन कार्यक्रम के रूप में हुआ। इसके अंतर्गत विभिन्न स्थानों से पधारे तपस्वियों के बहुमान के साथ उनके तप की अनुमोदना की गई। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री महावीर मंडल, श्री साधुमार्गी जैन संघ, नगरी द्वारा उपस्थित तपस्वियों का तिलक लगाकर अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय के साथ रायपुर, धमतरी, दुर्ग, राजनांदगाँव, लोहारा, कांकेर, केशकाल, कुंडा गाँव, जगदलपुर, भानपुरा, महासमुंद, बागबहारा, लखनपुरी, अकोली, खरियार रोड, खैरागढ़, भिलाई, राजीव, बालोद, सोनारपाल सहित अन्य अनेक क्षेत्रों से तपस्वियों का आगमन हुआ। संजय नगर श्री साधुमार्गी जैन संघ ने निरंतर सेवाएँ प्रदान की। **- नवीन देशलहरा**

✧✧ मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल ✧✧

अबू धाबी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दुबई के अबू धाबी में श्री साधुमार्गी जैन संघ एवं समता महिला मंडल की 10 मई 2025 को आयोजित साधारण सभा में सत्र 2025-27 के लिए नवीन कार्यकारिणी गठन किया गया। **श्री साधुमार्गी जैन संघ-** अध्यक्ष सौरभ जी नागौरी, मंत्री चिराग जी बोरदिया, कोषाध्यक्ष विकास जी जैन। **समता महिला मंडल-** अध्यक्ष नीरू जी गेलड़ा, मंत्री गरिमा जी नाहर, सह-मंत्री स्वाति जी बाफना। उपस्थित सदस्यों एवं गणमान्यजनों ने नवीन कार्यकारिणी को बधाई व शुभकामनाएँ देते हुए आशा व्यक्त की कि नवीन कार्यकाल में संघ वृद्धि की ओर अग्रसर होगा।

- चिराग बोरदिया

व्यावहारिक क्षेत्र में यदि हम राजनीतिक क्षेत्र पर दृष्टिपात करें तो पाएँगे कि जो प्रधानमंत्री बनता है वह मंत्रालयों के विभागों का विभाजन करता है और कभी-कभी कुछ विभाग अपने अधीन भी रख लेता है। उसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में आचार्य सर्वप्रमुख होते हैं। वे द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को देखते हुए आवश्यक पद-वितरण कर सकते हैं। आवश्यक नहीं समझते तो नहीं करते हैं। आचार्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ने पाँच गणावच्छेक नियुक्त किए थे और निर्देश किया था कि अमुक भाग का नेतृत्व अमुक करेंगे और शेष जो मेरे नेतृत्व में हैं, उनका दायित्व मेरे ऊपर रहेगा। समय बदला, अजमेर साधु सम्मेलन की स्थिति बनी। संवत् 1990 के अजमेर वृहत्साधु सम्मेलन में युगद्रष्टा ज्योतिर्धर श्री जवाहराचार्य जी ने एकता की नई रूपरेखा दी, जिसमें सुरक्षा के भाव को लेकर एक ही आचार्य के नेतृत्व में एक शिक्षा, एक दीक्षा की बात कही गई।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

'इदं न मम'

कविता प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

परमागम रहस्यज्ञाता, शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, शिखर महापुरुष, परम श्रद्धेय, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के स्वर्णिम दीक्षा वर्ष के उपलक्ष्य में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की प्रमुख प्रवृत्ति '**इदं न मम**' के अंतर्गत आयोजित कविता प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया, जिसमें **प्रथम** - पायल जी वया, **द्वितीय** - कांता जी जैन, **तृतीय** - मेघना जी तातेड़, **सांत्वना पुरस्कार** - डॉ. स्मिता जी कोटड़िया, सुनीता जी नाहटा विजेता रहे। प्रथम तीन विजेताओं की रचनाएँ सभी के अवलोकनार्थ प्रकाशित की जा रही हैं।

प्रथम

महत्तम महोत्सव की ये प्रवृत्ति, राम गुरु की देन है।
यह मेरा नहीं, यह मेरा नहीं, यह दर्शाती ये प्रवृत्ति है।।
जब शरीर ही मेरा नहीं, तो क्या धन मेरा हो जाएगा,
इस शरीर के साथ ही धन भी खाक हो जाएगा।
इस प्रवृत्ति का लाभ उठा लो, भाग्य तेरे खुल जाएँगे,
दान देना यदि सार्थक होगा, तो भव से तिर जाएँगे।।
दान देना सच्चे हृदय से-2, स्वर्ग के द्वार खुल जाएँगे,
इदं न मम की प्रवृत्ति अपना लो, सार्थक मनुष्य भव हो जाएगा।
गुरुवर के दीक्षा महोत्सव में,
तुम्हारा भी सहयोग हो जाएगा।।

- पायल वया, बंबोरा

द्वितीय

जाग मुसाफिर...। तेरा-मेरा किया बहुतेरा,
इदं न मम बोल बंधुवरा।
अब तक अहंकार किया बहुबारा,
न तन तेरा, न मन तेरा, न धन तेरा।
तन नश्वर, तन का कपड़ा छिन जाएगा,
मन चंचल, बुढ़ापे में बेबश हो जाएगा,
खाली हाथ आया और खाली हाथ ही जाएगा।
उधार की साँसों का क्या ठिकाना,
पता नहीं कितना इनको साथ निभाना।
फिर इन सबका क्यों बन रहा रखवारा,
अब तो बोल, इदं न मम बंधुवरा।।

- कांता बैद, गाजियाबाद

तृतीय

इदं न मम, यह मेरा नहीं, यह जगत नहीं मेरा, यह समझो,
संसार की माया, पलभर का धोखा।
गुरु के आदेश से जीवन बहे, हम सब मिलकर उसी में रहें,
इदं न मम यह सोच समझो, तप, त्याग और दान को अपनाओ।
स्वार्थ का वह भाव मिटा दो, संतोष को अपनाओ, आध्यात्मिक शांति पा लो,
तभी जीवन का सच्चा सुख मिलेगा, जब इदं न मम का दर्शन होगा।।

- मेघना तातेड़, जयपुर

कार्यसमिति बैठक केंद्रीय कार्यालय बीकानेर में संपन्न

चार महीने के प्रगति प्रतिवेदन व निष्पादन बजट के साथ आगामी वित्तीय वर्ष हेतु 14 करोड़ का वित्तीय बजट पेश

बीकानेर, 29 अप्रैल 2025। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की कार्यसमिति बैठक में लगभग 14 करोड़ का बजट प्रस्तुत करने के साथ ही कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। आनंद सागर, भीनासर में प्राकृतिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक व नैचुरोपैथिक चिकित्सा उपलब्ध कराने की दिशा में कदम उठाने के लिए भी कार्यसमिति में विचार-विमर्श हुआ। इस दौरान चार माह पश्चात् गतिविधियों पर चर्चा के साथ अगली बैठक 11 जुलाई 2025 को संभवतः देशनोक में होने की जानकारी भी दी गई।

बीकानेर स्थित केंद्रीय कार्यालय में दो सत्रों में संपन्न बैठक के प्रथम सत्र में राष्ट्रीय महामंत्री ने विगत चार महीने का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने सदस्यों को बताया कि 4 नए संपर्कित क्षेत्र बढ़े हैं और 5 नए संघ आबद्ध हुए हैं। उन्होंने इस बात की भी जानकारी दी कि बालाघाट जिले के कुछ क्षेत्रों को संघ संविधान के अनुसार मध्य प्रदेश अंचल से हटाकर छत्तीसगढ़ अंचल में शामिल किया गया है।

संघ सदस्यता की जानकारी देते हुए राष्ट्रीय महामंत्री ने बताया कि अब तक 16 लोग शिखर सदस्यता ग्रहण कर चुके हैं और 5 अन्य लोगों के नाम इसके लिए प्रस्तावित हैं। महाप्रभावक सहित अन्य सदस्यता के बारे में भी उन्होंने सदन को जानकारी दी। श्रमणोपासक सदस्यता, पाठशाला, जैन संस्कार पाठ्यक्रम, समता प्रचार संघ, विहार सेवा, समता भवन, ग्लोबल कार्ड, इदं न मम, दानपेटी, धर्मपाल, एसपीएफ, नो एंड ग्रो, जीवदया सहित सभी प्रवृत्तियों के चार माह के कार्यों का लेखा-जोखा उन्होंने प्रस्तुत किया।

नयन रांका ने पाठशाला को भगवान की वाणी जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बताते हुए उससे अधिकाधिक लोगों को जोड़ने और उसकी गुणवत्ता बढ़ाने के लिए आगामी 5 साल का एजेंडा सभी के सामने रखते हुए सुझाव और समर्थन माँगा। उपस्थित सभी लोगों ने उनकी बात पर सहमति जताते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत एजेंडे की दिशा में आगे बढ़ने के लिए पूर्ण समर्थन देने की बात कही।

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष ने डोनर पोर्टल में नए जुड़े फीचर्स की जानकारी सभा को दी। आंचलिक एवं प्रवृत्तियों के संयोजकों से प्राप्त प्रतिवेदन भी सदन के पटल पर रखे गए। सत्र का संचालन महेश नाहटा एवं राष्ट्रीय महामंत्री ने किया।

द्वितीय सत्र : सर्वप्रथम साहित्य संयोजक ने आगम से संबंधित साहित्य की सदस्यता के नए प्रारूप का प्रस्ताव सदन के सामने रखा, जो कुछ सुझावों के बाद पारित किया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने वर्ष 2025-26 का परिचालन बजट पेश किया। अनुमानित 14 करोड़ का बजट पेश

करते हुए उन्होंने होने वाले खर्चों की जानकारी विस्तार से दी। सभा ने प्रस्तावित बजट को सर्वानुमति से पारित किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने ही संघ की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति '**इदं न मम**' से वर्तमान में जुड़े हुए लोगों और उनसे प्राप्त राशि की जानकारी देने के साथ ही भावी योजना के बारे में आँकड़ों सहित विस्तार से बताया।

संघ के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष ने '**आनंद सागर**', भीनासर में स्थित भूमि की उपयोगिता संबंधी एक प्रोजेक्ट सदन के समक्ष रखा तो सुमित जी बाँठिया ने संघ द्वारा जनसामान्य को प्राकृतिक चिकित्सा उपलब्ध कराए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए इसके लिए सर्वसुविधायुक्त चिकित्सा केंद्र खोलने का प्रस्ताव रखा।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सभी सदस्यों से पाठशाला, शिविर हेतु उत्साहपूर्वक कार्य करने का आह्वान किया। बैठक का समापन संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के संगान के साथ हुआ। समापन से पूर्व अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने उपस्थित सभी सदस्यों के प्रति आभार अभिव्यक्ति के साथ गंगाशहर-भीनासर संघ के आवास-निवास एवं भोजन व्यवस्था की सराहना करते हुए अगली बैठक देशनोक में होने की जानकारी दी। गत अवधि में देवलोकगमन करने वाले चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया।

- राष्ट्रीय महामंत्री

प्रश्न है कि आदर्श कैसा होना चाहिए? आदर्श वही हो जो अपने लक्ष्य का सर्वोत्तम प्रतिमान बन सके। वह लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य है आत्मा को सर्वविशुद्ध रूप प्रदान करके सिद्धावस्था तक पहुँचाने का। साधक का प्रथम चिंतन इस दृष्टि से आदर्श का अनुचिंतन ही होगा, जो यह भान दिलाता है कि यह मानव-जीवन मात्र इसी जीवन तक सीमित नहीं है। यह विभिन्न योनियों में परिभ्रमण करते हुए ऐसे सशक्त साधन के रूप में मिला है, जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। इस जीवन और अन्य दुर्लभ प्राप्तियों के पश्चात् आत्मकल्याण के लक्ष्य से विचलित रहना, पुण्यमय संयोगों का सदुपयोग नहीं करना तथा भौतिक पदार्थों के उपार्जन में ही बहुमूल्य समय का दुरुपयोग करना कतई समुचित नहीं है। साधक का यह चिंतन चलना चाहिए कि मुझे आज जो अनुकूलताएँ मिली हैं, क्या मैं आत्म-विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि ये सब मुझे आगामी जन्म में भी प्राप्त होंगी? यदि ऐसा नहीं है तो उनका इसी जीवन में पूर्ण सदुपयोग कर ही लेना चाहिए, क्योंकि मात्र भौतिक साधनों की उपलब्धि का मार्ग अज्ञान के अंधकार से आवृत्त होता है। अंधकार की ओर गति करना मेरा लक्ष्य नहीं है। यदि मैं अंधकार में ही रहूँ तो ये इंद्रियाँ भी कामभोगों की तरफ आकर्षित होती रहेंगी। समस्त दृश्य, श्रव्य अथवा स्वादिष्ट पदार्थ मुझे अपने आदर्श लक्ष्य से विचलित करने की ही क्रिया करते रहते हैं। इसलिए मुझे इन सबसे ऊपर उठकर अपने आत्म-साक्षात्कार की ओर इस गति से बढ़ना चाहिए कि जहाँ अंधकार ही एक रेखा तक न रहे, चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश हो। इस प्रकाश में आत्मज्ञान का, अनंत सूर्यों से अधिक तेज होते हुए भी परमशांति का आलोक व्याप्त होता है।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव

30 अप्रैल 2025। अक्षय तृतीया के पावन प्रसंग पर गंगाशहर-भीनासर में शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में 114, रतलाम में शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 64 एवं नगरी में शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 46 वर्षीतप आराधकों के पारणे सम्पन्न हुए। इन वर्षीतप आराधकों में स्थानीय सहित आस-पास के अनेक स्थानों से पधारे महानुभावों की उपस्थिति गौरवान्वित करने वाली थी। सभी जगह प्रवचन के पश्चात् आयोजित एक अलग कार्यक्रम में संघ प्रमुखों द्वारा इक्षुरस से वर्षीतप आराधकों को पारणा करवाया गया।

गंगाशहर-भीनासर में

1. कमला देवी सुराणा, गंगाशहर
2. चंचला देवी सुराणा, गंगाशहर
3. आशा जी डागा, दिल्ली
4. लीला देवी मालू, चेन्नई
5. ममोल देवी कोचर, बीकानेर
6. राजू देवी बैद, गंगाशहर/मुंबई
7. रितु जी बेगाणी, जयपुर/बीकानेर
8. शांति देवी सेठिया, अलाय
9. सुरेंद्र जी डागा, गंगाशहर/इस्लामपुर
10. लक्ष्मी देवी संचेती, नोखा
11. गुलाब देवी बुच्चा, नोखा
12. विमला देवी डागा, नोखा
13. गुलाब देवी मिन्नी, भीनासर
14. कनक देवी बच्छावत, बीकानेर
15. उर्मिला देवी बुच्चा, बीकानेर
16. उर्मिला जी कोचर, बीकानेर/कोलकाता
17. मेहुल जी कोचर, बीकानेर/कोलकाता
18. संतोष देवी सांखला, बालेसर
19. ममता जी लूणिया, बीकानेर
20. आशा देवी रांका, बीकानेर
21. पुष्पा देवी बाँठिया, बीकानेर
22. शान्ति देवी बेगाणी, बीकानेर
23. किरण देवी सिपाणी, गंगाशहर
24. सरोज देवी सिपानी, उदयरामसर
25. कस्तूर बाई गुलगुलिया, गंगाशहर
26. कमला देवी कोचर, बीकानेर
27. ज्ञानी देवी भूरा, देशनोक
28. मंजू देवी नाहटा, गंगाशहर
29. मंजुला जी रामपुरिया, भीनासर
30. इंद्रा देवी आंचलिया, राजसमंद
31. सरोज देवी मिन्नी, सिलीगुड़ी
32. सुमन जी सेठिया, कोलकाता
33. किरण जी बैद, सूरत
34. रेखा जी सोनावत, हैदराबाद
35. निर्मला देवी सेठिया, लुधियाना
36. राजकुमारी जी लोढ़ा, इंदौर

37. हस्तीमल जी चंडालिया, मंदसौर
38. नितेश जी गांधी, अंकलेश्वर
39. चंचल जी गांधी, अंकलेश्वर
40. सीमा जी ओस्तवाल, धरणगाँव
41. कविता जी ओस्तवाल, धरणगाँव
42. मंजुश्री जी पगारिया, धरणगाँव
43. कल्पना जी जैन, धरणगाँव
44. शोभा बाई चतुरमुथा, धरणगाँव
45. पुष्पा जी सालेचा वोहरा, नागदा
46. मनीष जी चिप्पड़, प्रतापगढ़
47. मधु जी कोठारी, छनेरा
48. शांति देवी बोहरा, खंडवा
49. अभिलाषा जी सुराणा, चालीसगाँव
50. मोनिका जी हीरावत, धमतरी
51. लीला बाई धारीवाल, नासिक
52. सुशीला बाई बाफना, शिरपुर
53. मनोहर जी मोगरा, कानोड़
54. सुज्ञान जी मोगरा, कानोड़
55. मधु देवी सांखला, बालेसर
56. सुषमा जी नाहर, बेगूँ
57. शांति देवी सिसोदिया, जोधपुर
58. किशोर जी सांखला, जोधपुर
59. प्रेमलता जी सांखला, जोधपुर
60. कांता देवी धारीवाल, उदयपुर
61. पुष्पा जी बरमेचा, भीलवाड़ा
62. वर्षा जी दक, भीलवाड़ा
63. रंजना जी दक, भीलवाड़ा
64. रिंकू जी पितलिया, भीलवाड़ा
65. उर्मिला जी पोरवाल, चितौड़गढ़
66. मंजू जी मेहता, ब्यावर
67. सुशीला देवी चिप्पड़, प्रतापगढ़
68. रुखमणी जी जैन, सवाई माधोपुर
69. मंजू देवी लोढ़ा, आसावरा
70. विनोद जी बुरड़, वाण्याविहीर
71. कल्पेश जी पालरेचा, वाण्याविहीर
72. सरला बाई पालरेचा, वाण्याविहीर
73. प्रतिमा जी बुरड़, वाण्याविहीर
74. विद्या जी बुरड़, वाण्याविहीर
75. छोटी बाई बुरड़, वाण्याविहीर
76. संगीता बाई बुरड़, वाण्याविहीर
77. अनिता जी ओस्तवाल, धरणगाँव
78. यश जी ओस्तवाल, धरणगाँव
79. ऊषा जी सेठिया, जयपुर
80. किरण जी नाहर, धमतरी
81. इंद्रा जी मेहता, बड़ीसादड़ी
82. कौशल्या देवी भूरा, भीलवाड़ा
83. पुष्पा जी समदड़िया, छत्रपति संभाजीनगर
84. शिव सिंह जी चौधरी, मंदसौर
85. सुशीला देवी डांगी, भीलवाड़ा
86. रामी देवी संचेती, रायपुर
87. अनिता जी संचेती, सिलापथार
88. सपना जी नलवाया, नीमच
89. अर्चिता जी खेमलीवाला, उदयपुर
90. शकुंतला जी गोलछा, रावतसर
91. राजेश जी बाफना, भीलवाड़ा
92. पायल देवी बाफना, भीलवाड़ा
93. चाँदनी जी बाफना, भीलवाड़ा
94. जमना बेन रांका, उदयपुर
95. कैलाश जी सुराणा, सनवाड़
96. अनिल जी मेहता, कानोड़
97. मधु जी मेहता, कानोड़
98. चंद्रकला जी कटारिया, भीलवाड़ा
99. इंद्रा देवी चोपडा, शेरगढ़
100. प्रियंका जी जारोली, कानोड़
101. रेखा जी डूंगरवाल, मैसूर
102. मीना जी बागमार, भीलवाड़ा
103. प्रेमलता जी पोखरना, चित्तौड़गढ़
104. नारायणी बाई चंडालिया, फतेहनगर

105. सुधा जी सुराणा, कटिहार
106. मीरा जी मेहता, उदयपुर
107. लीला कँवर जी कोठारी, ब्यावर
108. दुर्गा देवी कोटड़िया, नंदुरबार
109. छाया जी मल्हारा, जलगाँव
110. सरोज देवी तातेड़, सरदारशहर
111. हीना जी टाटिया, बंसड़ा
112. सुमन जी सेठिया, सूरत
113. रतन देवी सुराणा, कोलकाता
114. कंचन जी आंचलिया, दिल्ली

प्रेषक- महेश नाहटा

रतलाम में

1. इंदू जी नाहटा, रतलाम
2. सुनीता जी कटारिया, रतलाम
3. प्रवीणा जी मुणत, रतलाम
4. स्नेहा जी मुणत, रतलाम
5. सरोज जी बंबोरी, रतलाम
6. साधना जी कोठारी, रतलाम
7. मधु जी मुणत, रतलाम
8. प्रभा जी कोठारी, रतलाम
9. कुसुम जी गांधी, रतलाम
10. मधुबाला जी गोरेचा, रतलाम
11. चंदनबाला जी मुणत, रतलाम
12. आजाद जी मेहता, रतलाम
13. त्रिशला जी मुणत, रतलाम
14. वेणुबाला जी मुणत, रतलाम
15. राजकुमारी जी मुणत, रतलाम
16. रेखा जी गांधी, रतलाम
17. कपूर जी कोठारी, रतलाम
18. प्रभा जी पटवा, रतलाम
19. अर्चना जी मुणत, रतलाम
20. वीणा जी ढ़ाबरिया, रतलाम
21. सोनम जी ढ़ाबरिया, रतलाम
22. पुखराज जी मुणत, रतलाम
23. प्रीति जी मुणत, रतलाम
24. आशा जी मालवी, रतलाम
25. सुनीता जी नागौरी, रतलाम
26. रचना जी गादिया, रतलाम
27. सपना जी छाजेड़, रतलाम
28. दिया जी पिरोदिया, रतलाम
29. मोनिका जी बोहरा, रतलाम
30. आनंद जी बोहरा, रतलाम
31. अशोक जी गांधी, रतलाम
32. सुरेश जी मालवी, रतलाम
33. कुशल जी गांधी, रतलाम
34. सुचिला जी श्री श्रीमाल, रतलाम
35. अंगूरबाला जी जैन, इंदौर
36. रुचिका जी भाणावत, इंदौर
37. हंसा जी पारख, इंदौर
38. अर्चना जी लोढ़ा, अंजड़
39. लीना जी पंवार, कानवन
40. तनय जी पंवार, कानवन
41. निर्मला जी नवलखा, जावरा
42. अलका जी सेठिया, जावरा
43. ममता जी सेठिया, जावरा
44. अर्चना जी काँठेड़, जावरा
45. किरण जी चोरड़िया, जावरा
46. आशा जी भंडारी, जावरा
47. रचना जी चौधरी, मंदसौर
48. संतोष जी नलवाया, मंदसौर
49. मेधा जी पामेचा, पिपलिया मंडी
50. रीना जी भंडारी, पिपलिया मंडी
51. सुनीता जी बंबोरिया, पिपलिया मंडी
52. ललित जी बंबोरिया, पिपलिया मंडी

53. विधा जी भंडारी, पिपलिया मंडी
54. भावना जी वया, नीमच
55. सुरेश जी नांदेचा, खाचरौद
56. कमलेश जी मालू, प्रतापगढ़
57. अनिता जी श्रीश्रीमाल, बिरमावल
58. अल्का जी मालू, बड़ीसादड़ी
59. तिलोकचंद जी सुराना, इंदौर
60. रानी जी सुराना, इंदौर
61. नवल जी गांधी, रतलाम
62. शांति देवी कटारिया, रतलाम
63. मंजू जी दीन, निम्बाहेड़ा
64. मंजू देवी लोढ़ा, असावरा

प्रेषक- कमल पिरोदिया

नगरी में

1. मोहनी बाई भूरावत, भंडारा
2. प्रकाश बाई भूरावत, भंडारा
3. नेहा जी कोटड़िया, खैरागढ़
4. मीना जी संचेती, भानपुरी
5. कंचन जी श्रीश्रीमाल, बालोद
6. विमला जी ओस्तवाल, कलंगपुर
7. जया जी देशलहरा, गुंडरदेही
8. बसंती जी चौरड़िया, रायपुर
9. पुष्पा जी बुरड़, धमतरी
10. सीमा जी कोटड़िया, धमतरी
11. कंचन जी बरड़िया, धमतरी
12. सीमा जी चोपड़ा, कांकेर
13. पुष्पा जी गोलछा, कांकेर
14. सुनीता जी जैन, कांकेर
15. मधु जी नाहटा, नगरी
16. किरण जी नाहटा, नगरी
17. इंद्रा जी नाहटा, नगरी
18. विनय जी नाहटा, नगरी
19. आशा जी बंब, नगरी
20. ऊषा जी नाहटा, नगरी
21. धन्नी बाई गोलछा, नगरी
22. मीनल जी ढोलकिया, खरियार रोड
23. विकास जी लूनावत, दुर्ग
24. समता जी लूनावत, दुर्ग
25. नितिन जी लूनावत, दुर्ग
26. सोनल जी लूनावत, दुर्ग
27. सीमा जी गोलछा, राजनांदगाँव
28. लीला जी जैन, दुर्ग
29. सीमा जी पारख, दुर्ग
30. सुमन जी बोथरा, दुर्ग
31. संध्या जी बोथरा, दुर्ग
32. धर्मपाल जी बोथरा, दुर्ग
33. राखी जी साँखला, दुर्ग
34. ज्योति जी साँखला, दुर्ग
35. चंचल जी साँखला, दुर्ग
36. नीरू जी साँखला, दुर्ग
37. वीणा जी श्रीश्रीमाल, दुर्ग
38. सूरज देवी सुराना, राजनांदगाँव
39. नथमल जी गिड़िया, राजनांदगाँव
40. सुषमा जी गिड़िया, राजनांदगाँव
41. निर्मला देवी बोहरा, केशकाल
42. ऊषा जी कटारिया, केशकाल
43. कंती बाई गांधी, आरंडी
44. मीनल जी ढोलकिया, खरियार रोड
45. ऊषा देवी कोठारी, दुर्ग
46. किरण देवी चोपड़ा, रायपुर

प्रेषक - वर्धमान नाहटा

विविध भेंट मार्फत

31 मार्च 2025 की शेष भेंट

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- ज्ञान कँवर जी ओसतवाल, ब्यावर
2,20,000/- सुधीर जी पारसमल जी जैन, पिपलिया मंडी
1,00,000/- कंवरलाल जी देशलहरा, गुंडरदेही

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

7,00,000/- छाऊ देवी दुल्हराज जी रांका चैरिटेबल ट्रस्ट, जयनगर/मुंबई

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

समता भवन, पुणे

5,00,000/- घेवरचंद केशरीचंद गोलछा ट्रस्ट, गुवाहाटी/नोखा

समता भवन, जयपुर

2,51,000/- नाथूलाल जी रूपेंद्र जी जैन, सवाई माधोपुर
2,50,000/- लोकेश कुमार जी जैन, सवाई माधोपुर

समता भवन, लूणकरणसर

2,00,000/- हनुमानमल जी भूरा, लूणकरणसर/देशनोक
1,30,000/- विनोद कुमार जी दोसी, गंगाशहर
51,000/- जयचंदलाल जी बाबूलाल जी भूरा, लूणकरणसर
51,000/- छगनलाल जी कन्हैयालाल जी बैद, देशनोक
45,000/- मेघराज जी लालाणी, गंगाशहर
40,000/- गोरधनलाल जी बरड़िया, लूणकरणसर

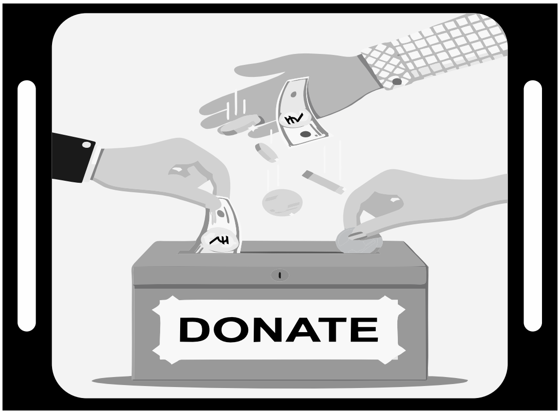

25,000/- आसकरण जी बरड़िया, लूणकरणसर
25,000/- सेंसकरण जी राखेचा, लूणकरणसर
21,000/- चंपालाल जी करणीदान जी भूरा, देशनोक
21,000/- मांगीलाल जी अशोक जी भूरा, देशनोक
11,000/- शांतिलाल जी सिंघी, कालू

दानपेटी योजना

77,306/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, राजनांदगाँव
60,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नंदुरबार
36,000/- महेंद्र जी मुकीम, रायपुर
21,000/- दिलीप कुमार जी खारीवाल, भीलवाड़ा
18,200/- किशनचंद जी गौतमचंद जी कमलेश जी कोटड़िया, धमतरी
17,100/- शकुन देवी नाहटा, नगरी
15,000/- समता भवन, सूरत
15,000/- नागराज जी गुणधर, संबलपुर
14,000/- मांगीलाल जी सुनील जी पारख, रायपुर
11,000/- कुशल जी खाब्या, इंदौर
11,000/- विजय जी कातेला, दिल्ली
11,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, कूचबिहार
11,000/- अशोक जी शाह, अहमदाबाद
11,000/- अर्चना जी मेहता, इंदौर
10,200/- स्वरूपचंद जी महेश जी चाँद जी कोटड़िया, धमतरी
8,720/- पुखराज जी नीलेश जी चोरड़िया, रायपुर
8,700/- गौतमचंद जी रूपेश जी चोरड़िया, रायपुर
8,001/- डालचंद जी श्रेयांश जी बाफना, रायपुर

7,500/– पूनमचंद जी बाघमार, डौंडी
7,100/– खेमचंद जी चोपड़ा, नगरी
7,100/– मोहनलाल जी हर्ष जी नाहटा, नगरी
7,100/– मनोहरलाल जी अनिल जी कटारिया, इंदौर
7,100/– पुखराज जी धनराज जी बोथरा, अहमदाबाद
7,100/– गेंदमल जी लोढ़ा, डौंडी लोहारा
7,000/– विकास जी दिव्यांश जी नाहटा, रायपुर
7,000/– राजकरण जी मदनलाल जी बरड़िया, अहमदाबाद
6,350/– संजय जी वैभव जी सुराणा, राजनांदगाँव
6,100/– निर्मल जी वर्धमान जी नाहटा, नगरी
6,000/– रेशम बाई चोपड़ा, रायपुर
5,650/– पारस जी बोहरा, इंदौर
5,501/– अमरचंद जी बाफना, अर्जुंदा
5,500/– सुनीता जी ज्ञानचंद जी रिंकेश जी बोहरा, धमतरी
5,400/– मिलापचंद जी पूनमचंद जी बोथरा, सूरत
5,200/– संपतलाल जी कवाड़, बालांगीर
5,101/– प्रदीप जी आंचलिया, इंदौर
5,100/– महेंद्र जी सुमित जी पटवा, हिंदमोटर
5,100/– निर्मला जी शकुंतला जी पिछोलिया, इंदौर
5,100/– सलाभ जी डागा, अहमदाबाद
5,100/– समता महिला मंडल, इंदौर
5,100/– उदयराज जी पारख, रायपुर
5,100/– देवेंद्रलाल जी बंब, उज्जैन
5,100/– जवारीमल जी राजेश जी नाहटा, सांकरा
5,100/– जवरीलाल जी हितेश जी कवाड़, कांटाभंगी
5,100/– गजेंद्र जी सूर्या, इंदौर
5,100/– लक्ष्मीलाल जी बाबूलाल जी देसरला, सचीन
5,100/– ललित जी यश जी चोपड़ा, रायपुर
5,000/– धर्मीचंद जी कन्हैयालाल जी नंदावत, भीलवाड़ा
5,000/– बहादुरचंद जी मुणोत, जोधपुर
5,000/– कोमलचंद जी सतीश जी छिंगावत, इंदौर
5,000/– महेंद्र जी शोभा जी संघवी, इंदौर
5,000/– विकास जी अभय जी सोनी, खरियार रोड
5,000/– निर्मला जी अभय जी सांड, इंदौर
5,000/– पुखराज जी पंकज जी यश जी बोथरा, जगदलपुर
5,000/– शैलेश जी मेहता, अहमदाबाद
5,000/– साधना जी मेहता, इंदौर
5,000/– सुचिता जी कांकरेचा, इंदौर
5,000/– वीणा जी सुनील जी राखेचा, इंदौर
5,000/– नरेश जी जवाहर जी बैद, राजनांदगाँव
5,000/– अंशु जी जैन, इंदौर
5,000/– अनिल कुमार जी जयश्री जी दुग्गड़, इंदौर
5,000/– अजय जी विजय जी प्रेमचंद जी चोरड़िया, इंदौर
4,500/– मूलचंद जी मुकेश जी छाजेड़, साजा
4,500/– शरद जी सुशीला जी कोठारी, इंदौर
4,473/– राजेश जी कीर्ति जी रिंकल जी सांखला, धमतरी
4,407/– पारस जी कटारिया, उज्जैन
4,250/– खेमचंद जी छाजेड़, धमधा
4,233/– वसुमती जी सूर्या, उज्जैन
4,200/– कमला देवी चोपड़ा, रायपुर
4,200/– मोहनलाल जी बोथरा, अहमदाबाद
4,200/– अनिल कुमार जी कामिनी जी जैन, इंदौर
4,162/– सुनील कुमार जी सिद्धार्थ जी भंडारी, इंदौर
4,100/– ज्ञानचंद जी बाघमार, डौंडी
4,044/– राजमल जी कोटड़िया, महासमुंद
4,040/– प्रकाशचंद जी बाघमार, डौंडी
4,000/– महावीर जी कोमल सिंह जी बाफना, सूरत
4,000/– मुकेश जी सुषमा जी नाहर, इंदौर
4,000/– सतीश जी पावेचा, इंदौर
3,760/– ईश्वी जी डूंगरवाल, इंदौर
3,650/– मोहनलाल जी बाफना, रायपुर
3,610/– मनोज कुमार जी प्रशांत जी डोसी, सरोना
3,608/– संदीप जी मुकीम, रायपुर
3,600/– प्रवेश जी विकास जी बैद, बालाघाट
3,600/– पूनमचंद जी दिनेश जी कवाड़, तरपोंगी
3,600/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, मनावर
3,500/– गिरीश कुमार जी नरेंद्र जी बुरड़, रायपुर
3,500/– हेमंत जी भालावत, भीलवाड़ा

3,500/– पारस जी स्नेहा जी सांड, इंदौर
3,500/– अरुण कुमार जी मयूर जी, रायपुर
3,500/– सुगनचंद जी नवरत जी चोरड़िया, जोधपुर
3,470/– अशोक जी धारीवाल, रायपुर
3,451/– पुखराज जी रतन जी पाशवान, रायपुर
3,351/– रावलमल जी ललित जी नाहटा, सांकरा
3,350/– मोतीलाल जी ललित जी सेठिया, दल्ली राजहरा
3,269/– जय कुमार जी जयंत जी कोटड़िया, रायपुर
3,250/– अजय जी अमरचंद जी कांकरिया, सूरत
3,230/– भगवान जी मनीष जी अंशू जी लोढ़ा, पाली
3,200/– कोमलचंद जी छिंगावत, इंदौर
3,200/– सुरेश जी दिलीप जी चोरड़िया, बालाघाट
3,150/– मदनलाल जी नीतिचंद जी जैन, धमधा
3,105/– इंदु बाई गुलाबचंद जी बैद, रायपुर
3,101/– अमृतलाल जी हर्ष जी छाजेड़, साजा

3,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रकाशचंद जी गोलछा, बीरगुड़ी, प्रेम सिंह जी सेठिया, भीलवाड़ा, प्रेमचंद जी भंसाली, डौंडी लोहारा, कमलचंद जी नाहटा, नगरी, कांतिलाल जी नाहटा, नगरी, महावीर जी ऋषभ जी जैन, बिरझापुर, महेंद्र जी कन्हैयालाल जी नाहर, नीमच, किशोरचंद जी सांखला, रायपुर, रिखबचंद जी दोसी, डौंडी लोहारा, विकास जी ललवानी, अहमदाबाद, विजय जी कटारिया, रायपुर, विनोद जी बोहरा, भीलवाड़ा, जितेंद्र जी कोठारी, साजा, हुक्मीचंद जी राहुल जी राँका, अहमदाबाद, भीखमचंद जी चोपड़ा, उदयपुर, बंशीवाला जी मनोज, खरियार रोड, राजकरण जी बच्छावत, अहमदाबाद, राजेंद्र जी बोहरा, इंदौर, राजेश जी बोहरा, अहमदाबाद, रेवंतमल जी बेताला, अहमदाबाद, शांति देवी वाधवानी, नागरी, शांतिलाल जी दिलीप जी बोथरा, अहमदाबाद, सेठिया परिवार, कटक, उदयचंद जी अशोक जी डागा, अहमदाबाद, उत्तम जी हेमंत जी बैद, रायपुर, नाहरमल जी बंबकी, वलसाड, अमित जी भंसाली, डौंडी लोहारा, अशोक जी मनीष जी अमित जी जैन, इंदौर, गौतमचंद जी कमलेश जी चोपड़ा, गंडई, गुप्तदान, राजनांदगाँव

3,000/– हेमंत जी अभिषेक जी गोलछा, कांकेर
3,000/– अशोक जी बोलिया, भीलवाड़ा
3,000/– अशोक जी कोठारी, ब्यावर
2,990/– सौरभ जी कोठारी, उज्जैन
2,800/– राजूमल जी बरड़िया, हिंदमोटर
2,800/– सुरेशचंद जी खुशालचंद जी ओस्तवाल, मोरतलाई
2,768/– हेमंत जी अल्पना जी ललवानी, इंदौर
2,750/– संतोष जी ढेलड़िया, डौंडी
2,700/– नीलम जी बैद, राजनांदगाँव
2,600/– सुशील जी चौरड़िया, रायपुर
2,551/– मदनलाल जी महावीर जी पारख, राजनांदगाँव
2,550/– उमेश जी सेठिया, अहमदाबाद
2,501/– महेंद्र जी प्रणय जी गोलछा, रायपुर

2,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– धर्मचंद जी नंदावत, भीलवाड़ा, बसंतलाल जी पारख, इंदौर, प्रतीक जी चोरड़िया, महासमुंद, कमलचंद जी नरेश जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव, विजय जी जैन, धमधा, पृथ्वीराज जी धर्मचंद जी बरड़िया, खरियार रोड, पारसमल जी विजया जी देशलहरा, इंदौर, रावलमल जी बाफना, रायपुर, डालचंद जी राजकुमार जी बाफना, रायपुर, ताराचंद जी बोहरा, ब्यावर, जयप्रकाश जी पारख, केसला, अशोक जी दुग्गड़, जोधपुर

2,465/– सरदारमल जी मनीष जी सेठिया, उज्जैन
2,402/– निर्मल जी गोलेछा, ब्यावर,
2,400/– अनीश जी प्रशांत जी कांकरिया, बालाघाट
2,280/– सागरमल जी कोटेचा, ब्यावर
2,250/– दिलीप जी डूंगरवाल, इंदौर
2,232/– विजेंद्र जी बालचंद जी संचेती, मोरतलाई
2,230/– जितेंद्र जी प्रथम जी बाफना,अहिवारा
2,200/– रिखबचंद जी कोठारी, अहमदाबाद
2,200/– गणेश जी मयंक जी संचेती, बालाघाट
2,200/– वीरेंद्र जी पुगलिया, भिलाई,

2,195/– सुशीला जी रवि जी दुगड़, पाली
2,190/– निर्मल जी खींवसरा, ब्यावर
2,151/– रमेश जी टाटिया, अर्जुनी
2,121/– राजेश जी वैभव जी सांखला, बीजा

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– योगेश जी मेहता, उज्जैन, कनकलाल जी पावेचा, उज्जैन, प्रकाशचंद जी रायसोनी, खरियार रोड, गुप्तदान, खरियार रोड, प्रकाशचंद जी राजेश जी दोसी, सरोना, नरेश जी संजय जी गोलछा, सरोना, प्रकाश जी वैभव जी लसोड़, पाली, प्रांजल जी पारख, अतरिया बाजार, सतीश जी पारख, अतरिया बाजार, बालचंद जी अशोक जी संचेती, बालाघाट, प्रेमचंद जी जैन, धमधा, प्रेमलता जी योगेश जी गोलछा, बिरगुड़ी, कमला बाई नाहर, चारामा, कुशल जी ऋषभ जी मूथा, बालाघाट, मंगतराम जी अनिल जी जैन, बगुमुंडा, महेंद्र जी दक, कानोड़, मदनलाल जी नाहर, जगदलपुर, विमल जी बोथरा, दिल्ली, विजय जी गोलछा, नर्मदा, विनोद जी जैन, धमधा, नितिन जी अजीत जी सुराणा, जोधपुर, लीलमचंद जी छाजेड़, जोधपुर, नितेश जी धर्मेश जी आछा, चरौदा, हंसराज जी जैन, पांचोड़ी, पृथ्वीराज जी जारोली, कानोड़, पारसमल जी छाजेड़, धमधा, पवन जी ढेढिया, ब्यावर, पूनमचंद राजकुमार जी कवाड़, तरपोंगी, पूनमचंद जी बरड़िया, महासमुंद, राकेश जी नाहटा, संकारा, रोशनलाल जी अमित जी पितलिया, नीमच, रौनक जी उज्ज्वल जी गोलछा, हिंदमोटर, राजमल जी कोठारी, वलसाड, सोनी बाई नाहर, चारामा, सुरेश जी मुर्ड़िया, कानोड़, सुदर्शनलाल जी जैन, बगुमुंडा, उमेश जी मेहता, भाटापारा, उत्तमचंद जी सौरभ जी संखलेचा, गंडई, लालचंद जी अनिल जी, गंडई, आशीष जी पारख, केसला, गुप्तदान, गुलाबचंद जी नरेंद्र जी सोनी, लखनपुरी, ललित जी चोपड़ा, थानखम्हरिया, **अहमदाबाद से–** धनराज जी सेठिया, प्रकाश जी आंचलिया, कन्हैयालाल जी लोढ़ा, किरणचंद जी लालाणी, जितेश जी श्रीश्रीमाल, निर्मल जी बोथरा, हुलासमल जी राजेश जी लालाणी, राजेंद्र जी खींचा, राजेद्र जी भंडारी, ज्ञानचंद जी चोरड़िया, सुमित जी डागा, सुरेंद्र जी कोठारी, सुरेंद्र जी संचेती, सुरेश जी शांतनु जी चोरड़िया, सुरेंद्र जी भूरा, उमेश जी मेहता, उत्तमचंद जी भूरा, अरुण जी खुरड़िया, अनिल जी चोरड़िया, अशोक जी बोथरा, **रायपुर से–** धर्मेंद्र जी सेठिया, मोनालिसा जी लोकेश जी डागा, विजयराज जी गौतम जी कोटड़िया, भंवरलाल जी सतीश जी सांखला, पुखराज जी पारख, पूजा जी नवदीप जी पारख, प्रफुल्ल जी प्रतीक जी देशलहरा, महेंद्र जी चोरड़िया, राजेंद्र जी धारीवाल, राजेश जी युवराज जी श्रीश्रीमाल, शालिभद्र जी विवेक जी धारीवाल, सुशीला बाई कमलेश जी धाड़ीवाल, उत्तमचंद जी सेठिया, उत्तमचंद जी चोपड़ा, चंदन जी सुराणा, जेठमल जी अमित जी सेठिया, नंदकिशोर जी सुराणा, नरेंद्र जी भरत जी शीतल जी सुराणा, गौतमचंद जी निखिल जी खटोड़, **डोंगरगाँव से–** झूमरलाल जी अशोक जी लोढ़ा, इंद्रचंद जी तेजश जी लोढ़ा, रानीदान जी श्रीश्रीमाल, शीतल कुमार जी अक्षत जी लोढ़ा, संदीप जी जिनेश जी लोढ़ा, स्वरूपचंद जी श्रीश्रीमाल, अजय जी विजय जी बोहरा, **अहिवारा से–** धर्मचंद जी रौनक जी बाफना, रमेश जी मनन जी बाफना, संतोष जी बाफना, चंचल जी बाफना, **लुधियाना से–** कमलचंद जी सिपानी, मनोज जी पवन जी छाजेड़, दिलीप जी प्रवीन जी चोरड़िया, निर्मल जी मारोटी, हीराचंद जी गौतम जी गुलगुलिया, रणजीत जी बोथरा, शांतिलाल जी सेठिया, शारदा देवी डागा, गणेश जी लूणावत, **दल्ली राजहरा से–** विनोद जी वैभव जी गुणधर, पारसमल जी पंकज जी बाँठिया, ज्ञानचंद जी प्रदीप जी गुणधर, संजय जी सुभाष जी बाँठिया, अमरचंद जी अमृत कुमार जी गुणधर, अशोक जी प्रदीप जी खटोड़, अशोक जी अभिषेक जी गुणधर, **इंदौर से–** मेघ कुमार जी ललवानी, मनीष जी सुजानमल जी कटारिया, पंकज जी पिंकी जी सुराणा, सुभाष जी अभिषेक जी भटेवरा, सुनीत जी संजू जी पींचा, सुनील जी कोठारी, ऊषा जी ललवानी, वीरेंद्र जी आकाश जी भंडारी, **सूरत से–** प्रवीण जी जवाहरलाल जी गुलगुलिया, कैलाश जी भंवरीलाल जी बैद, माणकचंद

जी चुन्नीलाल जी दफ्तरी, भंवरलाल जी सोहनलाल जी देशवाल, राजेंद्र जी पारसचंद जी सेठिया, **भीलवाड़ा से-** बाबूलाल जी डूंगरवाल, चिराग ट्रेवल्स एजेंसी, पूनमचंद जी भूरा, सुरेंद्र जी सुभाष जी संकलेचा, गौतमचंद जी शुभम जी कोठारी, **सीतामऊ से-** बारबा बाई बोहरा, राजकुमारी जी सागरमल जी जैन, सुरेश जी बाबूलाल जी देसहड़ा, अरविंद जी उत्सव जी जैन, **डौंडी लोहारा से-** विनोद जी दोसी, हस्तीमल जी सांखला, फूलचंद जी दोषी, **संबलपुर से-** प्रमोद जी चोपड़ा, प्रदीपचंद जी चोपड़ा, संदीप जी सुधीर जी गुणधर, **अर्जुनी से-** ज्ञानचंद जी टाटिया, शैलेश जी नीलेश जी टाटिया, अरुण जी टाटिया, **नगरी से-** सुभाषचंद जी लोकेश जी नाहटा, आशा जी आशीष जी बंब, मदनलाल जी राकेश जी गोलछा

2,033/– राजेंद्र जी मूथा, कुम्हारी

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रशांत जी पींचा, धमधा, निर्मलचंद जी जैन, धमधा, कमल जी खींचा, ब्यावर, महावीर जी राँका, ब्यावर, महेंद्र जी बाफना, अहिवारा, विजेंद्र जी नाहर, डौंडी, राजेंद्र जी नाहर, डौंडी, भरत जी जैन, बेंगलुरु, राकेश जी रितिक जी तिवारी, जगदलपुर, उर्मिला जी कांकरिया, इंदौर, आनंदीलाल जी गांग, इंदौर, गंभीरमल जी बाफना, मानपुर, गुप्तदान, **सूरत से-** इंद्रचंद जी माणकचंद जी डागा, प्रकाशचंद जी धनराज जी बोथरा, प्रमोद जी नथमल जी गोलछा, प्रीति जी राकेश जी सुराणा, प्रदीप जी नथमल जी गोलछा, बच्छराज जी रेखचंद जी सुराणा, प्रेमलता जी मंगेश जी सामसुखा, प्रेमलता जी सुभाष जी पगारिया, करण जी गौतम जी देशवाल, कोमान सिंह जी बाबूलाल जी बाफना (लब्धि साड़ी), कोमल सिंह जी बाफना, मंजुला जी संजय जी बाफना, मंगेश जी रामलाल जी सामसुखा, ममता जी सामसुखा, महेश जी बजरंगलाल जी सुराणा, मीना जी प्रकाशचंद जी बोथरा, मदनलाल जी धनराज जी बोथरा, मुकुल जी नारायणचंद जी राखेचा, मनोज जी लूणकरण जी लूणावत, पिंटू जी नेमीचंद जी सेठिया, दिव्या जी मुकेश जी सुराणा, विपिन जी राजेंद्र जी मोगरा, विक्रम जी महावीर जी बाफना, विनोद जी सुदीप जी पटवा, निर्मल जी शांतिलाल जी पगारिया, भूमि जी महावीर जी बाफना, रवि जी मंगेश जी सामसुखा, रीना जी शुभम जी सरूपरिया, राहुल जी प्रदीप जी गोलेछा, रौनक जी मदनलाल जी बोथरा, राजेश जी लूणकरण जी लूणावत, रजनी जी मदनलाल जी बोथरा, शुभम जी तेजमल जी सरूपरिया, संतोष जी जेठमल जी बाँठिया, संजय जी कोमल सिंह जी बाफना, सीमा जी हुलासचंद जी ललवानी, सुदीप जी संपतलाल जी पटवा, सुनीता जी महावीर जी बाफना, छवि जी महावीर जी बाफना, दीपक जी हुलासचंद जी ललवानी, देशना जी संजय जी बाफना, चंदा देवी कोमल सिंह जी बाफना, चंदा देवी ज्ञानचंद जी सुराणा, जय कुमार जी इंद्रचंद जी डागा, जितेंद्र जी लूणकरण जी लूणावत, नीरज जी निर्मल जी पगारिया, नरेंद्र जी प्रथमराम जी सिंघी, नरेंद्र जी संपतलाल जी सेठिया, अमित जी निर्मल जी सेठिया, अमित जी अशोक जी कांकरिया, अनिल जी पुखराज जी मेहता, अशोक जी शंकरलाल जी मांडोत, अशोक जी अमरचंद जी कांकरिया, गौरव जी सुभाष जी पगारिया, गौतम जी सोहनलाल जी देशवाल, लब्धि जी संजय जी बाफना, लूणकरण जी लूणावत, सूरत, **अहमदाबाद से-** चंदनमल जी मोतीलाल जी बरड़िया, श्रेणिक जी चोरड़िया, सुभाष जी बरड़िया, चैनरूप जी बरड़िया, जेठमल जी मोतीलाल जी बरड़िया

1,920/– विकास जी सूर्या, उज्जैन

1,900/– सुशील जी गोलचंद जी सुराणा, सूरत

1,900/– गौतमचंद जी बुरड़, ब्यावर

1,900/– गोलचंद जी हस्तीमल जी सुराणा, सूरत

1,881/– मनीष जी उगमचंद जी चोपड़ा, सूरत

1,850/– बाबूलाल जी बाबेल, ब्यावर

1,821/– भीखी बाई सोनराज जी पींचा, महासमुंद

1,820/– ज्ञानचंद जी बाँठिया, ब्यावर

1,800/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– धीरज जी नेमीचंद जी दलाल, अमरोली, कन्हैयालाल जी बाघमार, डौंडी, सतीश जी प्राणेश जी चोरड़िया, बालाघाट, ऊषा

जी डूंगरवाल, इंदौर, छवि जी धीरज जी दलाल, अमरोली, देवेंद्र जी समकित जी धोका, बालाघाट, जितेंद्र जी अमन जी बैद, बालाघाट

1,790/– जबरचंद जी कोठारी, ब्यावर
1,751/– सुनील जी आशा जी मेहता, उज्जैन
1,724/– मोतीलाल जी तरुण जी सांखला, रायपुर
1,715/– नरेंद्र जी चौधरी, इंदौर
1,705/– मनोज जी मालू, महासमुंद
1,701/– घेवरलाल जी टुकलिया, भीलवाड़ा
1,700/– कबीर जी मदनलाल जी बोथरा, सूरत
1,700/– मांगीलाल जी संतोष जी खटोड़, रायपुर
1,700/– श्रीचंद जी सांखला, जोधपुर
1,700/– अशोक जी ईश्वरचंद जी भूरा, सूरत
1,651/– अशोक जी मांगीलाल जी बाफना, कैलाशनगर
1,650/– राकेश जी दिनेश जी सांडेचा, रायपुर
1,650/– आशीष जी बाघमार, डौंडी
1,650/– लेफ्टिनेंट अनिल जी रोशन जी गोलछा, तरपोंगी
1,640/– राजकुमार जी घेवरचंद जी कांकरिया, सूरत
1,630/– सोहनलाल जी वीणा जी नाहर, ब्यावर
1,625/– सरदारमल जी सुभाष जी गांधी, धमतरी
1,623/– संजय जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर
1,600/– मूलचंद जी गौतम जी छाजेड़, साजा
1,600/– पारसमल जी पन्ना देवी कुकड़ा, भीलवाड़ा
1,550/– हुलासचंद जी रेखचंद जी सुराणा, सूरत
1,550/– सरोज जी हुलासचंद जी सुराणा, सूरत
1,550/– सोनल जी सुमित जी चोपड़ा, सूरत
1,550/– सुमित जी ऋषभराज जी चोपड़ा, सूरत
1,537/– गुप्तदान, सूरत
1,531/– महावीर जी पिछोलिया, इंदौर
1,511/– विजयलक्ष्मी जी सचिन जी कोटड़िया, रायपुर

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– धर्मीचंद जी विकास जी रायसोनी, अहिवारा, प्रीतम जी टाटिया, मोवा, मनोज जी बोथरा, उज्जैन, अर्मतलाल जी आंचलिया, उज्जैन, मूलचंद जी दीपेश जी लोढ़ा, धमतरी, सिरेमल जी भंवर जी छाजेड़, धमतरी, विमलचंद जी अक्षय जी विपुल जी लूणावत, अहमदाबाद, देवचंद जी नवीन जी सुराणा, अहमदाबाद, विनयचंद जी बंट, ब्यावर, सुभाष जी कोठारी, ब्यावर, भंवरलाल जी टाटिया, अर्जुनी, भागचंद जी मालू, केशकाल, जवरीलाल जी मालू, केशकाल, रवि जी पुखराज जी गांधी, अमरोली, राजू भाई ढोलकिया, खरियार रोड, ज्ञानचंद जी लोढ़ा, डौंडी, संपतराज जी बालचंद जी श्रीश्रीमाल, कैलाशनगर, सुनील जी चोपड़ा, डौंडी लोहारा, उर्मिला देवी दिलीप जी गोलछा, बिरगुड़ी, चंद्रेश जी जैन, चंपालाल जी महावीर जी गुणधर, दल्ली राजहरा, जीवनलाल जी जितेंद्र जी नाहटा, नगरी, नीलमचंद जी पारख, अर्जुंदा, अभय जी राजेश जी बाफना, अर्जुंदा, नानेश ट्रेडिंग कंपनी, दिल्ली, आसकरण जी संचेती, दिल्ली, अमरचंद जी किशोर जी बाघरेचा, साजा, लक्सीचंद जी मुकेश जी बोहरा, साजा, अमरचंद जी विकास जी गोलछा, जगदलपुर, अनिल जी सेठ, महासमुंद, **सूरत से–** मनीष जी नवरतनमल जी दक, कियांश जी अंशुल जी बोथरा, भंवरलाल जी मंगलचंद जी डागा, भीकमचंद जी झंवरलाल जी बोथरा, भव्य जी अजित जी राखेचा, सविता जी अजीत जी राखेचा, सरला जी अरुण जी राखेचा, सुनील जी मदन सिंह जी दौंडी, उमेश जी सज्जनराज जी मेहता, दीपक जी हुलासचंद जी सुराणा, अरुण नारायणचंद जी राखेचा, अनिल जी घेवरचंद जी कांकरिया, आर्यन जी अंकुर जी बोथरा, **रायपुर से–** प्रसन्नचंद जी सुराणा, विकास जी दुग्गड़, विजय जी मुकीम, रमेश जी रितेश जी बागरेचा, शांतिलाल जी बाफना, दुलीचंद जी उमेश जी कवाड़, **भीलवाड़ा से–** संपतलाल जी कछारा, सागरमल जी दक, सुनील जी प्रीति जी कुकड़ा, गौतम जी रमेश जी शुभम जी कोठारी, **छुईखदान से–** शांतिलाल जी सांखला, ज्ञानचंद जी सांखला, सुनील जी गोलछा, अमृतलाल जी गुलाबचंद जी सांखला, **इंदौर से–** मनोरमा जी डूंगरवाल, इंदौर, शानू जी विनय जी मूथा, इंदौर, जसवंत जी वोरा, इंदौर, **राजनांदगाँव से–** गौतम जी पारख, सुषनचंद जी सांखला,

नथमल जी अजीत जी गिड़िया,
1,494/- विशाल जी गुणधर, डोंडी
1,466/- सुनील जी पाबूदान जी लूणावत, सूरत
1,460/- पन्नालाल जी महेंद्र जी कोठारी, सूरत
1,450/- पारसमल जी खेतपालिया, ब्यावर
1,450/- राजेश जी शुभम जी चोपड़ा, थानखम्हरिया
1,427/- संदीप जी नवरतनमल जी कांकरिया, सूरत
1,420/- स्वीटा जी सामसुखा, सूरत
1,406/- जितेंद्र जी चंदनमल जी बोथरा, सूरत
1,400/- संपतलाल जी ऋषि जी कवाड़, धमतरी
1,400/- संतोष जी मनीष जी बाफना, धमतरी
1,400/- नेमीचंद जी गिड़िया
1,365/- बनेचंद जी गिड़िया, राजनांदगाँव
1,331/- उत्तमचंद जी भूपेंद्र जी चोरड़िया, कुम्हारी
1,320/- राजेश जी मोहनलाल जी मेहता, सूरत
1,310/- रेखा जी नरेंद्र जी सेठिया, सूरत
1,308/- पीयूष जी राजेश जी लूणावत, सूरत
1,306/- राजेश जी अचत जी भंसाली, रायपुर
1,301/- राजकुमार जी ईश्वरचंद जी भूरा, सूरत

1,300/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विजय जी गुणधर, डौंडी, निकुंज जी अशोक जी मांडोत, सूरत, प्यारेलाल जी सोहनलाल जी गांधी, सूरत, पुष्पेंद्र जी नरेंद्र सिंह जी बूनलिया, सूरत, गुलाबचंद जी कुशल जी नाहटा, रायपुर

1,294/- दिलीप जी पूनमचंद जी बोथरा, सूरत
1,270/- हेमचंद जी आशीष जी चोरड़िया, रायपुर
1,270/- गुलाबचंद जी बाफना
1,260/- ज्योति जी अमित जी कांकरिया, सूरत
1,251/- कमलचंद जी आनंद जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
1,251/- मनसुखलाल जी सूर्या, उज्जैन
1,250/- महेंद्र जी गुलाबचंद जी लोढ़ा, ब्यावर
1,250/- वरुण जी अशोक जी कांकरिया, सूरत
1,250/- जस जी अजित जी राखेचा, सूरत
1,244/- प्रदीप जी जतनलाल जी सुराणा, सूरत
1,240/- निर्मल जी बरड़िया, महासमुंद
1,230/- मोतीलाल जी गोलछा, जगदलपुर
1,221/- पीयूष जी हंसमुख
1,220/- शांतिलाल जी नाहटा, संकरा
1,213/- मदनलाल जी फतेह जी मारू, सूरत
1,212/- महावीर जी हुक्मीचंद जी सांड, सूरत
1,201/- शेखरचंद जी छल्लाणी, ब्यावर

1,200/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विजय जी चिराग जी चोरड़िया, रायपुर, मनोरमा जी धनराज जी बैद, रायपुर, प्रभात जी कांकरिया, राजनांदगाँव, अशोक जी आकाश जी पारख, राजनांदगाँव, माणकचंद जी गुणधर, डौंडी, प्रकाश जी बोथरा, उज्जैन, **बालाघाट से-** प्रवीण जी प्रतीश जी चोरड़िया, मनीष जी चोरड़िया, किरण बाई भंवरलाल जी संचेती, सरिता जी मनीषा जी कांकरिया, डालचंद जी चोरड़िया, तरुण जी पारख, जयचंद जी पीयूष जी चोरड़िया, जयंत जी रितेश जी बैद, नम्रता जी पंकज जी कांकरिया, **सूरत से-** पारस जी रोशनलाल जी कोठारी, राजेश जी लालचंद जी गोखरू, रेणु जी मुकुल जी राखेचा, सपना जी विपिन जी मोगरा, दीपाली जी दीपक जी ललवानी, नवरतनमल जी डालचंद जी भूरा, अजय जी गोविंदराम जी बोथरा

1,158/- इंद्रा बाई धाड़ीवाल, रायपुर
1,151/- श्रेणिक जी केवलचंद जी बच्छावत, सूरत
1,150/- छगनलाल जी नाहटा, राजनांदगाँव
1,150/- सुभद्रा जी मेघराज जी बैद, सूरत
1,150/- अशोक जी भूरा, भीलवाड़ा
1,150/- ललित जी टाटिया, अर्जुनी
1,130/- सिद्धार्थ जी बच्छराज जी सुराणा, सूरत
1,120/- मुकेश जी अभिषेक जी संदेश जी श्रीश्रीमाल, पाली
1,115/- टीकमचंद जी श्रेयांश जी पारख, राजनांदगाँव
1,110/- भीम सिंह जी आनंद जी मेहता, पाली
1,110/- शांतिलाल जी बाफना, अर्जुंदा
1,110/- जितेंद्र जी चोपड़ा, सूरत
1,109/- विनयचंद जी रांका, ब्यावर
1,105/- ताराचंद जी हजारीमल जी सुराणा, सूरत

1,101/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- विजय जी मिश्रीलाल जी चोरड़िया, इच्छापुर, राकेश जी इंद्रचंद जी चोरड़िया, सूरत, रवींद्र जी रामलाल जी चोरड़िया, इच्छापुर, शांतिलाल जी विकास जी, भाटापारा, सुधीर जी शांतिलाल जी चोरड़िया, इच्छापुर, सुभाषचंद जी शांतिलाल जी चोरड़िया, इच्छापुर, सुशील जी इंद्रचंद जी ललवानी, इच्छापुर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- बसंतीलाल जी पारसमल जी सुशील जी नांदेचा, बिरमावल, पंकज जी जयंतलाल जी सोनी, बिरमावल, धर्मेंद्र जी आंचलिया, बेगूँ, अशोक जी आंचलिया, बेगूँ, झूमरलाल जी टाटिया, अर्जुनी, मनीष जी टाटिया, अर्जुनी, पुखराज जी पार्श्व जी पुगलिया, भिलाई, कोमल कुमार जी गौतम जी पारख, भिलाई, कोमलचंद जी चोपड़ा, चारभाटा, विमलचंद जी चोपड़ा, चारभाटा, केशरीमल जी विकास जी चोरड़िया, अंबागढ़ चौकी, शिव जी सुरेश जी सुराणा, अंबागढ़ चौकी, महावीर जी बोथमल जी नंदावत, इच्छापुर, शांतिलाल बरदीचंद जी पिछोलिया, इच्छापुर, महावीर जी गुणधर, डौंडी, सुभाष जी ढेलड़िया, डौंडी, मोतीलाल जी कुचेरिया, कुसुमकसा, देवराज जी रायसोनी, कुसुमकसा, मनोज जी सांखला, छुईखदान, सुमेरकरण जी सांखला, छुईखदान, विनोद जी जैन, बगुमुंडा, नानूराम जी महेश जी जैन, बगुमुंडा, पूनमचंद जी चोपड़ा, चारामा, नेमीचंद जी मनोहरलाल जी सुराणा, चारामा, रमेश जी हेमंत जी डोषी, सरोना, गौरव जी डोषी, सरोना, रवि जी संदीप जी जैन, नुआपाड़ा, अमरचंद जी गुलशन कुमार जी बैद, नुआपाड़ा, राजेंद्र जी टाटिया, भाटापारा, शंभू जी पवन जी, भाटापारा, राजेंद्र जी अवंता जी बाफना, बीजा, लोकेश जी विवेक जी पारख, बीजा, कानमल जी चोरड़िया, दाढ़ी, संजय जी चोरड़िया, दाढ़ी, नवीन जी गोलछा, दाढ़ी, संगीता जी श्रेयांश जी जैन, तरपोंगी, अनिल जी कुशल जी सांखला, तरपोंगी, सुरेंद्र जी विजय जी धारीवाल, सिमगा, अशोक जी महेंद्र जी धारीवाल, सिमगा, सुरेश जी ललवानी, बालोद, ललित जी श्रीश्रीमाल, बालोद, प्रकाशचंद जी गांधी, कांकेर, कांतिलाल जी धीरेंद्र जी जैन, मुंगेली, मीठालाल जी पिछोलिया, वलसाड, किशोर जी झंवरलाल जी भूरा, भाटार, हितेश जी नयन जी बाफना, अहिवारा, विजय जी गौरव जी गोलछा, नर्मदा, भैरूंलाल जी धूड़चंड जी कालिया, सचीन, राजकुमार जी सुराना, बेमेतरा, सुशील जी जैन, मोवा, उत्तम जी आयुष जी छाजेड़, साजा, तेजमल जी नमन जी, कवर्धा, आकाश जी ढोलकिया, गौतमचंद जी नाहटा, नगरी, लालाचंद जी मोहित जी श्रेयस जी लसोड़, पाली, **सूरत से-** धृति जी अंकुर जी बोथरा, धीरज जी प्रेमराज जी बैद, झंवरलाल सोहनलाल जी देसवाल, इंद्र जी संतोष जी बाँठिया, बबिता जी मनोज जी बैद, प्रकाशचंद जी सोहनलाल जी बाबेल, प्रकाशचंद जी करणीदान जी भूरा, प्रकाश जी अनूपचंद जी बैद, प्रकाशमल जी हस्तीमल जी सुराणा, प्रकाशचंद जी मीठालाल जी देरासरिया, प्रीति जी सुनील जी चौधरी, बाबूलाल जी प्यारेलाल जी श्रीश्रीमाल, बसंत जी नरेंद्र जी सिंघी, प्रदीप जी पूनमचंद जी फलोदिया, प्रेमराज जी छगनमल जी बैद, प्रेमचंद जी पन्नालाल जी सुराणा, कपूरचंद जी पूनमचंद जी बोथरा, करणीदान जी सोहनलाल जी मालू, कांतिलाल जी गणेशलाल जी मेहता, कुंदनमल जी मदनलाल जी कोठारी, केशरीचंद तिलकचंद जी सेठिया, मंगलचंद शंकरलाल जी बुच्चा, महावीर जी भैरूंदान जी डागा, महेंद्र जी रूप सिंह जी बैद, महेंद्र जी प्रशांतचंद जी सेठिया, महेंद्र जी नवरतनलाल जी दक, महेंद्र जी गणेशलाल जी मेहता, महेश जी सज्जनराज जी मेहता, मोहनलाल जी कस्तूरचंद जी बैद, मोतीलाल जी ईश्वरचंद जी भूरा, मदनलाल जी कनकमल जी चंडालिया, मुकेश जी बुकालीचंद जी गोलछा, मुकेश जी माणकचंद जी बोहरा, मेघराज जी छगनलाल जी बैद, मैना देवी भंवरलाल जी ओस्तवाल, मनीष जी महावीरचंद जी गुलगुलिया, मनीष जी पदमचंद जी सुराणा, मनीष जी लालचंद जी सांड, हितेश जी नाहरमल जी कोठारी, रिखबचंद जी ओस्तवाल, शिवराज जी मांगीलाल जी बच्छावत, दिनेश जी सज्जनराज जी मेहता, विमल जी

कांतिलाल जी कोटड़िया, विजय जी भीकमचंद जी पींचा, विनय जी शांतिलाल जी सेठिया, विनोद जी नाथूलाल जी कोठारी, चित्रा जी चंपालाल जी बोथरा, निहाल जी इंद्रचंद जी डागा, निशा जी बसंत जी गोलेछा, नितेश जी सुरेंद्र जी नंदावत, हस्तीमल जी सुराणा, हस्तीमल जी अखेचंद जी बरड़िया, हनुमानमल जी छगनलाल जी सामसुखा, भरत जी पारसमल जी कोठारी, भावेश जी शोभालाल जी सहलोत, पंकज जी जवाहरलाल जी गुलगुलिया, पंकज जी मीठालाल जी दक, पारसमल जी पाबूदान जी सुराणा, पारसमल जी नथमल जी गोठी, पुनीत जी प्रमोद जी गोलेछा, पन्नालाल जी रामलाल जी सामसुखा, रवि जी सुभाष जी बोथरा, श्रीपाल जी पूनमचंद जी सांड, राजकुमार जी चांदमल जी टुकलिया, राजकुमार जी फागमल जी अब्भानी, राजेंद्र जी शंकरलाल जी बुच्चा, राजेश जी गणेशलाल जी मेहता, शरद जी ऋषभराज जी चोपड़ा, शुभकरण जी भंवरलाल जी भूरा, संपतराज जी कनकमल जी बंब, संतोष जी चांदमल जी कांकरिया, सोमप्रकाश जी झुमरमल जी नाहटा, सोहनलाल जी पारसमल जी बोथरा, सागरमल जी अमोलकचंद जी सुराणा, सुमित जी पदम सिंह जी बैदमेहता, सुरेंद्र जी हनुमानमल जी बैद, सुरेश जी मोहनलाल जी बोथरा, सुवालाल जी छगनमल जी दुगड़, सुजाता जी अनिल जी मेहता, सूरजमल जी चंपालाल जी भूरा, सलोनी जी मुकेश जी सुराणा, जितेंद्र जी कमल सिंह जी बाफना, नीरव जी भावेश जी चेतन जी गौतमचंद जी भटेवरा, नरेंद्र जी सोनी, नानालाल जी मांगीलाल जी कोठारी, नवरतनमल जी राकेश जी कांकरिया, अरुण जी लक्ष्मीचंद जी बोथरा, अमरचंद जयचंद जी बोहरा, अजित जी घेवरचंद जी कांकरिया, आशीष जी जतनलाल जी नाहटा, अशोक जी हंसराज जी कांकरिया, अशोक जी शांतिलाल जी डागा, ओमप्रकाश जी मूलचंद जी बोथरा, आनंद जी घेवरचंद जी कांकरिया, आनंदीलाल जी मानमल जी मांडोत, आलोक जी मोतीलाल जी बाँठिया, अल्का जी मनोज जी डूंगरवाल, गणेश जी शिखरचंद जी सांड, गौतम जी छोगालाल जी भटेवरा, गौतमचंद जी हंसराज जी कांकरिया, गौतमचंद जी सोहनलाल जी बैद, **अहमदाबाद से-** धनराज जी अब्भानी, घेवरचंद जी सुराणा, प्रकाश जी बोथरा, कस्तूरचंद जी गुलेछा, केशरीचंद जी भूरा, मयंक जी शौर्य जी चोरड़िया, महेंद्र जी मोदी, मुकेश जी धींग, मुकेश जी छाजेड़, मनोज जी बाँठिया, मनोज जी बोथरा, मनोज जी गोलेछा, किशन जी बच्छावत, हिम्मत जी चंडालिया, दिलीप जी मेहता, विमल जी गुलेछा, निर्मल जी कोठारी, हनुमानमल जी बाँठिया, भंवरलाल जी दुगड़, भूपेंद्र जी बाघमार, भगवती जी सांखला, पंकज जी प्रवीण जी श्रीश्रीमाल, पारस जी लालानी, रंजीत जी कोठारी, रवींद्र जी गांग, राहुल जी महावीर जी कोठारी, राजकुमार जी कोठारी, राजेंद्र जी बाघमार, शांतिलाल जी तेजावत, संजय जी झाबक, सुभाष जी पारख, सुरेंद्र जी जैन, सुनील जी रांका, सुंदरलाल जी कोठारी, दीपक जी सांखला, चुकी देवी पींचा, चंद्रप्रकाश जी नागौरी, नीलेश जी ढेडिया, नरेश जी सहलोत, नरेश जी तलेसरा, नरेंद्र जी नवलखा, नवरत्न जी बडोला, नेमचंद जी सुराणा, अरुण जी ललवानी, अभिषेक जी बरड़िया, अशोक जी बाँठिया, अशोक जी बुच्चा, अशोक जी अंशू जी राँका, अजय जी श्रीश्रीमाल, गणपत जी बाघमार, गोरधन जी फलोदिया, गौतम जी मेहता, लक्ष्मीलाल जी दीपक जी बोहरा, लीलमचंद जी हीरावत, **रायपुर से-** योगेश जी राजेश जी पारख, प्रकाशचंद जी रिंकेश जी चोरड़िया, प्रफुल्ल जी प्रतीक जी देशलहरा, कन्हैयालाल जी लूणावत, महावीर जी अशोक जी गोलछा, महेंद्र जी वर्धमान जी मिन्नी, मूलचंद जी पींचा, विजय जी मूथा, विजय जी दुर्गेश जी नाहटा, विनय जी विवेक जी दुग्गड़, जिनेश जी चोरड़िया, पानमल जी डागा, महेंद्र जी बुरड़, मांगीलाल जी संजय जी खटोड़, मोहित जी चोरड़िया, हुकुमचंद जी नाहटा, भागचंद जी गिड़िया, राजेंद्र जी उमेश जी सेठिया, राजेश जी हर्ष जी बाफना, सुरेश जी मानस जी बुरड़, नरेश कुमार जी रिद्धि कुमार जी खटोड़, अमन जी बाफना, राजेश जी युवराज जी चोपड़ा, ज्ञानचंद

जी सांखला, शेषकरण जी जितेंद्र जी बरलोटा, सपन जी बैदमूथा, सुरेश जी मूथा, सुरेश जी पारख, सुरेश जी सांखला, उत्तम जी बैद, चंपालाल जी विक्रम जी गुंदेचा, चंचल जी सौरभ जी मुकीम, नवरत्न जी गिड़िया, अनिता जी विकास जी धारीवाल, अनिल कुमार जी बरड़िया, अनिल जी बरड़िया, आशीष जी विनय जी लोढा, अशोक जी सिद्धार्थ जी मुकीम, ओमप्रकाश जी ऋषि जी संचेती, अनूपी बाई सुरेशचंद जी गोलछा, गौतमचंद्र जी बरड़िया, गौतमचंद जी राकेश जी ऋषभ जी चोपड़ा, **भीलवाड़ा से-** प्रकाशचंद जी रोशनलाल जी डांगी, जसवंत जी नागौरी, महावीर जी भूरा, मदनलाल जी नागौरी, मनीष जी पारख, दिलीप जी बाघमार, विद्यासागर जी सुराणा, विनोद जी भंवरलाल जी करणपुरिया, विनोद जी डूंगरवाल, हुलासमल जी लालाणी, भंवरी देवी सुंदरलाल जी सिसोदिया, रमेश जी कोठारी, शांतिलाल जी दीपक जी गांधी, शंभुलाल जी सुराणा, संपतलाल जी बोहरा, संपतलाल जी पींचा, सोहनलाल जी पंकज जी चोरड़िया, सुरेश जी भड़कत्या, सुनील जी निर्मल जी भूरा, सूर्यप्रकाश जी मूलावत, उदयलाल जी छाजेड़, चंदनमल जी बारलोटा, नानालाल जी राकेश जी बाघमार, अमित जी बरलोटा, गणपतराज जी चोपड़ा, गौतम जी रतनलाल जी खटोड़, **इंदौर से-** प्रमिला जी जैन, कुसुम जी रजत जी सरूपरिया, मोनोरा जी अमित जी बोरदिया, दिनेश जी भंडारी, दिलीप जी श्वेता जी गोटी, विनोद जी सुराणा, निर्मल जी प्रतिमा जी मुकीम, निर्मला जी जैन, पुष्पा जी हर्षल जी जैन, पुखराज जी लसोड़, राहुल जी रीतू जी खिमेसरा, राजकुमार जी सपना जी बोथरा, राजेश जी मधु जी काँठेड़, राजेश जी पीयूष जी बाँठिया, शंकुतला जी डांगी, सुशील जी वोरा, नवीन जी ललवानी, अरुणा जी जैन, अंजनी जी सुराणा, **नीमच से-** प्रकाशचंद्र जी हेमंत जी भंडारी, प्रदीप जी गोदावत, कोमलचंद जी केतन जी गांग, कन्हैयालाल जी काँठेड़, दिलीप जी शांतिलाल जी चौधरी, विमल जी धनेंद्र जी आंचलिया, भंवर सिंह जी सुनीश जी चोरड़िया, भंवरलाल जी रामलाल जी मोगरा, रतन देवी नाथूलाल जी काँठेड़, शांतिलाल जी संदीप जी चौधरी, सुनील जी बोकड़िया, दशरथमल जी कोठारी, अरुण जी रोहित जी कोठारी, अनिल जी आशीष जी सोनी, अशोक जी मोगरा, **डोंगरगाँव से-** धर्मचंद जी बोथरा, भागचंद जी नाहटा, रवि जी नाहटा, राकेश जी सौरव जी लोढ़ा, राजकुमार जी लोढ़ा, संतोष जी अमिताभ जी श्रीश्रीमाल, जेठमल जी सोनू जी लोढ़ा, अशोक जी आयुष जी सांखला, गुप्तदान, गुप्तदान, **दिल्ली से-** धनराज जी बच्छावत, प्रेमचंद जी संचेती, कमलचंद जी बोथरा, मेघराज जी संचेती, मनीष जी पिपाड़ा, मनोज जी बरड़िया, पी.के. कातेला, रामचंद्र जी कातेला, रोशनलाल जी डागा, शुभकरण जी भूरा, सुशील जी पींचा, छगनलाल जी बोथरा, जीवनमल जी भूरा, जवाहरलाल जी राजेंद्र जी आंचलिया, नवरतन जी सेठिया, ललित जी लूणिया, **राजनांदगाँव से-** युगराज जी सुराना, प्रकाशचंद जी रोहित जी पारख, प्रवीण जी खटेर, मनीष जी पारख, मनोज जी शिखर, किशोरचंद जी विनय जी बैद, राजेंद्र जी यश जी पारख, राजेश जी बाफना, रानूलाल जी गिड़िया, सुरेश जी शुभम जी सांखला, सुनील जी ओस्तवाल, तुषार जी कांकरिया, अनूपचंद जी मनीष जी पारख, गौतमचंद जी बाफना, **ब्यावर से-** कैलाश जी खींचा, ब्यावर, पन्नालाल जी कोठारी, ब्यावर, राजेश जी सुराणा, ब्यावर, शांतलाल जी लूणावत, ब्यावर, उत्तमचंद जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर, नवरत्न जी ओस्तवाल, ब्यावर, अनिल जी बाबेल, ब्यावर, अनिल जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर, गौतमचंद जी चौधरी, ब्यावर, **अर्जुंदा से-** बाबूलाल जी गौरव जी नाहटा, कांतिलाल जी पारख, महावीर जी सेठी, मदनलाल जी मनीष जी गोगड़, मुकेश जी बाफना, रमेशचंद जी पीयूष जी गोगड़, रवींद्र जी पारख, शांतिलाल जी खटोड़, तनसुख जी विकास जी बाफना, **दल्ली राजहरा से-** पन्नालाल जी निखिल जी ललवानी, सोहनलाल जी विकास जी गुणधर, सोनराज जी मनोज जी चोपड़ा, नीलमचंद जी अनंत जी गुणधर, अशोकचंद जी

अभिषेक जी गुणधर, गौतमचंद जी दीपेश जी सेठिया, **जगदलपुर से-** कमलचंद जी श्रेणिक जी श्रीश्रीमाल, राजेंद्र जी नमन जी सांखला, रेखचंद जी धीरज जी बाफना, शांतिलाल जी गोलछा, दीपचंद जी विमल जी बोथरा, गौतमचंद जी गुलाबचंद जी श्रीश्रीमाल, **महासमुंद से-** मुकेश जी चोरड़िया, त्रिलोकचंद जी सांखला, रिखबचंद जी रोशन जी बाफना, दिलीप जी चोरड़िया, निर्मल जी चोरड़िया, रमेश जी सांखला, सुभाष जी बाफना, **हिंदमोटर से-** कमलचंद जी सांड, महावीर जी ढड्ढा, महेंद्र जी चोरड़िया, विमलचंद जी सांड, राजकुमार जी बैद, राजेंद्र जी डागा, छगनमल जी पींचा, चैनरूप जी सेठिया, **देवरी से-** खेतमल जी रौनक जी राखेचा, इंद्रचंद जी प्रदीप जी बाफना, पारसमल जी नितेश जी पारख, संतोष जी हर्ष जी सिसोदिया, तरुण जी चिराग जी चोपड़ा, **राजा खरियार से-** अश्विन जी जैन, रमेश जी अमित जी अंकुर जी जैन, राहुल जी जैन, चंदूलाल जी जैन, नरेश जी रोहन जी जैन, अजित जी संदीप जी जैन, **अमरोली से-** खयालीलाल जी रामलाल जी पिछोलिया, किरण जी सुनील जी मंडोत, विशाल जी सोहनलाल जी बाँठिया, दीपचंद जी रूपचंद जी छाजेड़, **पलसाना से-** मुकेश जी रंगलाल जी जारोली, भोपराज जी रंगलाल जी जारोली, भैरूंलाल जी रंगलाल जी जारोली, सुरेश जी रंजनलाल जी जारोली, **कानोड़ से-** दिलीप जी मुर्डिया, रमेश जी कुदाल, शंकर जी वया, वीरेंद्र जी गांधी, तख्तमल जी जैन, अरुण जी भाणावत, अनिल जी भाणावत, **पाली से-** शांतिलाल जी सिद्धार्थ जी ऋषभ जी सिंघवी, छोटूलाल जी अरुण जी अभिषेक जी छाजेड़, जीवनलाल जी प्रकाश जी सिंघवी, **थानखम्हरिया से-** प्रेमराज जी रितेश जी चोपड़ा, सुमित जी युग जी चोपड़ा, अनमोल जी छाजेड़, लक्ष्मीलाल जी रमेश जी चोपड़ा, **संबलपुर से-** प्रकाशचंद जी महावीर जी संचेती, केवल जी प्राणेश जी संचेती, हरीश जी संचेती, शांतिलाल जी बाँठिया, **डौंडी लोहारा से-** नितिन जी डोषी, नरेंद्र जी लुंकड़, अनूपचंद जी डोषी, गौतमचंद जी सांखला, गेंदमल जी सांखला, **परपोड़ी से-** रमेशचंद जी बाँठिया, रामलाल जी मिसरीलाल जी छाजेड़, गौतमचंद जी डाकलिया, गेंदमल जी जैन, **सीतामऊ से-** दिलीप जी मोहनलाल जी पटवा, अरविंद जी पारसमल जी बोहरा, अशोक जी पारसमल जी बोहरा, **कैलाशनगर से-** यशवंत जी जमुनालाल जी बोहरा, विजय सिंह जी बैद, जवरीमल जी अमोलकचंद जी सुराणा, **खरियार रोड से-** महेश भाई ढोलकिया, अमित जी रेहान जी ढोलकिया, अशोक जी अभिषेक जी बरड़िया, **गंडई से-** मंगलचंद जी संतोष जी चोरड़िया, ज्ञानचंद जी दीपेश जी चोरड़िया, जेठमल जी नीलेश जी जैन, **धमतरी से-** सिरेमल जी विजय जी छाजेड़, दीपक जी प्रियेश जी बाफना, ऐवंत जी अरिहंत जी गोलछा, **पांचोड़ी से-** महावीरचंद जी जैन, देवीलाल जी लोढ़ा, अनिल कुमार जी जैन, गणेशमल जी लोढ़ा, **बेरला से-** मैना बाई नीरज जी संकलेचा, नितेश जी गोलछा, सोहनलाल जी लोकेश जी जैन, **लूणकरणसर से-** हनुमानमल जी भूरा, सेंसकरण जी राखेचा, दीपक जी हनुमानमल जी राखेचा, **जोधपुर से-** मुन्नालाल जी बाफना, जवरीलाल जी अशोक जी चोपड़ा, नवरतन जी संखलेचा, **लुधियाना से-** मोहित जी बोथरा, चंपालाल जी बैद, नवरत्न जी सुराणा, आशीष जी जैन, **देवकर से-** रमेशचंद जी बोरा, सुरेशचंद जी सौरभ जी बोरा, उत्तमचंद जी बोहरा, **धमधा से-** मोतीलाल जी भावेश जी छाजेड़, हितेंद्र जी जैन, शैलेंद्र जी छाजेड़, **उज्जैन से-** रितेश जी काँठेड़, रवींद्र जी कटारिया, संजय जी सूर्या

इदं न मम

11,00,000/- जयचंदलाल जी डागा, बीकानेर

11,00,000/- छाऊ देवी दुल्हराज रांका चैरिटेबल ट्रस्ट, जयनगर/मुंबई

2,00,000/- धीरज जी सिपानी, बेंगलुरु

1,00,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता

22,000/- मोहनलाल जी बाफना, रायपुर

21,000/- कमलेश जी कोठारी, चेन्नई

21,000/- विजयलाल जी उमेश कुमार जी सुनील जी सोनी, खरियार रोड

11,000/- मनीष कुमार जी डागा, कोलकाता

5,100/- रवि कुमार जी दस्सानी, गुवाहाटी

4,200/- कांतिलाल जी दुगड़, सोमेसर

3,110/- गुप्तदान

2,100/- राजूमल जी बरड़िया, हिंदमोटर

2,100/- रौनक जी उज्ज्वल जी गोलछा, हिंदमोटर

2,000/- सुशीला जी रवि जी दुग्गड़, पाली

1,200/- इंद्रचंद जी मेघराज जी मुणोत, हिंदमोटर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- महाबीर जी ढड्ढा, हिंदमोटर, महेंद्र जी चोरड़िया, हिंदमोटर, मीठालाल जी शाह, अतुल जी श्रीपाल जी बोथरा, हवली, संदीप जी लोढ़ा, डोंगरगाँव

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- अशोक जी सुशील जी मुणोत, हिंदमोटर, मोतीमल जी भूरा, हिंदमोटर, कांतिलाल जी सुराणा, हिंदमोटर, सुभाष जी जितेश जी सेठिया, हिंदमोटर, गुप्तदान

जीवदया

2,000/- भरत जी जैन, बेंगलुरु

1,100/- महेंद्र जी सिपानी, कोलाघाट

1,000/- अमित जी जैन, नर्मदानगर

1,000/- अमित कुमार जी जैन, खंडवा

1,000/- आदेश जी जैन, मुंबई

संघ सहयोग

30,000/- गुप्तदान

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

51,000/- पारस जी चपलोत, मुंबई

समता प्रचार संघ

21,000/- छगनमल जी सुराणा, पीलीबंगा

श्रमणोपासक आजीवन सदस्यता सहयोग

1,03,600/- अशोक जी सुराणा, मुंबई

52,200/- पारस जी चपलोत, मुंबई

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

11,000/- समता महिला मंडल, भीम

4,000/- मोनिका जी ओस्तवाल, ब्यावर

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से- मंजू जी पंच, रतन बाई नाबेड़ा, सज्जन बाई बोहरा, शंकुतला जी लोढ़ा, अनिल जी लोढ़ा, चारू जी लोढ़ा, स्वप्निल जी लोढ़ा, जूली जी ओस्तवाल, रूपल जी ओस्तवाल, ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल, निराला देवी कोठारी, स्नेहा जी लोढ़ा, रंजना जी कर्णावट

1,500/- अरुणा जी बुरड़, ब्यावर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ममता जी खाब्या, जेठाणा, **ब्यावर से-** राजुल जी राँका, मोनिका जी राँका, मंजू जी राँका, राजुल जी राँका, सुशीला जी मुणोत, सुमन जी कर्णावट, मुनिया बाई बाबेल

1,000/- विकास जी बुरड़, ब्यावर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- इंद्र जी लूणिया, जेठाणा, कौशल्या देवी नाहर, जेठाना, **ब्यावर से-** प्रमिला जी बोहरा, स्नेहलता जी जैन, अर्चना जी राँका, रेखा जी छल्लाणी, विनीता जी कोठारी, सरिता जी देसरिया, मंजू जी गुलेछा, सुनीता जी लोढ़ा, सुशीला जी खींचा, मधु जी खींचा, संतोष देवी नाहर, सुमन देवी नाहर, शिखा जी नाहर

:: **विशेष** ::

महिला समिति सदस्यता-52, साहित्य सदस्यता-1, समता युवा संघ सदस्यता-1

सूचना - मार्च माह में दानपेटी योजना के अंतर्गत प्रभुत सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: स्थानाभाव के कारण ₹1,100/- से कम राशि की भेंट सूची आगामी अंक में प्रकाशित कर पाएँगे।

---

01 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 तक

संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

5,00,000/- कांतिलाल जी कटारिया, रतलाम

2,77,781/- कमला बाई चोरड़िया परिवार (सुरेश जी दिलीप जी चोरड़िया), बालाघाट (श्री मांगीलाल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौंजन्य से प्राप्त)

2,20,000/- दिलीप जी ओस्तवाल, कलंगपुर

महत्तम महोत्सव (सौंजन्य से प्राप्त)

10,000/- अशोक जी सुराणा, रायपुर
10,000/- जय कँवर बाई झेलावत, खाचरौद

समता भवन प्रवृत्ति (सौंजन्य से प्राप्त)

30,000/- जय कँवर बाई झेलावत, खाचरौद
3,500/- गुप्तदान, पाली

समता भवन, जयपुर

11,00,000/- बलवंत राव जी जैन, टोंक
4,00,000/- दिनेश जी सौरभ जी जैन, सवाई माधोपुर
1,21,000/- प्रवेश जी जैन, सवाई माधोपुर
99,000/- भैरूंलाल जी जैन, जयपुर
61,000/- नितिन जी श्यामलाल जी जैन, सवाई माधोपुर
2,000/- विक्रम कुमार जी जैन, जयपुर

दानपेटी योजना

36,000/- सोनाली जी सिपानी, बेंगलुरु
31,000/- रीता जी अजीत जी ललवानी, बांसवाड़ा
17,150/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, जावरा
5,100/- दुर्गा देवी बोथरा, मल्लारपुर
5,100/- गुप्तदान, कोलकाता
5,100/- मालचंद जी लालाणी, बिलासीपाड़ा
5,100/- लक्ष्मी स्टोर, बिलासीपाड़ा
5,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, राँची
5,000/- किशोर जी ललवानी, नासिक
5,000/- कांतिलाल जी भूरा, बेंगलुरु
4,710/- धर्मचंद जी अमरचंद जी बोथरा, बिलासीपाड़ा
4,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नाशिक
3,680/- मोहन बाई रूपचंद जी चोरड़िया, नीमच
3,500/- पारसमल जी सतीश जी रांका, विल्लवकम्
3,100/- मनोज जी चोरड़िया, बिलासीपाड़ा
3,000/- प्रकाशचंद्र जी कांकरिया, देवली

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- सुनीता देवी बरड़िया, बहादुरगंज, पंकज जी मरोठी, बिलासीपाड़ा, रमेश जी अग्रवाल, बिलासीपाड़ा, नरेंद्र जी सेठिया, बिलासीपाड़ा, महावीर प्रसाद जी बरड़िया, पांचू, चुन्नीलाल जी बरड़िया, पांचू, ललित जी सिपाणी, दिल्ली, लालचंद जी मुणोत, भीम

2,000/- विनोद जी शांतिलाल जी काँठेड़, नीमच
1,500/- घेवरचंद जतनलाल बाँठिया, अररिया
1,500/- कन्हैयालाल जी बरड़िया, पांचू

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- सुरेंद्र जी कोचर, रिशरा, ओमप्रकाश जी विक्रम जी सोनावत, गुलाबबाग, सोनल जी सुबाहु जी मूथा, वापी, सरला जी जैन, वापी, मांगीलाल जी जितेंद्र जी छल्लाणी, तंडियारपेट, पारसमल जी मदनलाल जी सोनी, नीमच, रघुराज सिंह जी चौधरी, नीमच, **बिलासीपाड़ा से-** हनुमान जी लूणावत, नेमचंद जी भंवरलाल जी निर्मल जी चोरड़िया, मुकेश जी चोरड़िया, हंसराज जी लूणावत, सूरज जी लूणावत, करणीदान जी बोथरा, मिलापचंद जी भूरा, **वडोदरा से-** चंदा जी श्यामलाल जी पिछोलिया, कमला जी शांतिलाल जी पिछोलिया, भावना जी दिनेश जी पिछोलिया, वैशाली जी चिराग जी, तारा जी बाबूलाल जी, प्रीति जी दशरथ जी जारोली, **पांचू से-** महावीरचंद जी सुराणा, राजमल जी बरड़िया, मेघराज जी सुराणा, करणीदान जी बरड़िया, भंवरलाल जी हनुमानमल जी बैद, मेघराज जी बरड़िया, गणेशमल जी सिंघी, सूरजमल जी बरड़िया, जोगराज जी बाँठिया, जयचंदलाल जी बरड़िया, विजय जी बरड़िया, चंपालाल जी ईश्वरचंद जी बरड़िया, मोहनलाल जी बरड़िया, हीरालाल जी बरड़िया, भोजराज जी बरड़िया, **दिल्ली से-** कमल जी बोथरा, रेवंतमल जी बेताला, मनोज जी बोथरा, देवचंद जी सुराणा, **भीम से-** शांतिलाल जी मारू, कमलेश जी देसरला, भीखमचंद जी कोठारी, तरुण

जी गन्ना, महावीरचंद जी गुरलिया, मांगीलाल जी दक, माणकचंद जी दलाल, उत्तमचंद जी देरासरिया, रमेश जी मुणोत, तेजराज जी कोठारी, नवरतन जी गुलगुलिया, विकास जी गुरलिया, पारसमल जी बंब, माणकचंद जी देरासरिया, अशोक जी पोखरना, बाबूलाल जी कोठारी, गणेशमल जी पोखरना, मांगीलाल जी दलाल

इदं न मम

1,00,000/– संपत देवी कांकरिया, बेंगलुरु
27,000/– दिनेश जी विपुल जी आंचलिया, इंदौर
21,101/– सायरा देवी मोदी, कवर्धा
21,000/– प्रदीप जी कांकरिया, कोलकाता
21,000/– मोहनलाल जी राजेश जी पींचा, राँची/गंगाशहर
11,000/– डिंपल जी लोढ़ा, डौंडी लोहारा
11,000/– मनोज जी तनिष्क जी छाजेड़, पोलूर
11,000/– देवीचंद जी छाजेड़, चाड़ी
11,000/– नजर सिंह जी बाबेल, जयपुर
11,000/– चंदनमल जी सुराणा, रायपुर
11,000/– अशोक जी पितलिया, मैसूर
11,000/– महावीर कुमार जी मेहता, बेंगलुरु
11,000/– रिखबचंद जी कोचर, गाजियाबाद
11,000/– धर्मीचंद जी गरिमा जी रांका, विजयनगर
11,000/– विवेक जी प्रकाशचंद्र जी कांकरिया, देवली
10,000/– सुधीर जी सुरेशचंद्र जी लूणावत, नरसिंहपुर
7,501/– संजय जी सांखला, चेन्नई
5,100/– तेजमल जी कांकरिया, नोखा
5,100/– सोहनलाल जी पोखरना, चित्तौड़गढ़
5,100/– चांदमल जी चंडालिया, कपासन
5,100/– अनिल जी सुषमा जी बरड़िया, रायपुर
5,100/– इचू देवी बाँठिया, अररिया कोर्ट
5,100/– प्रदीप कुमार जी बरड़िया, बेंगलुरु
5,000/– सुरेश जी बोहरा, देवकर
4,200/– हस्तीमल जी नवीन जी जैन, चित्तौड़गढ़
3,100/– राजेंद्र जी पीयूष जी भंडारी, कंझाड़ी
3,000/– सागरमल जी लोढ़ा, चिकारड़ा
3,000/– सुशील जी बोथरा, कोलकाता

2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– संपतलाल जी हिंगड़, वलसाड, राजेंद्र कुमार जी सेठिया, सूरत, **कपासन से-** अशोक जी चंडालिया, सुरजीत जी चंडालिया, मिश्रीलाल जी मालू, सुरेश जी दुग्गड़, मदनलाल जी दुग्गड़, रूपलाल जी चंडालिया, सुवालाल जी सिरोहिया, निर्मल जी बाघमार

1,121/– गुप्तदान, जगदलपुर

जीवदया

5,100/– विकास जी रवि जी गुरलिया, भीम (श्री प्रकाशचंद जी गुरलिया की पुण्यस्मृति में)
5,100/– प्रवेश कुमार जी जैन, सूरतगढ़
5,100/– राकेश जी प्रमोद जी प्रदीप जी बोथरा, दिल्ली (श्रीमती सायर देवी बोथरा की पुण्यस्मृति में)
5,000/– सोमेश्वर जी सिपानी, अहमदाबाद
2,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव
2,100/– पुखराज जी विनायकिया, नोखागाँव
2,100/– गुप्तदान, दिल्ली
2,100/– निर्मल जी सेठिया, चिकमगलूर
1,500/– पीयूष जी मांडोत, पुणे
1,100/– विकास जी छत्तर, रावटी
1,100/– तुषार जी जैन, संगरिया मंडी
1,100/– गुप्तदान

संघ सहयोग

51,000/– इंद्रा देवी बरड़िया, रायपुर

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग

10,000/– जय कँवर बाई झेलावत, खाचरौद
5,100/– परिणिता जी सोनावत, दिल्ली

समता जनकल्याण प्रन्यास

10,000/– डॉ. सतीश जी फतेहचंद जी राखेचा, सेलांबा
2,000/– गुप्तदान

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5,200/- घेवर जी सिपाणी, बेंगलुरु

5,000/- रीता जी अजीत जी ललवानी, बांसवाड़ा

5,000/- दानमल जी गणेशमल जी मिन्नी, मुंबई

5,000/- धर्मचंद जी बंबकी, बेंगलुरु

3,100/- रमेश जी अरुण जी जयकुमार जी सिपाणी (श्री हनुमानमल जी सिपानी की पुण्यस्मृति में)

2,700/- सुंदरलाल जी लालचंद जी सजीत जी सिपाणी परिवार, उदयरामसर

2,300/- चंपालाल जी इंद्रचंद जी महेंद्र जी जितेंद्र जी सिपाणी, बेंगलुरु/उदयरामसर

2,000/- छगनलाल जी राजेश जी सुरेश जी महेंद्र जी सिपाणी परिवार, उदयरामसर

1,600/- गुड्डु जी सुपुत्र स्व. श्री केशरीचंद जी सिपाणी, उदयरामसर

श्रमणोपासक भेंट

1,100/- प्रीतेश जी बंबोरिया, जावद (श्री प्रकाश जी बंबोरिया की पुण्यस्मृति में)

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

7,000/- गुप्तदान, बीकानेर

1,100/- मोनालिसा जी जैन, रायपुर

:: विशेष ::

श्रमणोपासक सदस्यता-11, साहित्य सदस्यता-4

::: 1 अप्रैल 2025 से 30 अप्रैल 2025 तक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अतः जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
SBI बैंक		
07.04.25	2,200/-	नकद
08.04.25	10,000/-	UPI निखिल
09.04.25	2,400/-	UPI जय गेलड़ा
11.04.25	21,320/-	नकद
12.04.25	1,100/-	NEFT विपुल
16.04.25	300/-	UPI संदीप
16.04.25	5,000/-	UPI यशवंत
17.04.25	192/-	NEFT Exotic India Art
23.04.25	1,100/-	UPI मुदित गांधी
HDFC बैंक		
08.04.25	3,000/-	UPI

- **उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें।**
- **दिनांक 21-22 जुलाई, 2024 को भीलवाड़ा में संपन्न कार्यकारिणी बैठक में हुए निर्णयानुसार 1 अप्रैल 2025 से न्यूनतम ₹1,100/-की राशि प्रदान करने वाले दानदाता का नाम ही प्रकाशित किया जाएगा।**

जयपुर संघ के एक और समता भवन निर्माण की ओर बढ़ते कदम

जयपुर के राधा निकुंज क्षेत्र में समता भवन निर्माण हेतु केंद्रीय संघ को भूमि खरीदकर देने में श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान, जयपुर के सदस्यों, राधा निकुंज क्षेत्र के साधुमार्गी परिवारों एवं केंद्रीय संघ में सुश्रावक, उदारमना यशवंतराव जी, बलवंतराव जी, जैनेंद्रराव जी बम्ब, टोंक के सौजन्य से आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया है। सभी को बहुत-बहुत साधुवाद।

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्मृतिशेष सुश्राविका पांचा देवी बोथरा

(उदासर/गुवाहाटी)

परम गुरुभक्त आदर्श **सुश्राविका श्रीमती पांचा देवी बोथरा** धर्मसहायिका स्व. श्री फुसराज जी बोथरा, उदासर निवासी, गुवाहाटी प्रवासी का **दिनांक 28 फरवरी 2025** को चौविहार संथारे सहित प्रातः 11 बजे महाप्रयाण हो गया। आपकी बैकुंठ यात्रा इसी दिन दोपहर में निकाली गई। संपूर्ण मार्ग राम गुरुवर एवं संथारा साधिका जी की जय-जयकार से गुंजायमान होता रहा।

आपको पूर्ण सजग अवस्था में 21 फरवरी को दोपहर 12:41 बजे बेले की तपस्या में सागारी तिविहार संथारे के प्रत्याख्यान एवं 26 फरवरी 2025 को सायं 05:21 बजे चौविहार संथारे के प्रत्याख्यान करवाये गये। आठ दिवसीय संथारे में आपने अपूर्व आत्मसमाधि धारण कर धर्म-ध्यान श्रवण किया।

सुश्राविका पांचा देवी ने अपने जीवन को पाँच, अठाई, नौ, अनेक तेला, लगभग 45 वर्षों से चौविहार, जमीकंद का त्याग, प्रतिक्रमण एवं नित्य पाँच सामायिक आदि धर्म एवं तपाराधना से सजाया हुआ था। आपके धर्मसहायक स्व. श्री फुसराज जी बोथरा ने भी संथारा धारण कर श्रावक का तृतीय मनोरथ पूर्ण किया था।

आपके सुपुत्र स्व. श्री जुगराज जी बोथरा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे चुके हैं एवं संघ के महाप्रभावक सदस्य भी रहे। आपने स्थानीय संघ में भी सक्रिय पदाधिकारी के रूप में गुरुत्तर दायित्व का निर्वहन किया है। शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पूर्वोत्तर प्रवास में आपने अतुलनीय सेवा प्रदान की। म.सा. आपको '**चौकीदार जी**' के नाम से संबोधित करते थे। संघ एवं शासन सेवा में अग्रणी बोथरा परिवार की गुरुनिष्ठा एवं संघ समर्पणा अन्यों के लिए प्रेरणीय है। समस्त बोथरा परिवार आचार्य श्री रामेश के प्रति पूर्ण समर्पणा रखते हुए चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी भूमिका निभाता है।

सुश्राविका पांचा देवी द्वारा प्रदत्त संस्कारों की धरोहर से पल्लवित-पुष्पित बोथरा परिवार उन्हीं के पदचिह्नों पर चलकर सेवा प्रकल्पों को आगे बढ़ाने हेतु दृढ़ संकल्पित है।

:: श्रद्धानवत ::

सरोज देवी बोथरा (पुत्रवधू), **रितेश-मोनिका बोथरा** (पौत्र-पौत्रवधू), **मूलचंद जी लूणिया** (दामाद), **जेठी देवी लूणिया, सरिता देवी पींचा** (पुत्रियाँ), **रौनक बोथरा** (पड़पौत्र), **अरुण, राजेश, राकेश, गुंजन** (दोहिते), **जूली, मीनाक्षी, रश्मि** (दोहितियाँ) **एवं समस्त बोथरा परिवार।**

पीहर पक्ष : मनोज कुमार जी झंवरी (बीकानेर/कोलकाता) एवं जीवनमल जी चोरड़िया (तेजपुर/असम)

:::::::::: प्रतिष्ठान ::::::::::

वसुंधरा ट्रेडिंग कंपनी, बुलबुल मार्केट, एस.आर.सी.बी. रोड, फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 (असम)
मो.: 9435544466, 9435550977

निवास स्थान : रितेश बोथरा, हरिकुंज, चौथा तल्ला, नर्मदा बिल्डिंग के पास, छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी-781001 (असम) मो. : 8811047666

विनम्र श्रद्धांजलि

केशकाल। सुश्रावक रिखबचंद जी सुपुत्र स्व. श्री केवलचंद जी बाफना का 69 वर्ष की आयु में 1 मार्च को निधन हो गया। संपूर्ण बाफना परिवार आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धावान है। चारित्रात्माओं की सेवा में अग्रणी रहने वाले श्री रिखबचंद जी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

उदयरामसर/बेलुड़। योगेश जी सुपुत्र सुमित जी सिपानी का 4 मार्च को निधन हो गया। आप ज्ञानार्जन में रुचिवान रहते हुए संघ व शासन के प्रति पूर्ण समर्पित थे। प्रत्येक संवत्सरी को उपवास का लक्ष्य रखते थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

कडूर/गंगाशहर। सुश्रावक जतनलाल जी डागा का 65 वर्ष की आयु में 16 मार्च को देहावसान हो गया। आप विनम्र, हँसमुख, दयालु प्रकृति के धनी थे। आपकी आचार्य भगवन् के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा व श्रद्धा थी। आपके परिवार द्वारा कडूर में समता भवन हेतु भूमि स्थानीय संघ को प्रदान की गई। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

प्रतापगढ़। सुश्राविका प्रेमलता जी धर्मपत्नी मदनलाल जी चिप्पड़ का 26 मार्च को 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपने अपने जीवनकाल में 4 वर्षीतप, मासखमण, 21 उपवास, 16, 11, अठाई एवं एकांतर तप आदि की आराधना की। आप प्रतिदिन 7 सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि करने का लक्ष्य रखती थी। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान प्रेमलता जी अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

रतलाम। सुश्रावक समीरमल जी सुपुत्र स्व. श्री मोतीलाल जी मुणत का 86 वर्ष की आयु में 28 मार्च को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आपने श्री पी.जी. बोहरा धर्मपाल जैन छात्रावास, रतलाम में व्यवस्थापक के रूप में चार वर्षों तक सेवाएँ दीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

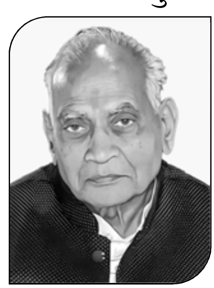

रतलाम। सुश्राविका वीर माता कोमल बाई धर्मपत्नी स्व. श्री बसंतीलाल जी श्रीश्रीमाल का 23 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय

माताजी थी। आपकी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. एवं आचार्य रामलाल जी म.सा. के प्रति अटूट श्रद्धा व समर्पणा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर/देशनोक। सुश्राविका **वीर दादी सिरेकँवर जी** धर्मसहायिका वीर दादा राणुलाल जी बैद का 77 वर्ष की आयु में 28 अप्रैल को देवलोकगमन हो गया। आपके रात्रि भोजन व जमीकंद त्याग, प्रतिदिन 3 सामायिक, प्रत्येक सप्ताह उपवास आदि अनेक नियम थे। आप श्री गुणीश मुनि जी म.सा., साध्वी श्री दीपिका श्री जी म.सा. की सांसारिक दादीजी, साध्वी श्री तारिका श्री जी म.सा. की सांसारिक सासुजी थीं। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

साधक की अंतर्यात्रा का आरंभ बाहर से भीतर प्रवेश करने के रूप में होता है यानी वह अपने व्यावहारिक जीवन से आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश करता है, देह से चेतना की तरफ उन्मुख होता है। किंतु यह क्रम पहले सामायिक ही रहता है क्योंकि साधना में निश्चित अवधि तक बैठने के बाद वह फिर से अपने व्यावहारिक जीवन में चला जाता है। किंतु उसका यह प्रत्यावर्तन भी उसे अपने लक्ष्य एवं आदर्श से विस्मृत नहीं बनाना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन की ही यथोचित सम्यक् पूर्ति उसके व्यावहारिक जीवन में भी होनी चाहिए। फिर बार-बार जो एक जीवन से दूसरे जीवन में भावनात्मक प्रत्यावर्तन होता रहेगा, उसमें भावनात्मक परिवर्तन एवं उच्चतरता की अपेक्षा रहेगी। तब यह प्रत्यावर्तन एक-दूसरे का समपूरक बन जाएगा, बल्कि यों कहें कि दोनों जीवन आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत होने लगेंगे। व्यावहारिक जीवन में भी आदर्श एवं लक्ष्य के अनुकूल आचरण का विस्तार हो जाएगा। भविष्य के निर्धारण के प्रति तब साधक का संपूर्ण ध्यान केंद्रित होने लगेगा। तब उसकी संकल्प शक्ति भी बलवती होने लगेगी। जब वह व्यावहारिक जीवन में लौटेगा, तब पहले की तरह विषम परिस्थितियों के सामने झुकेगा या गिरेगा नहीं। उनसे सम्हलकर चलेगा, अपितु उन्हें सुधारने का सत्प्रयास भी करेगा। उसकी इस सजग वृत्ति से उसके व्यावहारिक जीवन में भी लोकोपकार की भावना पैदा होगी। वह सोचेगा कि जिस लक्ष्य एवं आदर्श को मैं उत्थानकारी मानता हूँ और जिस दिशा में मैं गति कर रहा हूँ, क्यों नहीं प्रत्येक मानव भी उस लक्ष्य और आदर्श को उत्थानकारी माने और क्यों नहीं, प्रत्येक मानव उसी दिशा में गति करे? यह उसकी लोकोपकार की भावना होगी। इस दृष्टि से वह अपने आध्यात्मिक जीवन में अपनी आत्मिक उच्चता का पुरुषार्थ करेगा तो उसका वही पुरुषार्थ उसके व्यावहारिक जीवन में प्रत्येक मानव के लिए कल्याणकारी चरण बन जाएगा। समुच्चय रूप से इस परिप्रेक्ष्य में तब एक साधक अपने भविष्य का निर्धारण समतापूर्वक करना चाहेगा।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

रतलाम में श्री उदित मुनि जी म.सा. का पंडितमरण

डोलयात्रा में उमड़े श्रद्धालु

रतलाम। परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संत श्री उदित मुनि जी म.सा. का 6 मई 2025 को चौविहार संथारे सहित पंडितमरण हो गया। मुनिश्री की स्वास्थ्य की स्थिति नरम देखते हुए शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. ने प्रातः 08:42 बजे चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। संथारे की सूचना प्रसृत होते ही आस-पास के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं का संथारा साधकजी के दर्शनार्थ आगमन प्रारंभ हो गया। आपका संथारा प्रातः 09:02 बजे सीझ गया। आपश्री जी की डोलयात्रा समता भवन, नौलाईपुरा से प्रारंभ होकर घास बाजार, मानक चौक, न्यू क्लॉथ मार्केट, गणेश देवरी, बजाजखाना, तोपखाना, चाँदनी चौक, त्रिपोलिया गेट आदि क्षेत्रों से होते हुए मुक्तिधाम पहुँची। अपार जनमेदिनी द्वारा संपूर्ण मार्ग जयघोषों से गुंजायमान हो उठा। डोलयात्रा में रतलाम, जावरा, बदनावर, मंदसौर, नीमच, उज्जैन सहित आस-पास के अनेक क्षेत्रों के श्रद्धालु शामिल हुए। मुक्तिधाम में संघ प्रमुखों आदि ने मुखाग्नि देकर अंतिम विदाई दी। संघ के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, स्थानीय संघ अध्यक्ष सहित अनेक गणमान्यजनों ने भावांजलि अर्पित की।

दिनांक 7 मई को प्रातः शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा., श्री रोहित मुनि जी म.सा., श्री अटल मुनि जी म.सा., श्री ब्रह्मऋषि मुनि जी म.सा. आदि ठाणा, शासन दीपिका साध्वी श्री शकुंतला श्री जी म.सा. आदि एवं शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा में चारित्रात्माओं सहित अनेक वक्ताओं ने संथारा साधक जी के गुणानुवाद कर संथारे की अनुमोदना की।

संक्षिप्त परिचय

संत श्री उदित मुनि जी म.सा.

सांसारिक नाम :

श्री उगमराज जी बाफना

जन्मस्थान :

तिरूकोईलूर, चेन्नई (तमिलनाडु)

परिवार से दीक्षित :

धायमातृ श्री इंद्रचंद जी म.सा., श्री पद्म मुनि जी म.सा., श्री कांति मुनि जी म.सा., साध्वी श्री प्यार कँवर जी म.सा., साध्वी श्री वसुमति जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री लक्ष्यज्योति जी म.सा., साध्वी श्री निशांत श्री जी म.सा.

दीक्षा प्रदाता :

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

पारिवारिक परिचय

माता-पिता :

श्रीमती इंद्रा बाई-श्री मोतीलाल जी बाफना

धर्मसहायिका :

श्रीमती सरला बाई बाफना

पुत्र, पुत्री :

सुरेश कुमार जी बाफना, सुमनलता जी नाहर, सुतोष कुमारी जी कटारिया

सांसारिक पता :

सुरेंद्र कुमार जी बाफना, 34/25, संयासी सूबेदार स्ट्रीट, आलंदूर, चेन्नई (तमिलनाडु)

- प्रीतेश गादिया

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

चिंतन की कड़ियाँ

जो टूट सकता है, झुक नहीं सकता

अहंकार शुष्क काष्ठ की तरह होता है, जो टूट तो सकता है पर झुक नहीं सकता। शुष्क काष्ठ में संजीवनी रस नहीं होता। यानी उसे जड़ों से मिलने वाला रस मिलता नहीं है। पहले प्राप्त रस सोख गया होता है। अहंकार में भी वात्सल्य रस का संचरण नहीं होता। वह सोख गया होता है। अहंकारी, समुदाय से अलग-थलग पड़ जाता है। वह कहीं नमता है तो भी टाँग अपनी ऊँची रखना चाहेगा। परिणामस्वरूप वह सत्य-शिक्षा अपने में ले नहीं पाता। वह एक सीमित दायरे में ही रह जाता है, विस्तार नहीं पाता। विकास नहीं कर पाता। उसे लगता है उसकी साख ऊँची है, पर एरंड से ऊँची वह नहीं होती। कहा भी है –

आम झुके-इमली झुके, झुके तो दाढ़म दाढ़। एरंड बिचारा क्या झुके, जिसकी ओछी साख।।

वह स्वयं को भले ही तीसमार खां मानकर चले, पर समुदाय में वह इज्जत नहीं पाता। समुदाय का वह एक अंग होता अवश्य है, पर भावात्मक रूप से उसका जुड़ाव उससे नहीं हो पाता। वह प्राय: अतृप्त रहता है। जितना वह चाहता है, उतना मिलता नहीं। इसलिए उसकी अतृप्ति बनी रहती है। अतृप्ति उसे संतुष्टि नहीं दे पाती। वह अशांत अनिश्चय में झूलता रहता है। असंतुष्टि से उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। खीझ उसके इर्द-गिर्द बनी रहती है। ये वे ही सारे घटक हैं जो उसे टूटने की दिशा में गति कराते हैं। हीन-भावना का संबंध दामन-चोली के सदृश हो जाता है। वह धौंस जमाकर अपना रुतबा बनाए रखना चाहता है, जो अल्पजीवी होता है। लंबे समय तक धौंस चल नहीं पाती। इससे उसकी परिणति उत्तेजना की बन जाती है। कभी-कभी तो उत्तेजना इतनी तीव्र हो जाती है कि व्यक्ति की नस फट जाती है, बेहोश हो जाता है। इतना होने पर भी उसकी समझ में यह बात आती नहीं है। वह समझ ही नहीं पाता। (आरोह)

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

सामाजिक कार्य

1.	समता महिला मंडल, ब्यावर द्वारा 11 अप्रैल को ₹11,000/- की राशि जीवदया में दी गई।
2.	बालोद में महावीर गौशाला में जीवदया के तहत गायों को गुड़, रोटी और चारा खिलाया गया एवं पक्षियों के लिए ₹11,000/- की राशि दान स्वरूप भेंट की गई।
3.	छोटी सादड़ी में 50 किलो मक्के के दाने कबूतरों को दिए गए।
4.	डोंगरगाँव में सरकारी अस्पताल में फल, शरबत एवं मट्ठा वितरण किया गया।
5.	राजनांदगाँव में गरीबों की बस्ती में अन्नदान किया गया।
6.	रायपुर में गरीबों में भोजन का भंडारा करवाया गया तथा 250 गमछों का वितरण किया गया।
7.	सिलापथार में 600 राहगीरों को शरबत पिलाया गया।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	All in one, व्याकरण संबधी	ब्यावर	शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा.
2.	आओ जानें जिनशासन को, जीवधड़ा, जैन सिद्धांत बत्तीसी, आशि-विष का थोकड़ा, एकांत नरक में जाने वाले जीव, 10 बातें दिन में नहीं होती 10 बातें रात में नहीं होती, 84 लाख जीवयोनि का थोकड़ा, 14 स्वप्न 6 काय में, 14 स्वप्न गुणस्थान में, मोक्ष के द्वार, 10 श्रावकों का मोबाइल नंबर	बालोद, गुंडरदेही	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.
3.	छठे आरे में नहीं जाने के बोल	राजनांदगाँव	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा.
4.	कौन बनेगा महावीर	बड़ीसादड़ी	शासन दीपिका साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा.
5.	पारिवारिक शिविर	भीलवाड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.
6.	पराक्रम शिविर	तेजपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.

राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा तीन अंचलों का प्रवास संपन्न

छत्तीसगढ़–ओड़िशा अंचल

2 अप्रैल 2025 को आयोजित एक दिवसीय प्रवास के अंतर्गत फूंडा, पाटन, अभनपुर, राजिम, फिंगेश्वर और महासमुंद आदि क्षेत्रों में महिला समिति की सभी प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई। केसरिया कार्यशाला, साधुमार्गी वुमेन्स मोटिवेशनल फोरम, युवती शक्ति और परिवारांजलि आदि प्रवृत्तियों के लिए स्थानीय संयोजिकाओं की नियुक्ति के साथ ही सदस्यों को सभी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया गया।

प्रमुख कार्य : ● परिवारांजलि के अंतर्गत स्टीकर्स पेस्टिंग का कार्य किया गया। ● '**अभिमोक्षम शिविर**', '**उन्नयन शिविर**' व '**I JAIN MY JAIN**' शिविर के लिए प्रभावना की गई। ● '**सज्झायम्मि रओ सया**' के फॉर्म भरवाए गए।

सभी सदस्यों का समर्पण भाव देखकर अत्यंत आनंदानुभूति हुई। इस दौरान शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि जी म.सा. आदि ठाणा एवं शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का सौभाग्य मिला। **- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

मध्य प्रदेश अंचल

यह एक दिवसीय प्रवास 17 अप्रैल 2025 को नारायणगढ़, झारड़ा, रामपुरा, कुकड़ेश्वर, मनासा एवं मोरवन बाँध आदि क्षेत्रों में किया गया। सभा प्रवास स्थलों पर महिला समिति द्वारा संचालित विविध प्रवृत्तियों जैसे संगठन, परिवारांजलि, युवती शक्ति, मोटिवेशनल फोरम, केसरिया कार्यशाला तथा प्रतिक्रमण की विस्तृत प्रभावना की गई। उपस्थित सदस्यों का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

प्रमुख कार्य : ● '**अभिमोक्षम् 2.0**' शिविर के लिए बच्चों के रजिस्ट्रेशन हेतु प्रभावना। ● '**सज्झायम्मि रओ सया**', '**आनंदिनी**' और '**गोल्डन स्टेप्स**' जैसी प्रवृत्तियों से जुड़ने हेतु जानकारी प्रदान कर प्रेरणा दी गई। ● वीर परिवारों का सम्मान कर उन्हें आगे आने के लिए आमंत्रित किया गया। ● संगठन प्रवृत्ति के अंतर्गत

5 बहनों को समिति की आजीवन सदस्यता से जोड़ा गया एवं अन्य बहनों को सदस्यता फॉर्म भरने हेतु प्रेरित किया गया। ● नववधुओं को स्वागत किट देकर समिति से जोड़ा गया। ● परिवारांजलि के अंतर्गत 28 स्टीकर्स पेस्ट किए गए। ● प्रतिक्रमण रजिस्ट्रेशन हेतु श्रावक-श्राविकाओं एवं बच्चों को प्रेरित किया गया। ● सभी क्षेत्रों में प्रवृत्ति संयोजिकाओं की नियुक्ति की गई। ● झारड़ा क्षेत्र में 7 वर्षों पश्चात् नए अध्यक्ष एवं मंत्री का मनोनयन किया गया। ● युवती शक्ति में जुड़ाव हेतु बालिकाओं को जानकारी दी गई एवं मोटिवेशनल फोरम के योग्य सदस्यों को लिंक साझा कर जोड़ा गया। ● केसरिया कार्यशाला के लिए सभी क्षेत्रों ने सक्रिय भागीदारी की सहमति दी। ● पाठशाला संचालन न होने वाले क्षेत्रों में पुनः प्रारंभ हेतु प्रेरणा के साथ सर्वधर्मी सहायता एवं समता छात्रवृत्ति योजनाओं की जानकारी दी गई।

सभी क्षेत्रों के सदस्यों की निष्ठा एवं समर्पणा सराहनीय रही। प्रवासी दल ने शुभ संकल्पों के साथ यात्रा का समापन करते हुए गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। प्रवास में शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. के दर्शन-वंदन का सौभाग्य मिला।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

मेवाड़ अंचल

एक दिवसीय प्रवास में 20 अप्रैल 2025 को बिनोता, भदेसर, सांवलियाजी, लसड़ावन, आवरीमाता (आसावरा), निकुंभ, चिकारड़ा आदि क्षेत्रों में आंचलिक पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही। सभी स्थलों पर आयोजित बैठकों में समिति द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की प्रभावना की गई।

प्रमुख कार्य : ● भदेसर, आवरी माता, चिकारड़ा एवं अन्य स्थलों पर वीर परिवारों से भेंट कर सौहार्दपूर्ण संवाद स्थापित किया गया। ● कुछ क्षेत्रों में नवीन अध्यक्ष, मंत्री एवं प्रवृत्ति संयोजिकाओं की नियुक्ति हुई। ● अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर एकासन की विशेष प्रभावना की गई। ● जिन क्षेत्रों में महिला मंडल सक्रिय नहीं था, वहाँ मंडल की स्थापना हेतु प्रेरणा देकर सभी गतिविधियों में भागीदारी हेतु उत्साहित किया गया। ● प्रतिक्रमण कंठस्थ करने तथा जैन संस्कार पाठ्यक्रम में भाग लेने हेतु प्रेरित किया गया। ● धोवन पानी पीने हेतु प्रभावना की गई। ● 3 नई बहुओं का स्वागत किट देकर सम्मान किया गया। ● आजीवन सदस्यता हेतु 12 फार्म भरे गए। ● परिवारजलि के अंतर्गत नई अंजलियों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया गया। ● '**आनंदिनी : सुखमय जीवन की शुरुआत**' में परिवारों को पंजीकरण हेतु प्रेरित किया गया। ● '**गोल्डन स्टेप्स**' गर्भ संस्कार में भी पंजीकरण हेतु प्रेरणा दी गई। ● सभी प्रवास स्थलों पर स्थानीय सदस्यों से परिचय कर उनके अनुभव साझा किए गए।

इस प्रकार यह प्रवास प्रेरणादायी, सफल और उत्साहवर्धक सिद्ध हुआ। एक दिवसीय प्रवास का समापन संकल्पों के साथ भावी योजनाओं के लक्ष्य की ओर प्रस्थान करते हुए किया गया।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

षष्ठम राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक बीकानेर में संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षा की अध्यक्षता में सत्र 2023-25 की षष्ठम् कार्यकारिणी बैठक 28 अप्रैल को केन्द्रीय कार्यालय बीकानेर में सम्पन्न हुई। बैठक की शुरुआत परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचानाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्र आत्माओं के चरणों में वंदन के साथ हुई। संचालन राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्षा द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया।

राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा गत कार्यकारिणी बैठक के कार्यविवरण की स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात बहू मंडल नियमावली, केन्द्रीय एवं स्थानीय स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों की रूपरेखा, ऑनलाइन-

ऑफलाइन सत्रों से संबंधित नियमावली तथा प्रवास नियम/उपनियम प्रस्तुत किए गए, जिन्हें सभा ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया।

परिवारांजलि – त्रैमासिक रिपोर्ट के अनुसार विगत तीन माह में कुल 244 स्टीकर चिपकाने का कार्य संपन्न हुआ। सभी अंचलों में यह कार्य प्रगति पर है। इसे और गति देने का आग्रह किया गया।

युवती शक्ति – रिपोर्ट में बताया गया कि 12 वर्ष से अधिक आयु की अविवाहित युवतियाँ इस प्रवृत्ति से जुड़ सकती हैं। विगत तीन महीनों में 335 नए पंजीकरण हुए हैं।

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशन फोरम – रिपोर्ट में बताया गया कि गत तीन माह में 24 नई सदस्याएं फोरम से जुड़ी हैं। 22 मार्च को प्रेरणादायक ऑनलाइन महिला गतिविधि '**जिस प्रकार बिज़नेसमैन प्रतिदिन अपना अकाउंट टैली करते हैं, वैसे ही क्या आप अपने कर्मों का अकाउंट टैली करते हैं?**' विषय पर आयोजित की गई, जिसमें लगभग 200 प्रतिभागियों ने भागीदारी निभाई।

सर्वधर्मी सहयोग – जनवरी से मार्च 2025 तक की अवधि में 181 सर्वधर्मी एवं वीर परिवारों को सहायता प्रदान की गई। जिन परिवारों के जीवित प्रमाण पत्र अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं, उन्हें सहायता प्रमाण पत्र प्राप्त होने के पश्चात यह सुविधा पुनः प्रारंभ कर दी जाएगी।

सज्झायम्मि रओ सया – इसके अंतर्गत अब तक कुल 2528 पंजीकरण हो चुके हैं एवं 2255 पुस्तकें वितरित की जा चुकी हैं। जैसे ही यह कार्य पूर्ण होगा, एक साथ 26 आगमों का सामूहिक स्वाध्याय संभव होगा। जो अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

संगठन की राष्ट्रीय संयोजिका ने बताया कि 372 नववधुओं को स्वागत किट वितरित की गई। 21 अप्रैल 2025 को '**आनंदिनी (सुखमय जीवन की शुरुआत)**' कार्यक्रम का ऑनलाइन सफल आयोजन हुआ, जिसमें 100 से अधिक सदस्याओं ने भाग लिया। अभी तक कुल 528 सदस्याओं का पंजीकरण हो चुका है। प्रत्येक क्षेत्र में मंडल प्रारंभ किए जाने हेतु विशेष अनुरोध किया गया। साथ ही सभी अंचल उपाध्यक्षा और मंत्रियों से नए आजीवन सदस्य बनाने का अनुरोध किया गया।

केसरिया कार्यशाला की अंचल संयोजिका ने त्रैमासिक रिपोर्ट में बताया कि श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र के अंतर्गत आचार्य की आठ संपदाओं पर आधारित कार्यशाला श्रृंखला की पूर्णता हो चुकी है। आठवीं संपदा '**संग्रह परिज्ञा संपदा**' पर आधारित कार्यशाला में 1005 से अधिक श्राविकाओं ने सहभागिता निभाई। आगामी कार्यशाला '**समयं गोयम! मा पमायए**' विषय पर आयोजित की जानी संभावना है।

बैठक में श्री अ.भा.सा. जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष का आगमन हुआ, जिनका महिला समिति की राष्ट्रीय महामंत्री जी द्वारा भावाभिनंदन किया गया।

श्रीसंघ राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्‌बोधन – स्वर्णिम दीक्षा महामहोत्सव में उत्कृष्ट भागीदारी के लिए महिला समिति को हार्दिक बधाई देते आपने कहा कि यह साधुमार्गी जैन संघ के इतिहास में प्रथम अवसर है जब कार्यसमिति बैठक का समय परिवर्तित किया गया और सभी बैठकें केंद्रीय कार्यालय में संपन्न हो रही हैं। संघ की उन्नति में महिला समिति की बहनों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। पारिवारिक उत्तरदायित्वों के बीच भी समय का संयोजन कर सेवा कार्य में सक्रिय रहना प्रेरणादायक है। महत्तम महोत्सव के पश्चात सज्झायम्मि रओ सया कार्यक्रम में सभी बहनों की सक्रिय भागीदारी से संघ आश्वस्त है। **अभिमोक्षम् शिविर** की सफलता में महिला समिति की प्रशंसनीय भूमिका रही है। उन्होंने संघ परिवार के प्रत्येक सदस्य से '**इदं न मम**' अभियान से जुड़ने का आग्रह किया और इसे एक मिशन के रूप में लेने की

प्रेरणा दी। इदं न मम योजना की न्यूनतम वार्षिक राशि ₹2,100/- निर्धारित की गई है।

समता छात्रवृत्ति की राष्ट्रीय संयोजिका ने बताया कि साधुमार्गी परिवार के अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को समता छात्रवृत्ति के माध्यम से आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। गत तीन वर्षों में अब तक 326 छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा चुकी है। अधिक से अधिक सहयोग राशि संग्रहित करने का लक्ष्य रखा जाए, ताकि अधिकाधिक जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को इस योजना का लाभ मिल सके।

गोल्डन स्टेप्स कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया गया कि इसका शुभारंभ 6 अप्रैल को किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 5 विशेष सेशन्स आयोजित किए गए, जिन्हें विषय विशेषज्ञ प्रोफेशनल्स द्वारा अत्यंत सराहनीय तरीके से संचालित किया गया। ये सभी सेशन्स महिला समिति के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किए जा चुके हैं। आगामी सेशन्स जून माह में संभावित हैं। महिला समिति का यूट्यूब चैनल औपचारिक रूप से लॉन्च किया गया है। यह चैनल ज्ञानवर्धन और आत्मविकास का प्रभावी माध्यम बनने की दिशा में अग्रसर है।

प्रतिक्रमण अंचल संयोजिका ने जानकारी दी कि प्रतिक्रमण प्रतियोगिता का पुन: शुभारंभ (20 अप्रैल से 30 जुलाई के मध्य किया जा रहा है। जिन बहनों ने प्रतिक्रमण कंठस्थ नहीं किया है, वे अवश्य इस प्रतियोगिता हेतु पंजीकरण कराएं।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा द्वारा सत्र 2024-25 का वार्षिक आय-व्यय विवरण एवं आगामी सत्र 2025-26 के लिए वार्षिक बजट प्रस्तुत किया गया, जिसे सभा से सर्वानुमति से पारित किया। बजट में शामिल योजनाओं एवं व्ययों का पारदर्शी विवरण प्रदान किया गया। आपने अंचलों का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि अब से रसीद बुक केवल उपाध्यक्षा एवं मंत्री को ही प्रदान की जाएगी और उसकी पूर्ण जिम्मेदारी भी इन्हीं की होगी। रसीद बुक का पूर्ण विवरण कार्यालय एवं कोषाध्यक्ष को मोबाइल के माध्यम से अनिवार्य रूप से भेजा जाए। किसी भी प्रकार की नकद राशि किसी के हाथ में नहीं दी जाएगी। सभी संग्रहण संघ के बैंक खाते में जमा किया जाएगा। इस प्रक्रिया से वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी।

अंचलवार त्रैमासिक रिपोर्ट प्रस्तुतिकरण में मेवाड़ अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, बीकानेर-मारवाड़ की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, जयपुर-ब्यावर अंचल की राष्ट्रीय मंत्री, मुम्बई-गुजरात अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा एवं पूर्वोत्तर अंचल की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा आदि ने अपने-अपने अंचल विगतवार स्थिति सदन के पटल पर रखते हुए सक्रिय क्षेत्रों, साप्ताहिक एवं पाक्षिक मंडल संचालित होने, केसरिया कार्यशाला आयोजन, सज्झायम्मि रओ सया, धार्मिक शिविरों, जीवदया एवं चिकित्सा शिविरों सहित विभिन्न मदों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने सभा के समक्ष विगत समय में किए गए सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों की रिपोर्ट के साथ सर्वधर्मी सहयोग तथा अक्षय तृतीया पारणे की जानकारी साझा की।

नोखा में 7 से 9 फरवरी को आयोजित स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव अत्यंत अलौकिक, भव्य और प्रेरणादायी रहा। श्रद्धालुजनों की भावपूर्ण उपस्थिति और विविध आयोजनों ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। समिति ने पूरे आयोजन में सेवा, संयोजन एवं समर्पण के साथ अपनी भूमिका निभाई।

सभा को संबोधित करते हुए बेंगलुरु निवासी पूर्वाध्यक्षा जी ने महिला समिति द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि आगामी अध्यक्षा भी इसी समर्पण भाव और निष्ठा के साथ कार्य करेंगी।

राष्ट्रीय अध्यक्षा उद्बोधन : गुरुवंदना से समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षा जी ने सभा को संबोधित करते हुए आचार्य श्री रामेश को युवाचार्य पद दिए जाने की

स्मृतियों को साझा किया। आपने कहा कि यदि उस समय और आज के संघ की तुलना की जाए तो अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। उपाध्याय प्रवर अपने प्रवचन की शुरुआत और समापन '**गुरु**' शब्द से करते हैं, ठीक वैसे ही हमारा जीवन भी गुरु से प्रारंभ होकर गुरु में ही पूर्ण होना चाहिए। आज हर ओर जो केसरिया परिवेश दिखाई दे रहा है, वह पूर्व अध्यक्षाओं और महामंत्रियों की दूरदर्शी, निःस्वार्थ सेवा और समर्पण की देन है। इस बार बहूमंडल की नियमावली को पारित किया गया है। जहां-जहां बहूमंडल गठन हुआ है, वहां की समितियों के लिए एक सुसंगठित कार्यदिशा सुनिश्चित की गई है, जिससे स्थानीय स्तर पर कार्य में कोई बाधा न आए। पिछले 3 माह में 82 स्थानों पर आंचलिक प्रवास संपन्न हुआ, इसके लिए सभी अंचलों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। **सज्झायम्मि रओ सया** का आयोजन टीम वर्क से सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समिति की 14,000 से अधिक सदस्याओं का डाटा एम.आई.डी. से जोड़ा जा चुका है। ज्यादा से ज्यादा समिति की आजीवन सदस्या बनें। युवती शक्ति मंच के अंतर्गत जो नए कोर्सेज आरंभ हुए हैं, उनमें अधिक से अधिक युवतियों को जोड़ने का लक्ष्य रखें। हम सब फिर से नई उमंग, नई ऊर्जा और संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

देशनोक निवासी पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री ने '**राम जन्मभूमि चातुर्मास**' में सशक्त भागीदारी की अपील की। उन्होंने विशेष रूप से आग्रह किया कि बीकानेर-मारवाड़ अंचल इस चातुर्मास में पूर्ण उत्साह और समर्पण के साथ अपनी भूमिका निभाए।

जयंती बाई श्रमणोपासिका के रूप में **शीलू जी भंडारी, जोधपुर (बीकानेर-मारवाड़ अंचल)** को विजेता घोषित कर ट्रॉफी एवं क्राउन से उत्साहवर्धन किया गया। **युवती शक्ति** के अंतर्गत **बीकानेर-मारवाड़ अंचल** की संयोजिका **नेहा जी संखलेचा (नागौर)** को जयंती बाई श्रमणोपासिका पुरस्कार प्रदान किया गया।

संघ संमर्पणा गीत की पंक्तियों के सामूहिक संगान के साथ सभा का समापन हुआ।

- राष्ट्रीय महामंत्री

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द शब्द सीमा अथवा एक पेज

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी धार्मिक अंक **वर्तमान परिस्थितियाँ और महापुरुषों के वचन (● धर्म : विश्व शांति के परिप्रेक्ष्य में ● धर्म : पर्यावरण सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में ● धर्म : भावी पीढ़ी के निर्माण में)** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

- श्रमणोपासक टीम

9314055390

news@sadhumargi.com

।। जय महावीर।।

।। जय गुरु नाना।। ।। जय गुरु राम।।

सज्झायम्मि रओ सया

सदा स्वाध्याय में रत रहो...

विस्तृत जानकारी

प्रश्न **ये 'सज्झायम्मि रओ सया' क्या है?**

उत्तर ये आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविंद से भीलवाड़ा की धरा पर फरमाया गया '**स्वाध्याय**' का आयाम है।

प्रश्न **इसमें स्वाध्याय किसका होता है?**

उत्तर जैन धर्म में 32 आगम हैं, जिनमें से 26 आगम का श्रावक पठन, पाठन, अध्ययन कर सकते हैं। अत: यह स्वाध्याय इन 26 आगमों का है।

प्रश्न **26 आगमों का स्वाध्याय करना तो काफी मुश्किल होगा?**

उत्तर नहीं! इस आयाम में हमारे 12 अंचल को 4 जोन में विभाजित किया गया है। प्रत्येक जोन में 3 अंचल हैं और प्रतिदिन प्रत्येक जोन के अंतर्गत आने वाले तीनों अंचलों में 26 आगमों का स्वाध्याय करना है।

प्रश्न **एक श्रावक/श्राविका को लगभग कितनी गाथाओं का स्वाध्याय करना होगा?**

उत्तर इसमें प्रत्येक श्रावक-श्राविका लगभग 100 गाथाओं का ही स्वाध्याय करना होगा। इस तरह पूरे एक जोन के श्रावक-श्राविका मिलकर 26 आगमों का स्वाध्याय कर लेंगे।

प्रश्न **ये 100 गाथाएँ कौनसी होंगी?**

उत्तर ये 100 गाथाएँ कौनसी व कौनसे आगम से होंगी ये आपके द्वारा रजिस्ट्रेशन करने पर केंद्र द्वारा आपको भेजी जाएँगी।

प्रश्न **हमने सुना है स्वाध्याय करने से पहले इसकी वाचनी लेनी चाहिए?**

उत्तर हाँ! आपने सही सुना है। स्वाध्याय की वाचनी चारित्रात्माओं से लेनी चाहिए। अगर किसी क्षेत्र में चारित्रात्माओं का विराजना न हो तो वरिष्ठ श्रावक/श्राविका से भी ले सकते हैं।

प्रश्न **क्या इसके समय संबंधित कुछ नियम भी होते हैं या और भी कुछ...?**

उत्तर इन 26 आगमों में से ज्यादातर आगम कालिक हैं और कुछ एक उत्कालिक -

- आपको जो स्वाध्याय पुस्तिका दी जाएगी, जिस पर इसका उल्लेख होगा।
- आपको स्वाध्याय पुस्तिका के अंदर अस्वाध्याय के 32 कारण, यानी किन कारणों के उपस्थित होने पर आप स्वाध्याय नहीं कर सकते वो भी दिया जाएगा। कालिक और उत्कालिक संबधी नियम भी पुस्तिका में दिए गए हैं। आप उनका अध्ययन व पालन अवश्य करें। स्वाध्याय पुस्तिका

में जो पुस्तिका **नीले** रंग की है वो उत्कालिक है तथा जो **लाल** रंग की है वो कालिक है।

प्रश्न और क्या करना होगा?

उत्तर आपका स्वाध्याय जब हो जाए तब अंत में '**आगमे तिविहे**' का पाठ पढ़ना/बोलना होगा। यह पाठ भी आपकी स्वाध्याय पुस्तिका में दिया गया है।

प्रश्न यह आयाम कितने समय के लिए ग्रहण करना है?

उत्तर इस आयाम में आपको दो विकल्प उपलब्ध हैं। आप चाहें तो इसको आजीवन के लिए ग्रहण कर सकते हैं, नहीं तो तीन साल की अवधि के लिए भी ग्रहण कर सकते हैं। तीन साल के बाद जो आगे जारी रखना चाहते हैं वो इसको अवश्य जारी रखें तथा जो किन्हीं कारणों से जारी नहीं रख सकते वो पुस्तिका के पीछे दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करके 3 साल पूर्ण होने के 3 माह पूर्व इसकी जानकारी दे देवें।

प्रश्न स्वाध्याय करने से क्या लाभ होता है?

उत्तर हमारे ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होता है और संपूर्ण ज्ञानावरणीय कर्मों का क्षय होने पर हमें केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है।

प्रश्न सबसे जरूरी बात यह कि इस आयाम से कैसे जुड़ें?

उत्तर ये बहुत ही सरल प्रक्रिया है। आपको समय-समय पर इस आयाम से जुड़ने के लिए इसका रजिस्ट्रेशन लिंक व्हॉट्सएप ग्रुप के माध्यम से भेजा जाता है। अगर आप ऑनलाइन फॉर्म नहीं भरा है तो इसके लिए ऑफलाइन फॉर्म भी उपलब्ध है, जिसे भरकर आप इससे जुड़ सकते हैं। ऑफलाइन फॉर्म और ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें - **63756 33109**

प्रश्न क्या इसका स्वाध्याय कंठस्थ करना अनिवार्य है ?

उत्तर नहीं! ये बिल्कुल भी अनिवार्य नहीं है। आप इसे देखकर पढ़ सकते हैं (समय का ध्यान रखते हुए)। निरतंर पढ़ते हुए हमें याद हो ही जाएगा, तब हमारे लिए ये बहुत ही आसान हो जाएगा।

प्रश्न हमने सुना है कि ये स्वाध्याय हर दिन करना है, इसमें कोई अवकाश नहीं है?

उत्तर जब अस्वाध्याय के 32 कारण उपस्थित हों और श्राविका वर्ग का व्यक्तिगत अस्वाध्याय हो तो बिलकुल नहीं करना है, न किसी से करवाना है। इसके अतिरिक्त हर दिन करना है।

प्रश्न अगर कहीं यात्रा या कुछ ऐसी परिस्थिति हो जिससे हम नहीं कर सकें, तब?

उत्तर आप इसकी व्यवस्था अपने दूसरे स्वाध्यायी मित्र, रिश्तेदार, पारिवारिक जन के साथ कर सकते हैं। आप इस स्वाध्याय की एक कॉपी ऐसे व्यक्ति को दे देवें, जो आपके स्थान पर कर सके तथा उनके स्वाध्याय की एक कॉपी आप भी ले लेवें। इस तरीके से आप अपने स्वाध्याय को व्यवस्थित एवं नियमित रूप से कर सकते हैं।

प्रश्न मैंने पहले 100 गाथा स्वाध्याय करने के आयाम में भाग लिया हुआ है, मैं क्या कर सकता हूँ?

उत्तर जिन्होंने पहले 100 गाथा के आयाम में अपने आपको जोड़ा था वो इस आयाम में रजिस्ट्रेशन

करवा सकते हैं। उन्हें इस आयाम में अवश्य रजिस्ट्रेशन करवाना चाहिए, जिससे कि उनके 100 गाथाओं के स्वाध्याय का नियम भी पूर्ण हो जाएगा और वे 26 आगमों के स्वाध्याय की भी एक महत्वपूर्ण कड़ी बनकर विशेष निर्जरा कर पाएँगे।

प्रश्न **पहले भी तो 100 गाथा के स्वाध्याय का आयाम आया था। फिर पहले के आयाम और 'सज्झायम्मि रओ सया' में क्या भिन्नता है?**

उत्तर पहले के आयाम में सब व्यक्तिगत तौर पर 100 गाथा का स्वाध्याय कर रहे थे, लेकिन इस आयाम में आपकी यह 100 गाथा 26 आगमों के स्वाध्याय की महत्वपूर्ण कड़ी होगी। इस तरह आप 26 आगमों के नियमित स्वाध्याय का हिस्सा बनकर विशेष निर्जरा के पथिक बनते हैं।

प्रश्न **स्वाध्याय किस तरह करना चाहिए ?**

उत्तर स्वाध्याय मुँहपत्ती लगाकर संवर या सामायिक में करना चाहिए। सामायिक नहीं भी करें तो 10-15 मिनट का संवर लेकर उसमें भी कर सकते हैं।

प्रश्न **मुझे कोई भी जानकारी चाहिए तो मैं किससे संपर्क करूँ?**

उत्तर आपकी स्वाध्याय पुस्तिका के पीछे हेल्पलाइन नंबर दिया गया है तथा आपकी सुविधा के लिए यहाँ भी मोबाइल नंबर दे रहे हैं – 63756 33109

प्रश्न **इस आयाम में रजिस्ट्रेशन कब तक करवाया जा सकता है?**

उत्तर हमारा निवेदन है कि आप शीघ्रातिशीघ्र इसमें रजिस्ट्रेशन करवाएँ। वैसे ये आयाम कभी भी ग्रहण किया जा सकता है। ये आयाम निरंतर चलता ही रहेगा।

प्रश्न **क्या 100 से भी अधिक यानी 200, 300 गाथाओं का स्वाध्याय किया जा सकता है?**

उत्तर हाँ! बिलकुल किया जा सकता है। आप अगर ज्यादा स्वाध्याय करना चाहें तो आपको उसी हिसाब से 2-3 पुस्तिकाएँ भेज दी जाएँगी।

रजिस्ट्रेशन अभी भी चालू है। जिन्होंने अभी तक नहीं करवाया है, वे जल्द से जल्द करवावें।

Scan me For Registration

Zone - 1
1. मेवाड़
2. जयपुर–ब्यावर
3. दिल्ली–पंजाब हरियाणा

पंजीकरण - 718

Zone - 2
1. बीकानेर–मारवाड़
2. बंगाल–बिहार
3. पूर्वोत्तर

पंजीकरण - 483

Zone - 3
1. मध्य प्रदेश
2. मुंबई–गुजरात
3. महाराष्ट्र–विदर्भ खानदेश

पंजीकरण - 737

Zone - 4
1. छ.ग.–ओड़िशा
2. कर्नाटक–आंध्र.
3. तमिलनाडु

पंजीकरण - 636

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (अप्रैल 2025)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	06-04	13-04	20-04	27-04
1.	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1250	1250	1278	1424
		आंचलिक क्षेत्र	85	87	86	88
2.	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	702	1196	1304	1493
		आंचलिक क्षेत्र	41	43	42	45
3.	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	410	418	407	452
		आंचलिक क्षेत्र	22	22	22	22
4.	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	593	690	953	770
		आंचलिक क्षेत्र	68	71	67	65
5.	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	1824	1824	1567	1878
		आंचलिक क्षेत्र	143	150	141	142
6.	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	245	260	261	344
		आंचलिक क्षेत्र	23	25	22	18
7.	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	221	198	438	206
		आंचलिक क्षेत्र	14	14	17	15
8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	497	530	512	529
		आंचलिक क्षेत्र	19	19	22	22
9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	501	382	469	481
		आंचलिक क्षेत्र	45	36	45	48
10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	298	342	333	281
		आंचलिक क्षेत्र	41	42	38	38
11.	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	232	265	254	273
		आंचलिक क्षेत्र	38	35	40	38
12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	आंचलिक उपस्थिति	74	140	63	65
		आंचलिक क्षेत्र	8	6	5	7
13.	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	9	56	8	10
		आंचलिक क्षेत्र	5	5	4	5
	संयुक्त रिपोर्ट					
	कुल उपस्थिति		6856	7551	7847	8206
	कुल क्षेत्र		552	555	551	553

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत माह संपन्न कार्यक्रमों का विवरण – **1.** नागपुर निवासी सरिता मनोज जी सुराणा का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 06 अप्रैल को नागपुर में सम्पन्न हुआ। **2.** चेन्नई निवासी विमलचंद जी निर्मल कुमार जी लोढ़ा के सुपुत्र विशेष का मंगल परिणयोत्सव 13 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **3.** चित्तौड़गढ़ निवासी भावना जी-जितेन्द्र जी बाघमार के सुपुत्र रितिक का मंगल परिणयोत्सव भीलवाड़ा निवासी रेखा जी-अरविंद जी सुराणा की सुपुत्री तेजस्वी के साथ 16 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **4.** चित्तौड़गढ़ निवासी निर्मला जी-अनिल जी दलाल के सुपुत्र परीक्षित का मंगल परिणयोत्सव ब्यावर निवासी शकुन्तला देवी-कमल कुमार जी बड़जात्या की सुपुत्री मीनल के साथ 20 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **5.** बड़ीसादड़ी निवासी मंजुलता जी-कुंदनमल जी मारू के सुपौत्र एवं अल्का जी-विशाल जी मारू के सुपुत्र हितार्थ का मुंडन संस्कार कार्यक्रम 20 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **6.** बड़ीसादड़ी निवासी प्रमिला जी-चेतन कुमार जी मेहता के सुपुत्र चिराग का मंगल परिणयोत्सव पाली निवासी इंद्रा देवी-दिनेश जी नागौरी की सुपुत्री मीनल के साथ 20 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **7.** कानोड़ निवासी मुंबई प्रवासी नक्षत्रमल जी मनोज जी धींग की सुपुत्री प्रांशी के प्रथम जन्मदिवस पर आयोजित कार्यक्रम 22 अप्रैल को मुंबई में सम्पन्न हुआ। **8.** नोखागाँव निवासी पूनम चन्द जी किशन कुमार जी लुणावत का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 25 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। **9.** देशनोक निवासी पानमल जी सांड की सुपुत्री पायल का मंगल परिणयोत्सव देशनोक निवासी प्रदीप जी हीरावत के सुपुत्र अरिहन्त के साथ 29 अप्रैल को सम्पन्न हुआ। दोनों परिवारों में उत्क्रांति नियमों की पालना की गई। **10.** देशनोक निवासी कन्हैयालाल जी बैद का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 3 मई को सम्पन्न हुआ। **11.** मुंबई निवासी सुरेंद्र जी मालती जी दस्साणी का नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम 4 मई को सम्पन्न हुआ। **12.** चेन्नई निवासी पदम कुमार जी बांठिया के सुपुत्र शुभम का मंगल परिणयोत्सव 4 मई को सम्पन्न हुआ।

आरोग्यम्

स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें!! 'स्वास्थ्य ही जीवन है'

13 से 20 अप्रैल, 2025। महावीर जयंती के पावन अवसर पर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के अंतर्गत सामाजिक सरोकारों की श्रृंखला में जरूरतमंदों को निःशुल्क स्वास्थय जाँच एवं चिकित्सा परामर्श उपलब्ध कारवाई गई, जिनमें सामान्य जाँच एवं परामर्श, ब्लड शुगर टेस्ट, आँखों की जाँच, दंत जाँच, आहार परामर्श आदि शामिल थे। कार्यक्रम में सहभागी 27 संघ/क्षेत्रों में कुल 28 शिविर आयोजित हुए। कार्यक्रम हेतु प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्रदान करने वाले सभी गुरुभक्तों, संघनिष्ठ सदस्यों का हृदय से आभार एवं साधुवाद।

मेवाड़ अंचल

- **भीलवाड़ा :** समता युवा संघ द्वारा 22 अप्रैल को अरिहंत हॉस्पिटल एंड रिसर्च संस्थान के सहयोग से निःशुल्क नेत्र जाँच एवं परामर्श शिविर में नेत्र संबंधी सभी टेस्टिंग एवं चिकित्सक परामर्श उपलब्ध करवाया गया।

- **उदयपुर :** 20 अप्रैल को समता युवा संघ द्वारा नानेश ध्यान केंद्र, सुन्दरवास में नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इसमें चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा 230 रोगियों को परामर्श दिया गया। इसके अंतर्गत हार्ट अवेयरनेस कार्यक्रम में अहमदाबाद के प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. लाल जी डागा ने अत्यंत उपयोगी जानकारी दी। शिविर में न्यूरो, स्त्री रोग, दंत चिकित्सा, फिजियोथेरेपी, फिजिशियन, आयुर्वेद एवं होम्योपैथी, ईसीजी, एक्सरे, शुगर, बीपी जाँच आदि जाँच व सेवाएँ नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गई। शिविर में अपोलो हॉस्पिटल, अहमदाबाद, मैगस हॉस्पिटल, दिवा डेंटल, रिवाइव फिजियोथेरेपी, केंट होम्यो एवं वैद्य शोभालाल जी औदिच्य, उयपुर आदि की विशेषज्ञ टीमों ने सेवाएँ दी।

जयपुर-ब्यावर अंचल

- **जयपुर :** 22 अप्रैल को समता युवा संघ द्वारा अमर जैन हॉस्पिटल में आरोग्यम् शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 291 सदस्यों ने मुफ़्त चिकित्सकीय परामर्श का लाभ लिया एवं 181 जाँचें की गई।

छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल

- **नगरी :** समता युवा संघ द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें जिला कलेक्टर एवं जिला स्वास्थ्य विभाग अधिकारियों के विशेष सहयोग के साथ आयुष जिला चिकित्सा, आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक, एलोपैथिक एवं नेत्र परीक्षण तथा चश्मा वितरण के लिए चिकित्सकों द्वारा परामर्श एवं उपचार के साथ दवाइयों का वितरण किया गया। लगभग 509 मरीजों ने लाभ लिया एवं 400 से अधिक लोगों को चश्मों का वितरण किया गया। • **गुण्डरदेही :** 29 अप्रैल को समता युवा संघ में आरोग्यम् शिविर का आयोजन में 100 से अधिक लोगों ने नेत्र जाँच का लाभ लिया।

कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल

- **मैसूर :** 4 मई को समता युवा संघ द्वारा समता भवन में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन एटीडीसी के सहयोग से किया गया था, जिसमें आँखों, दांतों, हड्डियों, बीपी, शुगर आदि की जाँच का लाभ 75 जनों ने लिया।
- **हैदराबाद :** समता युवा संघ द्वारा स्टार हॉस्पिटल के सहयोग से नि:शुल्क स्वस्थ्य जाँच शिविर में बीपी, शुगर, ईसीजी, लंबाई, वजन, एसओपी2, 2डी इक्को, गर्भाशय ग्रीवा कैंसर और मुँह के कैंसर की स्क्रीनिंग व चिकित्सकीय सेवाएँ नि:शुल्क उपलब्ध करवाई गई। शिविर से 183 लोग लाभांवित हुए।

मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल

- **सूरत :** 20 अप्रैल को समता युवा संघ द्वारा भेड़माल गांव (डांग) में आस-पास के 10 गाँवों हेतु चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया, जिसमें बीपी, शुगर आदि जाँचों का लाभ 468 लोगों ने लिया। दवाइयों का वितरण किया गया। 250 से अधिक जरूरमंदों को चश्मों का वितरण किया गया। • **बारडोली :** 27 अप्रैल को जेसीआई एवं समता युवा संघ द्वारा आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर में दाँतों, हड्डियों की जाँच, जनरल चेकअप का लाभ 125 से अधिक जनों ने लिया। • **मुंबई :** 27 अप्रैल को समता युवा संघ द्वारा नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन आचार्य श्री नानेश हॉस्पिटल, बेलापुर में किया गया। इसके अंतर्गत रक्त, हृदय, हड्डी आदि की नि:शुल्क जाँच कर जरूरतमंदों को नि:शुल्क दवाइयाँ वितरित की गई।

महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल

- **धुलिया :** 19 अप्रैल को समता युवा संघ द्वारा आयोजित दंत चिकित्सा शिविर में 75 से अधिक लोग लाभांवित हुए। ● **गेवराई :** समता युवा संघ में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर व ब्लड डोनेशन कैंप लगाया गया, जिनमें 200 से अधिक लोगों ने जाँच एवं 25 जनों ने ब्लड डोनेट का लाभ लिया। हड्डियों, यूरिक एसिड, कैल्शियम आदि जाँचें की गई। ● **वाण्याविहीर :** 15 अप्रैल 2025 को स्थानीय संघ के अंतर्गत सरकारी हॉस्पिटल में गर्भवती महिलाओं के लिए जाँच शिविर रखा गया। गर्भवती महिलाओं को दवाइयाँ वितरित की गई। लगभग 20 महिलाओं ने लाभ लिया।

बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा अंचल

- **हावड़ा :** समता युवा संघ में 100 व्यक्तियों को स्वास्थ्य चिकित्सा जाँच, नेत्र चिकित्सा एवं हड्डी रोग का लाभ मिला। 17 से अधिक व्यक्तियों को चश्मा वितरण एवं दो सदस्यों का मोतियाबिंद ऑपरेशन कराया गया।
- **कोलकाता :** समता युवा संघ ने निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया- 19 अप्रैल को समाज के कमजोर वर्ग के लिए श्री जैन अस्पताल में स्वास्थ्य शिविर में 400 से अधिक रोगियों की रक्त शर्करा (पीपी), ईसीजी, रक्तचाप और बायोमेट्री जाँच की गई। 27 अप्रैल को श्री जैन विद्यालय में 325 चश्मों का वितरण जरूरतमंदों को किया गया। 06 मई को नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. विवेक वर्मा द्वारा श्री जैन अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र में 27 मोतियाबिंद सर्जरी की गई। इससे पहले 03 मार्च को समता युवा संघ और समता महिला समिति के 24 सदस्यों की टीम ने मिलकर लक्षवार प्रवास किया। नेत्र शिविर में मोतियाबिंद के 205 ऑपरेशन किए गए।

पूर्वोत्तर अंचल

- **गुवाहाटी :** समता युवा संघ द्वारा 25 अप्रैल को समता भवन में आयोजित नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में लगभग 200 लोगों को विभिन्न चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा सेवाएँ प्रदान की गई। हार्ट अवेयरनेस कार्यक्रम में प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. चंदन मोदक ने उपयोगी जानकारी साझा की। इनके अलावा इ.एन.टी. कैंसर स्पेशलिस्ट डॉ. बी.सी. राय, चेस्ट स्पेशलिस्ट डॉ. सुरेश शर्मा, डेंटल सर्जन डॉ. सयदा समिमा, त्वचा विशेषज्ञ डॉ. बोरनाली डेका, चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. प्रियंका जैन व सहयोगियों ने नि:शुल्क सेवाएँ दी। लिवर फायब्रूस्कैन, पी.एफ.टी, ईसीजी, लिपिड प्रोफाइल, बीपी, शुगर जाँच व दवाइयाँ नि:शुल्क उपलब्ध कराई गई। ● **सिलचर :** 20 अप्रैल को समता युवा संघ में नि:शुल्क दंत चिकित्सा जाँच का आयोजन जैन भवन में किया गया, जिसमें 58 जरूरतमंदों ने लाभ लिया। नि:शुल्क दवाइयां भी दी गई। ● **बंगईगांव एवं बिजनी :** 13 अप्रैल 2025 को बंगईगांव पीएचसी अस्पताल में स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। 15 लोग लाभांवित हुए।

दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल

- **दिल्ली :** 14 अप्रैल को समता युवा संघ, दिल्ली द्वारा अपोलो इंद्रप्रस्थ हॉस्पिटल के सहयोग से नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का शुभारंभ मुमुक्षु बहनों अंशिका जी व स्नेहा जी सुराणा द्वारा मंगलाचरण से हुआ। समता भवन में आयोजित इस शिविर में 12 प्रकार की टेस्टिंग एवं चिकित्सकीय परामर्श सहित बी.पी., शुगर, कोलेस्ट्रॉल/टीएसएच, नेत्र, **Nueropathy**, **Bone Mass Density** आदि जाँचें व विभिन्न परामर्श नि:शुल्क उपलब्ध कराया गया। शिविर में 104 लोग लाभान्वित हुए।

और भी अनेक संघों में आरोग्यम् - नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर सम्पन्न हुए।

द्वितीय राष्ट्रीय कार्यसमिति सभा बीकानेर में संपन्न

गंगाशहर-भीनासर, 29 अप्रैल 2025। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में सत्र 2024-26 की द्वितीय कार्यसमिति सभा का आयोजन केन्द्रीय कार्यालय में किया गया। मंगलाचरण समता युवा संघ, गंगाशहर-भीनासर के युवा साथियों द्वारा किया गया।

समता युवा संघ, गंगाशहर-भीनासर के अध्यक्ष द्वारा सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों के भावाभिनन्दन पश्चात् उपस्थित सदस्यों के परस्पर परिचय का क्रम हुआ एवं विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान सम्पूर्ण सदन द्वारा किया गया।

युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पधारे हुए युवा साथियों का आत्मीय स्वागत करते हुए अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि समय निरंतर अपनी गति से चल रहा है। उसे आज तक न कोई रोक पाया है और न आगे कोई रोक पाएगा। महापुरुषों के आशीर्वाद से कीर्तिमानों के साथ सत्र 2024-26 के लगभग 200 दिन पूर्ण हो चुके हैं। हम सभी का एकमात्र लक्ष्य हैं - हमारी आस्था के केंद्र आचार्य भगवन्, हमारे मार्गदर्शक उपाध्याय प्रवर व इस जिनशासन को दैदीप्यमान करने वाले अनेक संत-सतियाँ जी म.सा.। हम सब संघ कार्यों को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए पूर्ण समर्पण एवं प्रयास के साथ जुटे रहते हैं। हमारा उद्देश्य जिनशासन की गरिमा को और अधिक उज्ज्वल बनाना है। परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की कृपा से श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ निरंतर संघ सेवा में उनके दिए हुए आयामों को, सत्संकल्पों को घर-घर तक पहुँचा रहा है। हम सभी ने मिलकर स्वर्णिम दिवस – महत्तम ग्रैंड फिनाले (9 फरवरी 2025) को हर्षोल्लास से मनाया। यह एक ऐसा आलौकिक और अविस्मरणीय अवसर था, जिसकी साक्षी वह सभा बनी, जिसमें आप सभी सदस्य उपस्थित थे। एतदर्थ आप सभी को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

आचार्य भगवन् एवं आपश्री के सान्निध्यवर्ती चारित्रात्माएँ निरंतर जिनशासन की प्रभावना करते हुए अपने ज्ञान और क्रिया का भव्य रूप हमारे समक्ष प्रकट कर रहे हैं। हम सब उनके चरणों में श्रद्धा और समर्पण के साथ जुड़े हुए हैं। आप सभी ने महत्तम महोत्सव में अपनी-अपनी क्षमता से कहीं अधिक प्रयास और परिश्रम किया और अद्वितीय समर्पण और अटल भक्ति के साथ यह कार्य सफल बनाया। आपके इस भावपूर्ण समर्पण को, आपकी भक्ति को मैं हृदय से नमन करता हूँ। विगत तीन माह में आप सभी के अथक प्रयासों से संघ के अनेक कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुए। विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि लगभग 750 युवा साथियों ने प्रतिक्रमण कंठस्थ करने की शुरुआत की, जिनमें से 166 युवाओं ने पूर्ण रूप से प्रतिक्रमण कंठस्थ कर लिया। यह हमारे लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। हमें उन 500 युवा साथियों के प्रति भी उत्तरदायित्व निभाना है, जिन्हें अभी प्रतिक्रमण कंठस्थ करवाना शेष है।

जो समय बीत गया वह बीत गया अब आने वाले समय में और अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करना है। यदि कभी लगे कि वातावरण हमें अपेक्षित सहयोग नहीं दे रहा तो हमें रुकना नहीं है बल्कि स्वयं किसी और का सहारा बनकर कार्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाना है। यही हमारा संकल्प होना चाहिए। यह पावन स्थान त्रिवेणी संघ के रूप में ख्यातिलब्ध है। गंगाशहर, भीनासर और बीकानेर की पुण्यभूमि की मिट्टी का हम सभी पर अपार उपकार है। हमें ऐसा नहीं करना कि हाथ में आई रेत बस बह जाए, बल्कि हमें ऐसा कार्य करना है कि जो चंदन हथेली पर आया है, उसे मस्तक पर लगाएं। साधक बनते हुए अपने कार्य को अपने लक्ष्य तक पहुँचाएं। यह काया नश्वर है। निश्चित ही मिट्टी में मिल जाएगी। जो समय हमें मिला है, उसे धर्म-साधना में लगाना है। एक पल भी व्यर्थ नहीं गंवाना।

राष्ट्रीय महामंत्री ने प्रथम राष्ट्रीय कार्यसमिति सभा के मिनिट्स को अनुमोदना हेतु सभा के पटल पर रखा, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा 16.12.2024 से 31.03.2025 तक का प्रगति प्रतिवेदन पीपीटी के माध्यम से सदन में प्रस्तुत किया गया। सभा में आगामी कार्य योजनाओं पर विचार-विमर्श हुआ। तत्पश्चात् उपस्थित सभी उपाध्यक्षों ने अपने-अपने अंचल का विगत 3 माह का प्रगति प्रतिवेदन सदन के समक्ष प्रस्तुत किया। विगत तीन माह में संपन्न हुए सामाजिक कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी राष्ट्रीय सामाजिक संयोजक ने सभा में प्रस्तुत की।

पधारे हुए सभी सदस्यों का एवं गंगाशहर-भीनासर समता युवा संघ द्वारा आतिथ्य सत्कार और सुन्दर व्यवस्था के लिए राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रत्युत्तर में समता युवा संघ, गंगाशहर-भीनासर के मंत्री द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

'तेरे पावन चरणों में...' गीत की पंक्तियों के सामूहिक गान एवं राम गुरु के जयकारों के साथ सभा विसर्जित हुई।

- राष्ट्रीय महामंत्री

विविध समाचार

- समता युवा संघ, वडोदरा में अमृतम् प्रकल्प में 13 अप्रैल को 400 से अधिक लोगों को छाछ वितरण की गई।
- समता युवा संघ, शहादा द्वारा 10 अप्रैल को 300 से अधिक जरूरतमंदों को भोजन करवाया गया। आयोजन में लगभग 30 युवा साथियों ने सेवाएँ प्रदान की।
- अमृतम् प्रकल्प के अंतर्गत समता युवा संघ, अहमदाबाद द्वारा 4000 से अधिक ग्लास शरबत का वितरण किया गया।
- समता युवा संघ, गुवाहाटी द्वारा 4 मई को ध्यान फाउंडेशन, गुवाहाटी गौशाला में वृक्षारोपण किया गया। गौसेवा हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।
- समता युवा संघ, इंदौर द्वारा 2-3-4 मई को त्रिदिवसीय धार्मिक शिविर समता भवन यशवंत निवास रोड में आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 110 बच्चों ने भाग लिया।

हमने परमात्मा को सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, निरंजन, निराकार माना है। निराकार परमात्मा अर्थात् ऐसा परमात्मा जिसका आकार-प्रकार नहीं, जिसमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं। आचारांग सूत्र में कहा गया है- जिसमें वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, जो दीर्घ नहीं ऐसे स्वरूप वाला परमात्मा कहाँ से और कैसे उत्तर देगा? उत्तर देने के लिए वचन की जरूरत होती है, यद्यपि वचन के बिना भी उत्तर दिया जा सकता है। कान से कम सुनने वालों या बधिरों को इशारे से समझाया जाता है यद्यपि इशारे के लिए भी काया की जरूरत होती है। पर उनके तो काया भी नहीं है। ऊपर के देवलोक के देव कभी-कभी अरिहंत प्रभु से प्रश्न पूछते हैं तब प्रभु वचन और काया से नहीं, किंतु मनोवर्गणा को उस प्रकार का अवस्थान करते हैं और उससे वे देव मंतव्य समझ लेते हैं। तात्पर्य यह है कि उत्तर देने के लिए कोई-न-कोई पौद्गलिक यंत्र चाहिए। आप यंत्रों का तात्पर्य अप्राकृतिक यंत्र न लें। यद्यपि वे भी सहयोगी होते हैं, पर आत्मा के भीतर के यंत्र स्वतः तैयार होते हैं और विकसित होते हैं। बाहर के यंत्र इन्हें प्रकट नहीं कर सकते। बाहर के यंत्रों को निर्मित किया जाता है, पर यदि भीतर के यंत्र नहीं हैं तो ये बाह्य यंत्र निरर्थक होगें। यंत्रों के माध्यम से उत्तर दिया जा सकता है, पर सिद्ध भगवान के पास ये यंत्र नहीं हैं। न इन यंत्रों के माध्यम से वे उत्तर देते हैं, फिर भी कवि उत्तर पाते हैं और वे यह उत्तर पाते हैं अपनी आत्मा में।

- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

॥ जय गुरु नाना ॥ ॥ जय महावीर ॥ ॥ जय गुरु राम ॥

राम चमकते भानु समाना

जैन संस्कार पाठ्यक्रम

(अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

भाग 1 से 12

Open Book परीक्षा

परीक्षा दिनांक- 22 जून 2025

NO AGE LIMIT

परीक्षा समय-12:30 से 3:30

-: परीक्षा के नियम :-

1. 14 सितंबर 2025 को जो लिखित परीक्षा होगी उसमें भाग लेने वाले परीक्षार्थी ही ओपन बुक परीक्षा में भाग ले सकते हैं।
2. परीक्षार्थी परीक्षा स्थल पर अपनी पुस्तक स्वयं लेकर आवें, अगर पुस्तक नहीं है तो स्थानीय प्रतिनिधि से संपर्क करे या हेल्पलाइन पर सूचित करें।
3. पेपर परीक्षा से पूर्व स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री अथवा प्रतिनिधि को ऑनलाइन भिजवाएँ जाएँगे और परीक्षा होने के बाद पेपर बीकानेर केंद्रीय कार्यालय भिजवाने होंगे।
4. परीक्षा उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को ई-सर्टिफिकेट भिजवाएँ जाएँगे।

Helpline No : ☎ 7231933008

॥ जय गुरु नाना ॥

॥ जय महावीर ॥

॥ जय गुरु राम ॥

राम चमकते भानु समाना

अक्षय तृतीया के पावन अवसर से प्रारंभ होने वाला

समता जल सेवा प्रकल्प

अमृतम्

"सेवा की एक बूँद, जीवन का अमूल्य रस!"

दिनांक: 30 अप्रैल 2025 से लेकर ग्रीष्म ऋतु तक

जल-सेवा कहाँ कर सकते हैं ?

1. बस स्टैंड, रेलवे स्टैंड, हॉस्पिटल, प्रतीक्षालय।
2. विद्यालय, सार्वजनिक स्थान, व्यस्त मार्ग।
3. स्थानीय भौगोलिक परिस्थिति अनुरूप स्थान का चयन।

जल-सेवा में ध्यान रखने योग्य बातें-

1. स्थान का चयन स्थानीय प्रशासनिक नियमानुसार हो।
2. स्थान साफ-सुथरा व स्वच्छ हो और वहाँ पानी का भराव न हो।
3. स्थानीय सदस्य देखरेख कर सकें, ऐसा स्थान हो।

सभी संघों से निवेदन ग्रीष्मकाल में प्याऊ संचालन का लक्ष्य रखें।

Save Water - Save Earth

टीम सामाजिक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

(अंतर्गत श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

Jai GURU NANA

JAI MAHAVEER

JAI GURU RAM

राम चमकते भानु समाना

साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम

(श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत)

आ रहा है अनोखा कार्यक्रम लेकर

संवाद

CONNECT
COMMUNICATE
COLLABORATE

12 अंचल **12** विषय **12** पावर पैक सेशन

कौन भाग ले सकता है?

☑ यह आयोजन सभी व्यवसायियों, पेशेवरों, छात्रों, उत्साही लोगों के लिए खुला है, जो ज्ञान, विकास और नेतृत्व के प्रति रुचि रखते हैं। जो उद्योग की नवीनतम जानकारियाँ पाना, नेटवर्क बढ़ाना, कौशल निखारना या सामाजिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों में योगदान देना चाहते हैं

SPF लेकर आ रहा है आँचलिक प्रोग्राम

हर महीने के पहले

रविवार

संवाद 2025
पंजीकरण हेतु

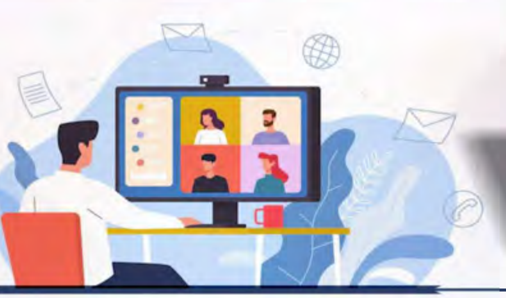

SPF नये सदस्य
पंजीकरण हेतु

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

+91 98997 48627 | +91 90247 33251 | +91 89556 66999 | +91 9422314905

@ANINES.IN

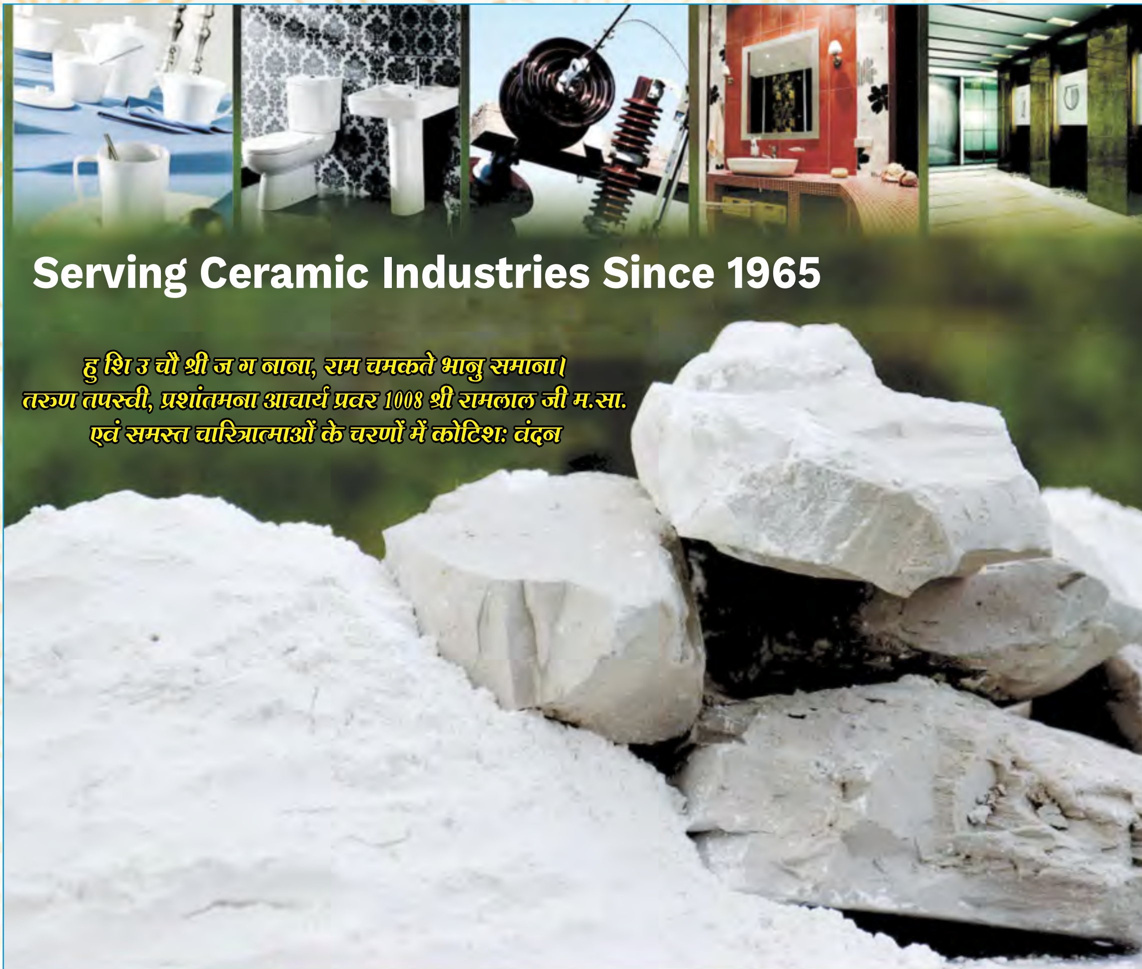

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/-	(15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/-	(10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. :	31264126681
IFSC Code :	SBIN0003401
Branch :	G.S. ROAD, Bikaner
Mob. :	7073311108
E-mail :	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें।
इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।
कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्रीसंघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केंद्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना अवश्य देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.: 7073311108 (WhatsApp)

संघ में आपके सहयोग एवं सदस्यता की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने व ऑनलाइन भुगतान करने हेतु नीचे दिए लिंक पर क्लिक करें।

https://donorportal.sadhumargi.com/login

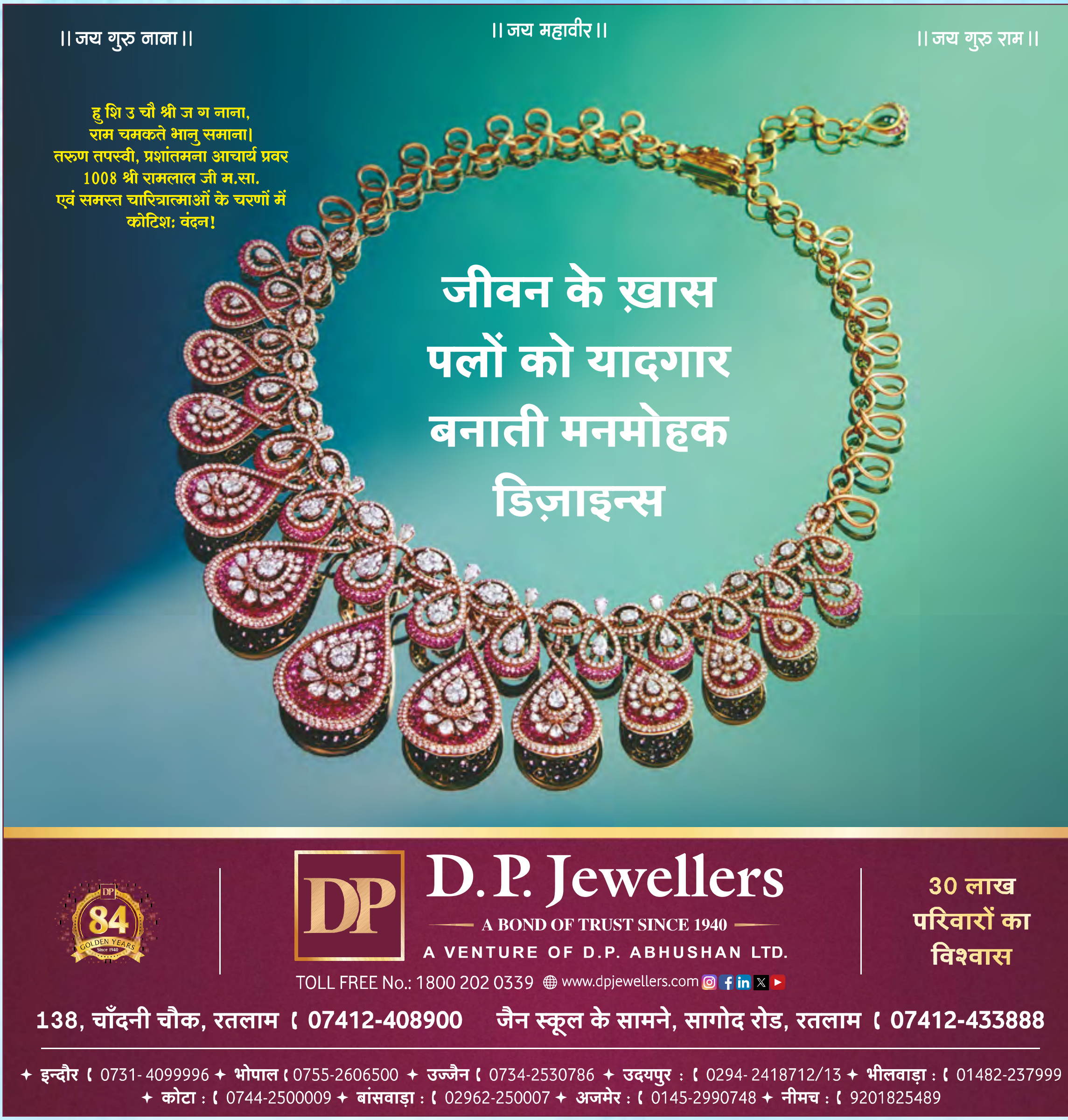

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261